It is a source of peculiar gratification that a student of our College and one to whom I had the pleasure of teaching "The Trial and Death of Socrates,' should have undertaken to reproduce these memorable selections from the story of this greatest of Greeks in Hindi He is laying the vast Hindi-speaking population under a double obligation He is introducing them to that great philosopher—in some sense the father of Ethics—and master of classic Greek Plato the Athenian, and still more he is giving them a glimpse into the life and character and faith of that world Citizen, who lived in Athens, Socrates the Master of Plato

rrar made no mistake in including him among seekers after God." In a period of questionings, examination of the bases of morals, and earnest ny of the claims of religions, Socrates seems to heard in his soul the promise "ye shall seek me find me when ye shall seek for me with all your t" He set himself to seek, and though he groped d doubted, who will say that he did not find ?

India is passing through much such a period as was the Greece of the days of Socrates Inquiry after the way of truth marks this day. May the last days of

Socrates and the hope and calm of his death-chamber, set many a reader of the story to join the Godward quest.

Allahabad:
EWING CHRISTIAN COLLEGE,
August 15th, 1915.

C A. R. JANVIER,
PRINCIPAL

ग्रीस देश के

प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो कृत

अपॉलोजी, क्रीटो और फ़ीडो

का

श्रीनारायण चतुर्वेदी

कृत

हिन्दी अनुवाद

अर्थात्

महात्मा साक्रटीज़ का जीवनचरित्र और दर्शन ।

डाक्टर सी. ए. आर जैनवियर एम. ए, डी. डी.

लिखित भूमिका समेत ।

LIFE OF SOCRATES

With the Hindi translations of Plato's Apology, Crito and Phaedo.

BY

SHRI NARAYAN CHATURVIDI.

WITH A PREFACE

BY

Dr. C. A. R. Janvier, M. A., D. D.,

PRINCIPAL, EWING CHRISTIAN COLLEGE,

ALLAHABAD.

PRINTED BY M. L. BHARGAVA, B. A.,
AT THE
NEWUL KISHORE PRESS
LUCKNOW

अनुवादक की भूमिका।

ग्रीस देश के दार्शनिक प्लेटो के इन ग्रन्थों को कालेज में पढ़ कर मेरा विचार इनका अनुवाद करने का हुआ था। ईश्वर के अनुग्रह से वह संकल्प पूरा हुआ और अब यह अनुवाद सर्वसाधारण के सन्मुख उपस्थित है। मै स्वयं जानता हूँ कि इसमें अनेक त्रुटियां हैं-और मुझ जैसे अनुवादक के अनुवाद में त्रुटियों का न होना ही आश्चर्य है। अतएव मैं यह कह देना अपना कर्तव्य समझता हूँ कि जो त्रुटियाँ है वे मेरी है, मूल पुस्तककार की नहीं है।

अनुवाद करना इतना सरल नहीं है, जितना कि लोग बहुधा समझा करते हैं। मेरी भी पहिले कुछ ऐसी ही धारणा थी। किन्तु कई बार के अनुभव के बाद अब यह धारणा हृदय से जाती रही है। एक विदेशी भाषा का अपनी भाषा के व्याकरण तथा शब्दविन्यास के अनुसार ठीक अनुवाद करना, फिर कोई भाव भी छूटने न पावे और न 'मक्षिकास्थाने मक्षिका' ही होने पावे-इन सब बातो का ध्यान रख कर जो अनुवाद किया जाय उसकी कठिनता केवल अनुवादक ही अनुभव कर सक्ता है। फिर प्रस्तुत पुस्तक के अनुवाद करने मे जो स्वयं अनूदित है, जिसका विषय रूखा और गम्भीर है, कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है, उसे अनुवादक ही जानता है। इस कारण त्रुटियों का होना, सज्जनों द्वारा क्षम्य है।

इन पुस्तकों के पढ़ने से महात्मा साक्रटीज़ के आदर्श जीवन तथा ग्रीस के दार्शनिक विचारों का पता लगता है। दोनों ही विषय जितने गम्भीर हैं, उतने ही चित्ताकर्षक और मनोरञ्जक हैं। और विशेष कर एक भारतीय विद्यार्थी के लिये तो वे बड़े ही आनन्द की वस्तु हैं, क्योंकि उसकी भूमि ही वास्तव में इन दार्शनिक विचारों की जन्मभूमि है।

भारतीय तपोवन के तपस्वियों तथा हिमालय के ध्यानावस्थित विचारमग्न महर्षियों को, ग्रीक दार्शनिकों और ओलम्पियस पर्वत के महात्माओं का गुरु कहना बड़े साहस का काम है। पश्चिम के बहुत से विद्वान् तो इस बात को सत्य बतलाते हैं और बहुत से कहते हैं कि यह केवल अटकल है।

भारत के धर्मसम्बन्धी साहित्य से पुराना अन्य कोई भी साहित्य इस समय विद्यमान नहीं है, तथा इस प्राचीन साहित्य में भी वेद तथा उपनिषद् से प्राचीन कोई भी पुस्तक नहीं है। वेद तो हम हिन्दुओं के मतानुसार अनादि हैं। किन्तु वेद तथा उपनिषदों के पण्डितों का कथन है कि उनमें भी दार्शनिक मतों का अस्तित्व किसी न किसी रूप में विद्यमान है। भारतीय पण्डितों का मत देने से लोग कदाचित् यह समझें कि उन्होंने भारतीय होने के कारण ऐसा कहा हो, इस कारण हम योरोपियन पण्डितों का मत देना उचित समझते हैं। वेवर साहब संस्कृत साहित्य के अच्छे पण्डित माने जाते हैं। उन्होंने अपने संस्कृत साहित्य के इतिहास History of Sanskrit Literature में लिखा है.—

The beginning of philosophical speculation goes back to a very remote age Even in Sumhita of Rik we have hymns of high degree of reflection

भारतीय दर्शन शास्त्र कितना विस्तृत है—इसको फ्रांस के दार्शनिक पण्डित कूज़ अपने दर्शन शास्त्र के इतिहास में लिखते हैं —

The Indian philosophy is so vast that we can literally say that it is an abridgement of the entire History of philosophy

सर विलियम जोन्स (Sir William Jones) ने तो साफ साफ कहा है,—

The six philosophical schools, whose principles are explained in the Darshan Shastras comprise all the metaphysics of the old academy estora and syeccum , nor it is impossible to read Vedant or the many five compositions in illustration of it without believing that Pythogoras and Plato derived their sublime theories from the same fountain with the sages of India. (Works of Sir William Jones Vol I)

जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान् शोपनहार (Schopenhauer) ने अपनी पुस्तक (World is will and Idea) में लिखा है कि प्लेटो ने जन्मान्तरवाद आदि दार्शनिक

तत्त्व भारतवर्ष और मिश्र देश से ग्रहण किये हैं। वे लिखते है.—

Therefore Pythogoras and Plato have seized with admiration the *Neplusutra* of the Mythical representation (transmigration of soul) received it from India and Egypt

यह दिखलाने के लिये कि भारत का ज्ञान किस प्रकार उड़ाया गया है, हम यहाँ पर एक उदाहरण मात्र देते है। अरिस्टॉटल तर्क शास्त्र का आचार्य माना जाता है। यह प्लेटो का शिष्य था। इसने जो तर्क शास्त्र बनाया है उसमे इसने लिखा है:—

We have had no works of predecessors to assist us in this attempt to construct a science of reasoning. Our own labour have done it all ... you will show some gratitude for discoveries it contains.

(Quoted by G H Lewis in his Biographical History of Philosophy)

किन्तु वात असल में ऐसी नही है। यश की इच्छा महापुरुषों की अन्तिम और कदाचित् केवल दुर्बलता होती है। अरिस्टॉटल भी इस नियम से परे नहीं था। उसका भानजा कैलिस्थनीज (Kallisthenes) सिकन्दर (Alexander) के साथ भारतवर्ष मे आया और यहाँ उसने तर्क शास्त्र संग्रह करके अपने मामा के पास भेज दिया। (Sir William Jones) सर विलियम

जोन्स ने इसे सप्रमाण सिद्ध किया है । वे लिखते हैं:—

Kallisthenes found a complete system of Logic among Indians and sent it to his uncle Aristotle (Asiatic Researches Vol IV)

केवल सर जोन्स ही की यह राय हो सो नहीं स्काच दार्शनिक (Douglous Stewart) डगलस स्टिवर्ट का भी यह कथन है:—

On the other hand it must be acknowledged that this part of Aristotle's work contains some entriusit evidences of ain borrowed from a more ancient school (Stewarts Philosophy of the Human mind).

यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है कि वह अधिक पुराना स्कूल सिवाय भारतीय स्कूल के और कोई नहीं हो सक्ता ।

यह उदाहरण यह बतलाने के लिये यथेष्ट है कि भारतीय दर्शन ही ग्रीक दर्शन का पिता है । हाँ, यह बात तो स्वीकार ही करनी पड़ेगी कि ग्रीक दार्शनिकों ने भारतीय दर्शन की नींव पर अपने दर्शन के प्रासाद की भित्ति स्थापित की है । उन्होंने उस अद्भुत नींव पर मूल्यवान् और विचारकों के विचारों में खलबली पैदा करनेवाले भवन निर्माण किये हैं ।

अस्तु, ये विचार और मीमांसाएँ हमारे विषय से बाहर हैं, किन्तु इन दो दार्शनिक देशों का इस विषय मे ऐसा घना सम्बन्ध है कि यह विषय दार्शनिकों के जीवन मे आ ही जाता है ।

कुछ भी हो, इसमें सन्देह नहीं कि भारतीय दर्शन की प्रतिध्वनि ग्रीक दर्शन मे विद्यमान है। और वह प्रतिध्वनि इतनी साफ है, इतनी स्पष्ट है कि यदि कुछ भी ध्यानपूर्वक उस पर विचार किया जाय तो मूल ध्वनि और प्रतिध्वनि का भेद शीघ्र ही मालूम हो जायगा।

और ग्रीस का दर्शन यदि हमारे दर्शन से उत्पन्न नहीं है तौ भी वह हमारे दर्शन का प्रतिबिम्ब है। यदि गंगा और सिन्धु तट के वासियों के विचार एथेंस के नागरिकों ने उनसे नही सीखे, तो वहाँ वालो ने हमारे ज्ञान की एक प्रकार से पुष्टि ही की है। यही कारण उन दार्शनिकों के जीवन और विचारो को मनन करने के लिये यथेष्ट है।

अब मुझे मूल पुस्तक तथा उसके कुछ शब्दों के विषय में कुछ कहना है। पहिले तो शब्द अपॉलोजी ही को लीजिये। कुछ लोगों ने इसका अनुवाद 'क्षमा-प्रार्थना' से किया है। किन्तु वास्तव में यदि पुस्तक ध्यान-पूर्वक पढ़ी जाय तो मालूम होगा कि साक्रटीज़ ने सारी पुस्तक में एक शब्द भी ऐसा नहीं कहा जिससे यह प्रमाणित हो कि वे एथेंसवासियों की क्षमा के इच्छुक थे। उल्टे वे दृढ़ तर्कों द्वारा अपने कथन तथा मत का समर्थन करते जाते थे। इसी कारण से मैंने इस शब्द का अनुवाद 'स्वमतसमर्थन' से किया है।

अपॉलोजी में दूसरा सन्देह यह उठता है कि जो कुछ उसमें कहा गया है, वह सचमुच साक्रटीज़ का कथन है अथवा प्लेटो की प्रौढ़ लेखनी की सृष्टि मात्र है?

इस विषय में यह तो मानना ही पड़ेगा कि अपॉलोजी में जो शब्द जिन क्रम से आये है, उन्हें साक्रटीज़ ने उसी क्रम से नहीं कहा था। किन्तु मैं इतना मान लेने मे कोई आपत्ति नहीं देखता कि उसमे जो तर्क है, उनका साक्रटीज़ ने वास्तव में उपयोग किया था। प्लेटो अभियोग के समय स्वयं उपस्थित था और निस्सन्देह उन तर्कों के आधार ही पर उन्होंने इसे बनाया है। सम्भव है कि कहीं कहीं वे भूल गये हों, अथवा उन्होंने अपनी ओर से कुछ जोड़ दिया हो, किन्तु हम इस विषय को ज़िनोफन के लेखों से मिला कर सिद्ध कर सकते हैं।

'क्रीटो' के बारे में विशेष कुछ कहना नहीं है। उसकी कोई भी बात ऐतिहासिक दृष्टि से खोजने योग्य नहीं है। इसमें सन्देह नहीं कि प्लेटो ने इसे क्रीटो से सुन कर, तथा अपनी बुद्धि का बीच बीच में उपयोग कर, लिखा है।

'फीडो' के बारे में बहुत सी बातें ऐतिहासिक दृष्टि से मनन करने योग्य हैं। इस महत्व पूर्ण संवाद के समय स्वयं प्लेटो बीमार होने के कारण अनुपस्थित था, इस कारण कुछ विद्वानों का मत है कि यह प्लेटो का बनाया नहीं है। किन्तु हम इस बात से सहमत नहीं है। प्लेटो ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्ति के लिये यह कुछ असम्भव नहीं था कि वह विषय तथा तर्कों को उन व्यक्तियों से सुन कर एक पुस्तक न लिख सके जिन्होंने स्वयं इस वादानुवाद मे भाग लिया था। इसके सिवाय यह पुस्तक प्लेटो के विख्यात ग्रन्थों में बहुत दिनों से

गिनी जाती है और सबसे बड़ा सबूत तो इसके प्लेटो के बनाये हुए होने का यह है कि उनके प्रसिद्ध शिष्य एरिस्टोटल ने उसे अपने गुरु का कह कर स्वीकार किया है ।

फिर वही प्रश्न उपस्थित होता है । 'क्या इसमें लिखे हुए तर्कों का उपयोग साक्रटीज़ ने कभी किया था ?' इस विषय की विवेचना बड़ी जटिल है । अधिक सम्भव तो यही है कि इसमें कुछ भाग साक्रटीज़ का है और कुछ प्लेटो की कल्पना और प्रतिभा का । किन्तु यह कोई महत्व की बात नहीं है कि इसमें (फीडो में) साक्रटीज़ के तर्क हैं अथवा प्लेटो के । महत्व की बात तो यह है कि इसमे गुथे हुए विचार पाश्चात्य देशों के आदर्शस्वरूप, ग्रीस देश के दार्शनिकों के थे ।

साहित्य की दृष्टि से भी फीडो उत्तम पुस्तक है । हाँ, अवश्य हीं इसमें कहीं कहीं तर्कों को बार बार दुहराया है, किन्तु इसका नाटकीय भाग बहुत ही उत्तम है । साक्रटीज़ की मृत्यु का वर्णन बहुत ही स्पष्ट एवं स्वाभाविक रीति से किया गया है । वह दृश्य पढ़ते ही आँखों के आगे नाचने लगता है ।

सो, इन अनुवादित पृष्ठों में, उन्हींके एक शिष्य और भक्त द्वारा उन महात्मा के जीवन का अन्तिम दृश्य दिखलाया गया है, जिन्होंने सारा जीवन सत्य की खोज मे बिता दिया, जिन्होंने सत्य पथ से विचलित होने की अपेक्षा मृत्यु को पसन्द किया, जिन्होंने सब कुछ जान कर भी यही जाना कि हमने कुछ भी न जान पाया, जिन्होंने जीवन के युद्ध में भी वही

शरना दिखलायी, जो राजनैतिक युद्ध में दिखलायी थी जिन्होंने जीवन के उद्देश्य के मन्दिर में सांसारिक सुख और वस्तुओं का बलिदान चढ़ा दिया था. जिन्होंने कर्त्तव्य और कर्म के पथ मे अनेक बाधाओं के रहते हुए भी, उसे कभी न छोड़ा जिन्होंने परलोक के किसी स्थिर और निश्चित पुरस्कार की आशा न करके भगवान् के इन वचनों के अनुसार शान्ति के साथ विषपान कर लिया कि—

'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।'

प्लेटो का जीवनचरित।

इन पुस्तकों का रचयिता प्लेटो, जिसको फारसी वाले अफलातून् कहते हैं, एथेंस के एक धनी और कुलीन घराने मे पैदा हुआ था। ऐसा कहा जाता है कि उसका जन्म असाधारण रीति से हुआ था। इसके पिता का नाम ऐरिस्टन और माता का नाम पेरक्षिनी था। उसका असली नाम एरिस्टोकल्स था, किन्तु अपने सुन्दर शरीर के कारण वह प्लेटो कहलाया। लड़कपन में उसने मल्लविद्या की शिक्षा आर्गस के अरिस्टन से पायी थी। वह कई दंगलो में भी सम्मिलित हुआ था। कहा जाता है कि वह आजन्म ब्रह्मचारी रहा और ८१ वर्ष की अवस्था में परलोक सिधारा।

युवावस्था में प्लेटो को कविता करने का बड़ा शौक था। यही नहीं, वह कवियों की कविताओं को बड़े चाव से पढ़ा करता था। वह कविता का इतना प्रेमी था कि मरने के बाद उसके बिस्तर पर एरिस्टाफनीज और साफ्रन के काव्य पाये गये थे। वह चित्रकार भी था और उसका गला बड़ा सुरीला था।

किन्तु एक महती शक्ति ने उसका कविताप्रेम, चित्रकला का शौक सभी कुछ ठंडा कर दिया। वह शक्ति साक्रटीज़ थे। कहा जाता है कि प्लेटो के मिलने से एक दिन पहिले साक्रटीज़ ने सपना देखा कि एक बिना पर का राजहंस उसके पास आया है और उनके पास आते ही उसके पर जम आये हैं और वह वीणाविनिन्दित स्वर से गाता हुआ ऊपर उड़ गया है। दूसरे दिन

उनकी प्लेटो से भेंट हुई। तब उन्होंने कहा यह वही राजहंस है। उस समय प्लेटो की अवस्था २० वर्ष की थी। कहा जाता है कि साक्रटीज़ से भेंट करने के बाद उसने अपनी बनायी कविता को यह कहते हुए अग्नि के समर्पण कर दिया:-

'आओ अग्नि देवता, प्लेटो चहै आपकी आज सहाय।'

उस दिन से वह साक्रटीज़ का श्रोता होगया। जब साक्रटीज़ की मृत्यु होगयी तब वह कई दार्शनिकों के पास जा कर रहा। फिर वह साक्रटीज़ के कुछ शिष्यों को ले कर मेगारा चला गया। वहाँ से वह थियोडोरस नामक गणितज्ञ के पास गया। वहाँ से वह इटली और इटली से मिश्र देश को गया।

मिश्र से लौट कर वह फिर एथेंस नगर मे आया। वहाँ वह एकेडीमिया में रहने लगा। वहाँ वह तर्क शास्त्र की शिक्षा दिया करता था। इसके कुछ दिनों बाद वह इटली और सिसली गया, और डायोनिसस की राजसभा में पहुँचा। किन्तु राजा किसी बात पर उससे रुष्ट हो गया और इस कारण उसने उसे एक स्पार्टन के हाथ बेच दिया। इस दासत्व से उसे एनीसीरिस नामक एक व्यक्ति ने छुड़ाया।

तब से प्लेटो ने अपना जीवन दर्शन और तर्क की शिक्षा देने तथा पुस्तकें लिखने में बिताया। उसके शिष्य अरिस्टोटल ने उसकी पुस्तकों के बारे में लिखा है कि उनकी लेखशैली गद्य और पद्य के बीच की होती है। उनके बनाये कितने ही ग्रन्थ विख्यात हैं। प्रायः सभी वार्तालाप के स्वरूप में हैं। इन वार्ता-

लापों के नायक साक्रटीज हैं और इनका विषय भी दर्शन, तर्क या राजनीति है। इनमें कुछ तो नाटकाकार हैं और कुछ वर्णनस्वरूप में हैं। कुछ प्रसिद्ध पुस्तकों के नाम ये हैं:—'राजनीतिज्ञ', 'क्रेटिलस', 'पार्मीनिडस', 'सॉफिस्ट', 'स्वमतसमर्थन', 'क्रीटो', 'फीडो', 'फड्रिस', 'प्रजातन्त्र', 'न्यायधाराएँ', 'एल्सिबायाडीज', 'यूथिफ्रन', 'मीनो', 'प्रोटागोरस','यूथीडमिस','हिपिअस','गार्जियस' इत्यादि।

यद्यपि उसने इतनी पुस्तकें लिखीं हैं, तथापि उसने अपने बारे में कहीं कुछ नहीं लिखा। स्वभाव ही से वह एकान्तप्रिय था। लोग इस कारण उसको बनाया करते थे। वह स्वयं बड़ा सदाचारी था, जैसा कि हम कह आये हैं--वह आजन्म ब्रह्मचारी रहा। मद्यप और जुआरिओं से उसे बड़ी घृणा थी।

शराबिओं के लिये वह कहा करता था कि उनको शराब पी कर अपना मुँह आइने में देखना चाहिये, तभी उन्हें अपनी दुर्दशा मालूम होगी।

अन्त में ८१ वर्ष की अवस्था में उसका निज शाला ही में देहान्त हुआ और वहीं वह दफनाया गया। उसी स्थान (एकाडिमिआ Academia) के कारण उसके अनुयायी 'एकेडमेक' कहलाये। उसने अपनी वसीयत इस प्रकार बनायी थी:—"मैं अपनी जायदाद को इस प्रकार बाँटता हूँ। हेफीसटिया वाली ज़मीन का टुकड़ा एडीमेन्टस को मिले। एरॉइएडी वाला जमीन का टुकड़ा, जिसे मैंने कैलीमेकस से ख़रीदा था, वह भी उसे मिले। इसी प्रकार ३ मिनी एक चाँदी की

बोतल (तौल में १६५ ड्राम) एक नाव के आकार का बर्तन (तौल में ४५ ड्राम) एक सोने की अँगूठी, एक कान की सोने की बाली, (दोनों की तौल ४ ड्राम और ३ ओबिली) भी उसे मिलें । यूक्लिडीस—संगतराश पर मेरी ३ मिनी चाहिये । मैं आर्टीमिसको दासत्व से मुक्त करता हूँ । मैं अपने नौकरों के स्वरूप में टाइकन, बिस्टस अपालोनियडिस और डायोनिसियस को छोड़ जाता हूँ । इसके साथ ही मैं उन बर्तनों को भी छोड़ जाता हूँ, जिनकी फेहरिस्त आगे देता हूँ और जिसकी नकल डिमिट्रियस के पास है । मैं किसी का कर्ज़दार नहीं हूँ ।"

उसके शव के साथ बहुत से मनुष्य गये थे और उसके ऊपर बहुत सी कवितायें बनायी गयीं । उनमें से कुछ ये हैं,—

१

फीबस ने एस्क्लीपियस प्लेटो किये मनुष्य हेत निर्माण ।
जिससे एक शरीर सुधारै, दूजा और बचावे प्राण ॥

२

मनुष्य से संयम में परे रहा
रहा सदाचार सदा निबाहता ।
है ख्याति जिसने बल-बुद्धि से की
प्लेटो यहां है सब द्वेष से परे ।

साक्रटीज़ के कुछ मित्र और साथी।

क्रीटोब्युलस—एक धनिकपुत्र। वह नगर के कई उच्च पदों पर रह चुका था। वह बड़ा सुन्दर था। किन्तु बडा शाहखर्च और तमाशे देखने का शौकीन था। वह एक स्त्री के प्रेम में फँस गया था। उसका दिल इस ओर से हटाने के लिये उसके पिता क्रीटो ने उसे साक्रटीज़ का साथी बना दिया था।

क्रीटो—क्रीटोब्युलस का पिता। वह साक्रटीज ही की अवस्था का था। वह साक्रटीज का बड़ा सुहृद् और भक्त था।

फीडो—एक ग्रीक तत्त्वविचारक। उसने इलिमक नामक एक दर्शन का स्कूल स्थापित किया था। वह एक अच्छे कुटुम्ब में पैदा हुआ था किन्तु अभाग्यवश लड़कपन ही में वह दास बना कर एथेंस में बेच दिया गया था। वहाँ साक्रटीज़ से उसकी मुलाकात हुई। साक्रटीज ने उसकी योग्यता समझ ली और अपने एक मित्र द्वारा रुपये दिला कर उसको दासत्व से मुक्त करा दिया। तब से वह तत्त्वविचार में लगा और अन्त तक साक्रटीज़ के साथ रहा। वह साक्रटीज का बड़ा भक्त था। उसने एक स्कूल भी खोला था जहाँ वह साक्रटीज के विचारों के अनुसार शिक्षा दिया करता था।

अपालोडोरस—वह बड़ा योग्य व्यक्ति न था, किन्तु वह बड़े कोमल हृदय का था और साक्रटीज़ का तो वह बड़ा ही भक्त था।

सिमिअस—एक थीबन था। वह साक्रटीज़ की मृत्यु

के समय उपस्थित था। उस समय वह युवा था। वह बड़े ही सरल स्वभाव का था। साधारण धनी था और हृदय से सत्य की खोज करना चाहता था।

सीबिस—वह भी थीबन था। 'फीडो' से उसका बहुत कुछ हाल मालूम हो जाता है। वह बुद्धिमान् और सरल प्रकृति का था। साक्रटीज़ की मृत्यु के समय वह भी उपस्थित था।

सोफिस्ट—विक्रम से पहिले पाँचवीं सदी में एथेन्स के युवकों को शिक्षा दिया करते थे। वे एक प्रकार के रोजगारी शिक्षक थे। वे उन्हें इस तरह की शिक्षा दिया करते थे जिससे वे वहाँ के सार्वजनिक जीवन में भाग लेने के योग्य होजायँ। वे उन्हें वक्तृता देने की प्रणाली और बहस की रीति मुख्य कर सिखलाते थे। वे केवल 'विधि' (तरीक़ा) सिखलाने वाले थे। वचनों की सारगर्भिता पर जोर न दे कर वे वचनों की कथनप्रणाली पर जोर देते थे। इनमें और साक्रटीज में यह भेद था कि साक्रटीज सुधारक थे और वे प्रणाली के शिक्षक थे।

यहाँ पर यह कहा जा सक्ता है कि उनकी स्त्री का नाम ज़ेनथिपी था। ऐसी कर्कशा स्त्री कदाचित् ही इतिहास में और कहीं मिले। इस कारण साक्रटीज को कुछ भी गृहसुख नहीं था। किन्तु वे सदा अपने धैर्य ही का परिचय दिया करते थे। कहा जाता है कि वे उस पर अपने दर्शन का अभ्यास किया करते थे।

इस तरह उनके जीवन के पहिले चालीस वर्षों का कुछ ठीक वृत्तान्त विदित नहीं होता। इसके बाद ४३२ और ४२९ बी. सी. के बीच में उन्होंने पोटीडिया के घिराव के समय साधारण सैनिक की तरह एथेंस की सेना में सेवा की। पोटीडिया एथेंस की एक प्रजा रियासत थी। उन दिनों वहाँ वालों ने एथेंस के विरुद्ध बलवा कर दिया था। उन दिनों वे अपनी सहनशीलता और साहस के कारण विख्यात हो गये थे। वहाँ उन्होंने एक वीर के, जिसका नाम एल्सीबायाडीज़ था, प्राण बचाये और वीरता का पुरस्कार स्वयं न ले कर उसीको दिलवाया। ४३१ बी सी मे पेलोपनीशियन युद्ध आरम्भ हुआ और ४२४ बी सी मे डीलियम के युद्ध मे एथेंस वालो ने थीबन लोगो के हाथ बड़ी बुरी हार खायी। साक्रटीज़ उन इने गिने व्यक्तियों में से थे, जो घबड़ा कर नहीं भागे। कहा जाता है कि साक्रटीज़ और लैकिस धीरे धीरे पीछे हटे और उनके साहस और वीरता के कारण शत्रु उनके पास तक नहीं फटके। कहा जाता है कि यदि प्रत्येक एथीनियन इसी तरह से काम करता तो वे कभी न हारते। कहा जाता है कि साक्रटीज़ तीसरी बार एम्फीपोलिस के युद्ध में भी उपस्थित थे।

उनके एक मित्र का नाम कैरेफन था। उसने एक दिन जा कर देवमन्दिर में यह पूछा 'कि हममें (एथेंस वालों में) सबसे अधिक ज्ञानी कौन है।' आकाशवाणी ने उत्तर दिया 'कि तुममें साक्रटीज़ सबसे अधिक ज्ञानी है।' साक्रटीज़ को यह सुन कर बड़ा अचरज हुआ क्योंकि इतने दिनों तर्क और विचार करके उन्होंने केवल यही सार निकाला था कि मैं वास्तव में कुछ नहीं जानता। वे देववाणी में विश्वास करते थे किन्तु वे इस वचन का तात्पर्य नहीं समझ सके। एक ओर तो देवता का वचन: दूसरी ओर स्वयं खोज किया हुआ परिणाम। अन्त में वे कथन की सत्यता जाँचने के लिये तत्कालीन विद्वानों के पास जाने लगे और उनसे प्रश्न कर कर उनकी बुद्धिमत्ता और ज्ञान की थाह लेने लगे। परिणाम यह हुआ कि उन्हें यह मालूम हुआ कि वे प्रसिद्ध विद्वान् भी स्वयं उन्हींकी तरह अज्ञान में पड़े हैं। अन्त में उन्होंने यह निश्चय किया कि 'हम और ये दोनों ही कुछ नहीं जानते। किन्तु ये लोग अपनेको बुद्धिमान् समझते हैं, किन्तु मैं अपनी अज्ञानता समझता हूँ। यही मुझमें और इनमें भेद है। अतः मैं इस विषय में इनसे अधिक ज्ञानी हूँ।' यह निश्चय कर लेने पर वे आकाशवाणी की सत्यता सिद्ध करने के लिये लोगों के पास जाने लगे और उन्हें यह समझाने की चेष्टा करने लगे कि वे लोग वास्तव में अज्ञान में पड़े हैं। उन्होंने यही अपना कर्तव्य निर्द्धारित किया।

किन्तु साक्रटीज़ के इस कठिन कर्त्तव्यपालन से उनसे बहुत से लोग नाराज़ भी हो गये थे। किन्तु इनमें

अधिकांश वे ही थे जो ग्रीस के ज्ञानी समझे जाते थे। क्योंकि साक्रटीज़ ने पहिले पहिल इन्हीं पर हाथ साफ़ किया था। ये लोग अपनेको बुद्धिमान् समझते थे। किन्तु साक्रटीज़ के तर्कों के आगे इनका टिकना असम्भव था। नगर के नौजवान धनिकपुत्र जिनको कोई काम नहीं था, साक्रटीज़ के साथ रहा करते और उनकी तर्कविधि देखा करते। उन्हे इन प्रश्नोत्तरों में बड़ा मनोरंजन मालूम पड़ता। वे भी दूसरे लोगों पर अपने हाथ माँजने लगे। मनुष्य स्वभाव अपना दोष स्वीकार नहीं करता. किन्तु दोष बतलाने वाले से उलटा अप्रसन्न हो जाता है। एथेंस में भी मनुष्य समाज की यही प्रकृति थी। ये लोग यह तो कह नहीं सके थे कि साक्रटीज़ ने हमें मूर्ख साबित कर दिया है। किन्तु वे कहने लगे कि 'साक्रटीज़ अपने तर्कबल से अनुचित को भी उचित सिद्ध कर देता है।'

इसके बाद ही एरिस्टाफ़नीज़ नाटककारका 'क्लाउड्स' नामका नाटक निकला। उसमें साक्रटीज़ बड़ी बुरी तरह से अङ्कित किये गये थे। उसमे दिखलाया गया था कि साक्रटीज़ कह रहे हैं कि मै स्वर्ग और पाताल लोक की बातो को जानता हूँ तथा शैतान की तरह बुरी और झूठी बात को भी सत्य एवम् अच्छी साबित कर सक्ता हूँ: तथा मैं हवा मॅ चल सक्ता हूँ इत्यादि। उस समय एथेंस में सॉफिस्ट लोगों का बड़ा ज़ोर था और उन लोगों से यहाँ के समझदार लोग बहुत नाराज़ थे। किन्तु साक्रटीज़ स्वयं सॉफिस्टों से नाराज़ थे और उनका जीवन उन्हींका खण्डन करते करते व्यतीत हुआ

था। किन्तु एरिस्टाफनीज ने इस बात को जानने की कोई चेष्टा नहीं की कि साक्रटीज़ सॉफिस्ट है या नहीं। फिर उस समय के लोग प्राचीन आख्यायिकाओं और आचारनीति के सिद्धान्तों की सत्यता पर सन्देह करने लगे थे। एरिस्टाफ़नीज इनसे भी घृणा करता था। अतः उसने सॉफिस्टों और इन सत्य की स्वयं खोज करने वालों के विरुद्ध यह नाटक रचा। यद्यपि साक्रटीज़ इन दोनों में से कोई भी न थे, तथापि वे अपने रूप और परिचय के कारण उस भीषण और कल्पित नाटक के नायक बनाये गये। इसका परिणाम यह हुआ कि जो लोग स्वयं साक्रटीज़ से परिचित न थे (और वे लोग संख्या में बहुत थे) तथा जो उनके उपदेशों और सिद्धान्तों को न जानते थे वे उनके विरुद्ध हो गये।

इसके बाद सोलह वर्ष तक साक्रटीज़ के जीवन का कुछ पता नहीं चलता। फिर एक अपूर्व घटना घटित होती है और साक्रटीज़ का नाम आता है। ४०६ बी. सी. में एथेंस वालों ने लेसीडीमोनिअनों को आर्ग्यून्यूसी के सामुद्रिक युद्ध में हराया। युद्ध के बाद एथोनियन अमीराल मरे हुओं की लाशें (समुद्र से) न निकाल सके। जब एथेंस वालों ने यह सुना तब वे बड़े क्रुद्ध हुए। उन्होंने अमीरालों को बुलवा भेजा। एक सभा करके उन पर लाशों को न बचाने का अभियोग लगाया गया। उन्होंने अपने बचाव में यह कहा कि उन्होंने कुछ निचले अफसरों को (जिनमें उन पर अभियोग लाने वालों में से स्वयं एक व्यक्ति था) उन्हें बचाने की आज्ञा दी थी, किन्तु एक तूफान आ

जाने के कारण वे ऐसा न कर सके। उस दिन सभा स्थगित कर दी गयी। सभा ने यह निश्चय किया कि आठों अमीरालों को दण्ड देने या छोड़ने के लिये एक साथ एथेंस वाले 'वोट' दें। किन्तु यह प्रस्ताव सर्वथा असंगत एवम् अन्यायपूर्ण था क्योंकि एथेंस का कानून प्रत्येक व्यक्ति का अभियोग अलग अलग चलाने का था।

उस समय साक्रटीज़ 'सिनेट' नाम की सभा के सदस्य थे। सिनेट में ५०० सदस्य थे। ये चिट्ठी डाल कर चुने जाते थे और प्रत्येक जाति के ५० प्रतिनिधि लिये जाते थे। ये लोग एक साल तक पद ग्रहण करते थे। प्रत्येक जाति के प्रतिनिधि ३५ दिन तक 'प्रिटेनी' रहते थे अर्थात् सिनेट के काम काज के उत्तरदाता रहते थे. इनमें से दस एक सप्ताह के लिये सभापति हुआ करते थे। ये लोग सिनेट के सन्मुख उपस्थित करने के पहिले प्रत्येक प्रस्ताव की न्यायसंगतता जाँच लिया करते थे। इन सभापतियों में से एक व्यक्ति केवल एक ही दिन के लिये सिनेट का मंत्री चुना जाया करता था। उसीका काम प्रस्ताव पेश करने, या किसी बात पर वोट लेने का था।

जिस दिन वोट लेने की बारी आयी उस दिन साक्रटीज़ मन्त्री थे। यह प्रस्ताव जैसा कि हम कह आये हैं, न्यायानुमोदित नहीं था। किन्तु जन साधारण उसके पक्ष में थे। कुछ सभापतियों ने उसका विरोध भी किया किन्तु लोगों की धमकियों और चिल्लाहटों के सामने उन्होंने सत्य को तिलाञ्जलि दे दी। किन्तु साक्रटीज़ कब डिगने वाले थे? उन्होंने न तो चिल्लाहट ही पर ध्यान दिया और न क़ैद या मृत्यु की धमकियों ही की

पर्वाह की । उन्होंने उस प्रस्ताव पर 'वोटस्' नहीं लीं । किन्तु उनका अधिकार केवल एक दिन के लिये था । दूसरे दिन एक कमज़ोर दिल के मंत्री ने उसे 'पास' करा दिया ।

इस घटना के दो वर्ष बाद उन्होंने फिर अपने साहस और सत्यप्रियता का परिचय दिया । ४०४ बी. सी. मे लेसीडीमोनियनों की सेना ने एथेंस नगर ले लिया । उन्होंने नगर की चहार-दीवारी नष्ट कर दी । एथेंस का प्रजातन्त्र शासन नष्ट कर दिया गया और लाइसैंडर नामक स्पार्टन सेनानी की सहायता से साक्रटीज के एक पुराने साथी क्रिटिअस ने तीस आदमिया की एक मनमानी शासन करने वाली सभा बना डाली । यह राज्य एक वर्ष भी न चला । किन्तु इतने ही दिनों में अत्याचारों के कारण लोगों की नाकों दम आ गयी । वे अपने पाप में और लोगों को लिप्त करने के लिये, उनसे अन्यायपूर्ण काम करवाने लगे । जो उनकी आज्ञा का उल्लङ्घन करता, वह मार डाला जाता । उन लोगों ने साक्रटीज तथा और तीन आदमियों को बुलवा भेजा तथा उनको सैलेमिस नामक स्थान से एक व्यक्ति को लाने की आज्ञा दी, जिसे वे मार डालना चाहते थे । वे तीनों तो भय के कारण उसे लेने के लिये चले गये, किन्तु साक्रटीज़ ने इस अन्यायपूर्ण काम करने से साफ इन्कार कर दिया और वे उनकी आज्ञा का उल्लङ्घन करके घर चले आये । यदि वह राज्य कुछ दिनों और रहता तो अवश्य ही साक्रटीज़ को प्राणदण्ड दिया जाता ।

साक्रटीज़ के बारे में भिन्न भिन्न बातें।

साक्रटीज़ बड़े ही कुरूप थे। चपटी नाक, बड़े नथुने, नाक ऊपर को उठी हुई, अत्यन्त बड़ी आँखें, कुरूप मुँह, तथा बेसुधरी दाढ़ी--इन सभी ने मिल कर उनके रूप को विचित्र और भद्दा बना रखा था। इस पर उनकी फटी और गन्दी पोशाक रही सही कमी को पूरा कर दिया करती थी। वे नंगे पाँव घूमा करते थे। बहुत कम स्नान करने के कारण बदन गंदा रहा करता था। वे बड़े ही ग़रीब थे। घर मिला कर उनकी सम्पत्ति तीन मिनी से अधिक नहीं थी। बहुधा वे अपने मित्रों ही के यहाँ भोजन किया करते थे। यद्यपि वे स्वयं कभी शराब नहीं पीते थे, तथापि हठ करने पर वे बहुत अधिक शराब पी जाया करते थे, किन्तु उन पर उसका असर नहीं होता था। क्रीटोबोलस बहुधा उन्हें नाटक दिखलाने के लिये ले जाया करता था। उनका स्वभाव बड़ा मौजी और आनन्दी था। जब वे पचास वर्ष के थे, तब वे नाच कर चित्त प्रसन्न किया करते थे। उस वृद्धावस्था में उन्हें वीन बजाने की सूझी, अतः एक मित्र से मँगनी माँग कर वे उसका बजाना सीखने लगे।

वे एथेंस छोड़ कर बहुत कम बाहर जाया करते थे। केवल युद्ध को छोड़ कर, वे एक बार इस्मियन खेलों को देखने के लिये, एथेंस के बाहर गये थे। जंगलों, बाग़ों में तो वे कभी जाते ही न थे। पूछने पर कह दिया करते थे कि मैं ज्ञान का प्रेमी हूँ, नगर में

मैं मनुष्यों से उसे सीख सक्ता हूँ, किन्तु खेत और पेड़ मुझे कुछ नही सिखला सक्के । इस कारण सवेरा होते ही वे अखाड़ों में पहुँच जाते। जब बाज़ार का समय होता तब वे बाज़ार मे जा उपस्थित होते, इस प्रकार जहाँ मनुष्यो का जमघट होता वहीं वे जा पहुँचते थे।

वे प्राडिकस नामक सॉफिस्ट को अपना गुरु मानते थे। उन्होंने स्वयं कोई दार्शनिक विद्यालय स्थापित नही किया किन्तु बहुत से प्रतिभाशाली और समझ-दार लोग इस महापुरुष के पास सहर्ष रहा करते थे। उन लोगो को ये अपना मित्र समझते थे और वे स्नेह के कारण, इनका साथ किया करते थे ।

मरने के समय इनकी अवस्था सत्तर वर्ष की थी और उनकी तीन सन्तानें थीं। इनकी मृत्यु के समय एक की अवस्था तो १५। १६ वर्ष की थी और दो बालक ही थे।

साक्रटीज़ का अभियोग।

साक्रटीज़ का अभियोग किस विचारालय मे चलाया गया, इस विषय पर बहुत ही मतभेद है। कुछ लोगों का कथन है कि वह एरिओपेगस की अदालत में चलाया गया था, किन्तु कुछ लोग कहते हैं कि वह साधारण न्यायालय में चलाया गया था, जिसमें जूरी बैठती थी।

कहीं भी हो, यह अभियोग बड़ी धूमधाम से चला। अभिशाप लगाने वाले तीन व्यक्ति थे। पहिला व्यक्ति मेलिटस नाम का एक साधारण कवि था, इसको लाइकन नामक एक वक्ता की सहायता मिली थी, किन्तु इन दोनों से अधिक प्रभावशाली व्यक्ति एनटिस था जो एक राजनीतिज्ञ था। यह व्यक्ति पहिले चमड़ा बेचने का काम किया करता था, किन्तु अन्त मे यह राजनीति के मैदान में आया। जिस समय क्रिटिअस और लाइसैण्डर ने प्रजातन्त्र शासन नष्ट कर दिया था, उस समय इसने प्रजातन्त्र को फिर से स्थापित करने के लिये बड़ा उद्योग किया था। तब से एथेंस वाले इसे बहुत मानने लगे थे।

जब इन लोगों ने अभिशाप लगाया तब एक दिन निर्दिष्ट किया गया। उसमें मेलिटस ने कहा—'मैं—मेलिटस, पिथिस मुहल्ले के मेलिटस का पुत्र, शपथ-पूर्वक अलोपिसी मुहल्ले के सैफ्रोनिस्कस के पुत्र साक्रटीज़ पर यह अभिशाप लगाता हूँ कि वह नगर के

देवताओं में विश्वास न करके, तथा नये देवताओं में विश्वास करके गुरुतर अपराध कर रहा है। वह नगर के नौजवानों को बिगाड़ करके भी बड़ा अपराध कर रहा है अतएव उसे मृत्युदण्ड दिया जाय।' इसके बाद वह एक वक्तृता देता है और उसमें कहता है कि साक्रुटीज़ को मृत्युदण्ड देने से नगर निर्विघ्न हो जायगा।

(इसका जो उत्तर साक्रुटीज़ ने दिया, वह स्वमत-समर्थन में देखिये।)

साक्रटीज़ का स्वमतसमर्थन

अर्थात्

अपॉलोजी।

साक्रटीज़—एथेंस के नागरिक सज्जनो! मैं नहीं कह सक्ता कि मुझ पर दोष आरोपण करने वालों ने तुम्हारे हृदयों पर क्या प्रभाव डाला है। यद्यपि उनका भाषण ऐसा सच्चा मालूम पड़ता था कि स्वयं मैं अपनी स्थिति को भूल गया, तथापि उन्होंने एक शब्द भी सच्चा नहीं कहा है। किन्तु उनकी सब झूठी बातों की अपेक्षा मुझे उनकी एक बात पर सब से अधिक आश्चर्य है और वह यह है कि वे कहते हैं कि मैं बड़ा चतुर वक्ता हूँ और तुमको मुझसे सावधान रहना चाहिये, नहीं तो कहीं मैं तुमको उल्टे रास्ते पर न ले जाऊँ। मेरी समझ में उनको ऐसी धृष्टता करने के लिये लज्जित होना चाहिये, क्योंकि जैसे ही मैं बोलना आरम्भ करूँगा वैसे ही उनका झूठ खुल जायगा और यह प्रमाणित हो जायगा कि यदि चतुर वक्ता के अर्थ सच बोलने वाले के नहीं हैं, तो मैं किसी भी प्रकार चतुर वक्ता नहीं हूँ। यदि चतुर वक्ता से उनका तात्पर्य सत्यवक्ता से हो तो मैं उनसे सहमत हूँ और इसे मानता हूँ कि मैं उन लोगों से कहीं बड़ा वक्ता हूँ। मैं इसे फिर कहता हूँ कि मुझ पर अभियोग लगाने वालों ने एक भी बात सत्य नहीं कही, किन्तु तुम मुझसे सब कच्चा हाल

सुनोगे। वास्तव में मेरे व्याख्यान में न तो सुन्दर शब्दों ही की भरमार होगी और न लम्बे चौड़े शब्दविन्यास ही मेरे व्याख्यान में तुमको मिलेंगे। जो कुछ मुझे तुमसे कहना है मैं सच ही कहूँगा। उसके लिये मैंने कोई विशेष तैयारी नहीं की है और जो कुछ मेरे मुँह में पहिले आवेगा उसे ही तुम्हारे सामने रख दूँगा क्योंकि मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरा पक्ष न्यायानुमोदित है और इस कारण तुममें से किसी को भी सिवाय सत्य के मुझसे और कुछ सुनने की आशा न करनी चाहिये। इस उमर में यदि मैं तुम्हारे सामने एक नौ जवान की तरह झूँठ बोलूं, तो मेरे लिये बड़े कलङ्क की बात होगी। किन्तु मैं तुमसे एक प्रार्थना करता हूँ और वह यह है कि यदि मैं अपनी स्वाभाविक रीति से यहाँ भी बोलूं, जैसा कि तुममें से बहुतों को ज्ञात है कि मैं बाजार में या दूकानों पर बोलता हूँ, तो मुझे न तो रोको और न चुप करो। सच बात तो यह है कि मेरी उमर सत्तर वर्ष से भी अधिक की हो गयी, किन्तु मैं आज ही पहिले पहिल न्यायालय के सामने आया हूँ, इस कारण तुम्हारे यहाँ के बोल चाल से मैं बिलकुल अनभिज्ञ हूँ। यदि मैं कोई विदेशी होता तो तुम मुझे अपने देश की भाषा में अथवा अपने ढंग से बोलने देते, इससे मैं तुम से वही माँगता हूँ, जो मैं अपना अधिकार समझता हूँ। मेरे बोलने के ढंग की कुछ भी पर्वाह मत करो, केवल यही बात ध्यान में रक्खो कि जो कुछ मैं कहता हूँ वह सत्य है या नहीं। यही एक गुण न्याय करने वाले के उपयुक्त है जैसे कि सच बोलना वकील के लिये आवश्यक है। एथेन्सवासियो! पहिले तो मुझे अपने पुराने अभियोग

लगाने वालों से वचना है और फिर वर्त्तमान दोषारोपण करने वालों का उत्तर देना है। क्योंकि वहुत दिनों से लोग मेरे विरुद्ध तुम्हारे कान भर रहे हैं, किन्तु उनकी बातों में सत्य का लेश भी नहीं है, और उनसे मैं एनीटस तथा उसके मित्रों की अपेक्षा अधिक डरता हूं। क्योंकि वे वहुत ही ज़बर्दस्त हैं, क्योंकि जब तुममें से वहुत लोग लड़के ही थे तभी से उन्होंने तुम्हारे कानों में ज़हर भरना आरम्भ कर दिया था। उन्होंने तुम्हारे हृदयों मे यह वात जमा रक्खी है, कि यहाँ एक मनुष्य साक्रटीज़ नामका है जो वड़ा बुद्धिमान् है और जो स्वर्ग और नरक सम्बन्धी वातों की परीक्षा करने में लगा रहता है तथा वह इतना बुद्धिमान् है कि बुरी वात को भी वह तर्क के द्वारा अच्छी सिद्ध कर देता है। एथेंसवासियो! मैं इन्हींको डरता हूँ क्योंकि इन लोगों के श्रोता समझते हैं कि ऐसी वातों में लगे रहने वाले देवताओं में कभी विश्वास नहीं करते। और फिर उनकी संख्या अधिक है, वे वहुत दिनों से मुझ पर आक्रमण कर रहे हैं, और उन्होंने तुम्हारे कान मेरे विरुद्ध तभी भर दिये थे, जब तुम केवल वच्चे थे, और तुम प्रत्येक वात को चट से मान लेते थे और उस समय उनको कोई जवाब देने वाला नहीं था और जो वात सब से बढ़कर अचरज की है, वह यह है कि साधारणतः मैं उनके नाम भी नहीं जानता। हाँ, केवल नाटककारों को तो मैं अवश्य जानता हूँ, किन्तु मैं उन वाकी आदमियों से विलकुल ही अपरिचित हूँ—जिन्होंने, ईर्षा-द्वेष और कभी कभी इन अभियोगों की सत्यता पर विश्वास कर, तुम्हारे हृदयों को मेरे विरुद्ध उसका रखा है। उनको मैं

न्यायालय मे जिरह के लिये नहीं बुला सका, इस कारण एक प्रकार से मुझे 'छाया' से लड़ना है, और ऐसे प्रश्न पूछना है–जिनका उत्तर देने वाला कोई नहीं है। इस कारण मै तुम्हारी सेवा मे निवेदन करता हूँ कि मुझ पर दो तरह के लोगों ने दोषारोपण किया है–पहिले तो मेलिटस और उसके मित्रों ने और फिर उन पुराने लोगो ने, जिनके बारे में मै अभी कुछ कह चुका हूँ और तुम्हारी आज्ञा से मैं पहिले अपने पुराने शत्रुओं द्वारा लगाये दोषो का खण्डन करूँगा क्योंकि तुमने पहिले उनके लगाये दोषो को सुना था और वे दूसरों की अपेक्षा अधिक हठी हैं।

अच्छा, तो एथंसवासियो! अब उस थोड़े समय मे, जो मुझे मिला है, मै अपना बचाव करता हूँ, और इस थोड़े समय मे उस अभिशाप के हटाने का उद्योग करता हूँ जिसे तुम वर्षों से सुनते आये हो। मै आशा करता हूँ कि यदि मेरे बचने से तुम्हारी और मेरी भलाई होगी तो मैं अवश्य सफल होऊँगा। किन्तु मुझे अपने काम की कठिनता खूब मालूम है। उसका परिणाम कुछ भी क्यो न हो, ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है, किन्तु मुझे न्याय और नियम का पालन करना होगा। अतएव अब मैं अपना पक्ष समर्थन करता हूँ।

अब फिर से आरम्भ करके देखना चाहिये कि लोगों के हृदयों में मेरे विरुद्ध कौन सी ऐसी बात थी जिसका सहारा ले कर मेलिटस ने मेरे विरुद्ध 'अभियोगपत्र' बनाया। वह कौन सी ऐसी बात थी जो मेरे शत्रु मेरे विरुद्ध फैला रहे हैं। मान लीजिये कि वे मुझ पर नियमानुसार दोषारोपण कर रहे हैं, और मान लीजिये कि वे अभियोग-

पत्र पढ़ रहे हैं—तो वह अभियोग कुछ कुछ इस ढँग पर होगाः—

"साक्रेटीज़ एक दुराचारी मनुष्य है, जो स्वर्ग (आकाश) और नरक (पृथ्वी के नीचे) की बातों की खोज में लगा रहता है, और जो तर्क करने मे इतना चतुर है कि एक मिथ्या बात को भी अपनी युक्तियों से सच प्रमाणित कर देता है और दूसरों को भी यही सिखलाता है।" वे यही कहते है और एरिस्टोफनीज़ के नाटक मे तुमने स्वयं यह देखा है कि साक्रटीज़ नामका एक आदमी एक डलिया (टोकरी) मे झूल रहा है और कहता है कि वह हवा मे चलता है, तथा ऐसी ही कितनी वाहियात निरर्थक बातें कहता है जिनके बारे में मैं कुछ भी नहीं जानता। यदि किसी व्यक्ति को ऐसी कोई विद्या मालूम है तो मैं उसकी हँसी उड़ा कर उसे तुच्छ नही ठहराना चाहता। मुझे विश्वास है कि मेलिटस इस कारण से मेरे विरुद्ध अभियोग नहीं चला सका किन्तु एथेसवासियो ! सच बात तो यह है कि मुझे ऐसी बातों से कुछ मतलब नहीं है और तुममें से प्राय सभी इस बात के गवाह है। मैं तुम सब लोगों से प्रार्थना करता हूँ कि यदि तुममें से किसी ने कभी भी मुझे ऐसी बातें करते सुना हो, तो अपने मित्रों को इस बात की ख़बर कर दो। इससे यह मालूम हो जायगा कि इस प्रकार की और भी सब मेरे विरुद्ध फैलायी हुई चर्चाएँ, इसी चर्चा की तरह झूठ है।

किन्तु सच बात तो यह है कि इनमें से एक भी बात सच नहीं है, और यदि तुमने यह सुना हो कि मै नवयुवकों से रुपया वसूल करके उन्हें पढाता हूँ, तो वह भी सच

नहीं है, तथापि मैं इस बात को अच्छा समझता हूँ कि लोगों को पढ़ाया जाय, जैसे लियोनिटाई का गार्जियस, सियस का प्राडिक्स और एलिस का हिपियस तथा अन्य लोग करते हैं। मित्रो! उनमे से प्रत्येक किसी भी नगर मे जा सक्ता है और वहाँ के नवयुवकों को नगरवासियों की सङ्गत से हटा कर- जिनके साथ रहने में उनका कुछ भी खर्च नहीं पड़ता- अपने साथ रखता है और वे उसे इस बात के लिये प्रसन्नता से रुपये देते हैं। मुझे यह मालूम है कि इस समय एथेंस मे 'पैरस' का एक विद्वान् रहता है। एक बार मुझसे और हिप्पोनिकस के लड़के केलिअस से अचानक मुलाकात हो गयी। इस केलिअस ने सॉफिस्ट लोगों को इतना धन दिया है कि जितना सारे एथेंसवासियों ने मिल कर भी न दिया होगा। इसके दो लड़के हैं, इस कारण मैंने उससे कहा कि यदि तुम्हारे लड़के घोड़े या गाय के बछड़े होते तो तुम उनके लिये एक ऐसा आदमी नियत करते जो उनको, उनके गुणो मे निपुण कर देता। वह या तो कोई सईस होता और या कोई किसान होता, किन्तु तुम्हें मालूम है कि तुम्हारे लड़के मनुष्य हैं, जो मनुष्यत्व और नागरिकों के स्वत्व और कर्तव्यों को समझते हैं, इस लिये तुमने उनके लिये कौन सा शिक्षक नियत किया है? तुमने अपने लड़कों की भलाई को ध्यान में रख कर किसी न किसीको इसके लिये चुना ही होगा। क्या तुम्हें ऐसा कोई आदमी मिला है? उसने कहा, हाँ, मुझे एक ऐसा व्यक्ति मिल गया है। मैंने पूछा वह कौन है-उसका क्या नाम है? वह कहाँ का रहने वाला है, तथा उसकी फीस क्या है? केलिअस ने कहा 'उसका

नाम ईवनस है, वह पैरस का रहनेवाला है और उसकी फ़ीस पाँच 'मिनी' है तब मैंने विचारा कि यदि ईवनस इस विद्या मे निपुण है तो सचमुच वह भाग्यवान् है। यदि मुझे यह विद्या आती तो मुझे उसके लिये अभिमान होता। किन्तु एथेंसवासियो! सच बात यह है कि मुझमें वह विद्या है ही नहीं।

कदाचित् तुममे से कोई यह पूछ बैठे कि 'साक्रटीज़! तुम्हारा तात्पर्य क्या है, तुम किस बात के पीछे घूम रहे हो, तुम्हारे विरुद्ध ये बातें क्यों फैल रही हैं, अवश्य ही तुम किसी न किसी असाधारण काम में लगे हो—अन्यथा तुम्हारे विरुद्ध ये बातें बाहर न फैलतीं। इस लिये हमसे अपना हाल कहो, जिससे हम तुम्हे अनजाने ही दण्ड न देदें।' मेरी समझ में यह एक उचित प्रश्न है, और मैं इस बात को दिखाने का उद्योग करूँगा कि मेरी बदनामी का कारण क्या है। तो फिर सुनो! तुम में से कुछ समझेंगे कि मैं मजाक कर रहा हूँ, किन्तु विश्वास रखो कि मैं सत्य ही बात बतलाऊँगा। एथेंसवासियो! मैंने यह बदनामी का टोकरा केवल एक प्रकार के ज्ञान के कारण पाया है। किन्तु किस प्रकार के ज्ञान के कारण? मेरी समझ में मेरा ज्ञान ऐसा है जो मनुष्य की शक्ति के लिये असम्भव नही है। उस प्रकार के ज्ञान में सम्भव है कि मैं बुद्धिमान् होऊँ। किन्तु, जिस व्यक्ति के बारे में मैं अभी कह रहा था, वह अवश्य ही ऐसे ज्ञान से सम्पन्न होगा, जो मनुष्य के साधारण ज्ञान से किसी न किसी प्रकार अधिक है। मै यह नहीं बतला सका कि वह साधारण ज्ञान से किस प्रकार अधिक है—क्योंकि मैं स्वयं उसके बारे में कुछ भी नहीं जानता, और यदि कोई यह कहै कि मै उसे जानता

हूँ तो वह झूँठा है और मेरा अपमान करना चाहता है। (श्रोताओं में कोलाहल) एथेंसवासियो ! मुझे मत टोंको, चाहे मैं तुम्हारी समझ में बढ़ कर बोल क्यों न बोलता होऊँ। मैंने जो कुछ कहा है वह मेरा, निज का, कथन नहीं है। मैं तुम्हें बतलाये देता हूँ कि उसका कहने वाला कौन है, और वह तुम्हारा विश्वासपात्र है। मैं डेल्फी के देवता को अपने ज्ञान और अपने ज्ञान की प्रकृति के विषय में गवाही देने के लिये बुलाऊंगा। तुम्हे कैरेफन की याद है ? वह युवावस्था ही से मेरा मित्र था, और नागरिकों के साथ ही वह देश से निकाला गया और उन्हींके साथ ही वह देश को लौटा। और तुम्हें कैरेफन के चरित्र की भी याद है ? जिस काम को वह हाथ में लेता था, उसे वह कितने जोश के साथ करता था। एक बार वह 'डेल्फी' गया और उसने यह प्रश्न पूछा,-मित्रो ! मैं तुमसे फिर चुप हो जाने की प्रार्थना करता हूँ। उसने यह पूछा कि क्या मुझसे (साक्रटीज़ से) भी कोई मनुष्य अधिक ज्ञानी है ? और पुजारिन ने उत्तर दिया कि कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं है। कैरेफन मर गया है किन्तु उसका भाई, जो यहाँ उपस्थित है, मेरे कथन का समर्थन करेगा।

मैंने यह बात किसी कारणवश कही है। मैं तुम्हारे सामने अपनी सार्वजनिक अप्रियता का कारण वर्णन करता हूँ। जब मैंने इस डेल्फिक ऑरेकल का वर्णन सुना तब मैं सोचने लगा कि ईश्वर का मतलब इस गूढ़ बात के कहने से क्या है। मुझे यह अच्छी तरह मालूम है कि मुझ में तनिक भी ज्ञान नहीं है, तो फिर इसके कहने का क्या अर्थ है कि मैं सबसे अधिक ज्ञानी हूँ। यह तो हो नहीं सकता

कि ऑरेकल झूठ कहता हो, क्योंकि ऑरेकल देववाणी है और देवता कदापि झूठ नहीं बोलते। और बहुत दिनों तक तो मैं उसका कुछ भी अर्थ न समझ सका, अन्त में, अनिच्छा से मैंने उसका अर्थ समझने की यों चेष्टा की। मैं एक आदमी के पास गया, जो ज्ञानी के नाम से प्रसिद्ध था, और मैंने यह सोचा कि मुझे इससे अधिक ज्ञानी और कहीं नहीं मिलैगा, और वहीं मैं यह प्रमाणित कर दूंगा कि ऑरेकल ने भूल से यह कह दिया है कि मैं बुद्धिमान् हूं, और ऑरेकल से कहूंगा कि 'तुमने कहा था कि मैं सब से अधिक बुद्धिमान् हूं—किन्तु यह मुझसे भी अधिक ज्ञानी है'। बस, तो फिर मैंने उसकी परीक्षा ली; वह एक राजनीतिज्ञ था, उसके नाम बतलाने की ज़रूरत नहीं है। किन्तु एथेंसवासियों! उसका परिणाम यह हुआ कि जब मैंने उससे बात चीत की तब मुझे यह पता लगा कि यद्यपि बहुतों ने, और स्वयं उसने अपने को ज्ञानी समझ रक्खा था किन्तु वह बुद्धिमान् नहीं था। और तब मैंने उसे यह समझाने की चेष्टा की कि यद्यपि वह अपने को बुद्धिमान् समझता है, तथापि वह यथार्थ में बुद्धिमान् नहीं है। ऐसा करने से वह और पास खड़े कितने ही लोग मेरे शत्रु हो गये। सो जब मैं वहाँ से चला आया तब मैंने अपने आप से कहा, कि "मैं इस व्यक्ति से अधिक ज्ञानी हूं। कदाचित् हम दोनों में से कोई भी सत्य और अच्छी बात नहीं जानता किन्तु वह अज्ञानी हो कर भी अपने को ज्ञानी समझता है और मैं अपने में ज्ञान न पा, अपने को अज्ञानी मानता हूं। कुछ भी हो, इस बात में मैं उससे कुछ अधिक ज्ञानी हूं। मैं उस बात के जानने का दावा नहीं करता, जो

वास्तव में मुझे नहीं मालूम।" फिर मैं एक ऐसे आदमी के पास गया, जो इस पहिले आदमी से भी अधिक ज्ञानी होने के लिये विख्यात था, किन्तु मेरी परीक्षा का परिणाम वही हुआ। वहाँ भी मैंने, उसे तथा और भी कितनों को अपना शत्रु बना लिया।

फिर मैं एक एक कर के बहुत से आदमियों के पास जाने लगा। और यह देख कर कि नित्य प्रति मेरे शत्रु संख्या में बढ़ते जाते हैं, मुझे बड़ी चिन्ता और बड़ा दुःख हुआ। तब भी मैंने सोचा कि मुझे ईश्वर की आज्ञा सब से पहिले पालन करनी चाहिये। इस लिये मुझे प्रत्येक प्रसिद्ध ज्ञानी पुरुष के पास ऑरेकल के वचनों का अर्थ समझने के लिये जाना पड़ा। एथेंसवासियों! मैंने ईश्वर की आज्ञा के अनुसार जो खोज की, उसका फल यह हुआ। अर्थात् जो मनुष्य ज्ञानवान् होने के लिये सब से अधिक प्रसिद्ध थे, उन्हें मैंने सब से अधिक अज्ञानी पाया; और जनसाधारण, जिन्हें लोग तुच्छ समझते थे उन्हें मैंने ज्ञान पाने के योग्य पाया। अब मुझे तुमसे अपनी उन सब श्रमपूर्ण अनुभवों की कथाओं को कहना पड़ेगा, जिन्हें मैंने हरक्यूलीज़ के परिश्रमों की तरह, ऑरेकल के वचनों को सिद्ध करने के लिये उठाये। जब मैं राजनीतिज्ञों से निपट चुका तब मैं कवियों, नाटककारों तथा अन्य ऐसे लोगों के पास गया, और मैंने सोचा कि अवश्य ही मैं इनसे कहीं अधिक अज्ञानी होऊँगा। इस लिये मैंने उनकी वे कविताएँ ले लीं, जिनके बनाने में, मेरी समझ में, उनको बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ा होगा, और उनसे पूछा कि इस (अमुक) कविता से उनका क्या तात्पर्य है। मैंने सोचा था कि मैं

उनसे कुछ सीखूँगा, किन्तु सच बात कहते मुझे लज्जा आती है, तथापि मित्रो ! मुझे कहनी ही पड़ेगी। कोई भी पास खड़ा आदमी उन कविताओं के बारे में, स्वयं कवि की अपेक्षा अधिक कह सक्ता था। इससे शीघ्र ही मुझे यह पता लग गया कि कवि लोग किसी ज्ञान के कारण कविता नहीं बनाते, किन्तु उनमे एक प्रकार की स्वाभाविक शक्ति या प्रत्यादेश होता है जिससे वे जादूगरों और पैगम्बरों की तरह बहुत सी अच्छी अच्छी बातें कह डालते हैं किन्तु स्वयं उनका अर्थ कुछ भी नहीं समझते। कवि लोग भी मुझे ऐसी ही दशा में मिले। और उसी समय ही मुझे यह भी मालूम हुआ कि वे अपनी कविता के कारण अपने को और भी बातों में ज्ञानी लगाते हैं--यद्यपि यथार्थ मे उन्हें उस विषय का कुछ भी ज्ञान नहीं है, फिर मैं वहाँ से चला आया, और यह सोचने लगा कि जिस प्रकार मैं राज-नीतिज्ञों से अधिक ज्ञानी हूँ, उस प्रकार कवियों से भी हूँ।

अन्त में, मैं शिल्पकारों के पास गया। उनके पास जाने के पहिले मैंने यह सोच लिया था कि वे तो अवश्य ही मुझसे अधिक ज्ञानी होंगे, क्योंकि मुझे भली भाँति मालूम था कि मुझमें ज़रा भी ज्ञान नहीं है, और मुझे यह भी मालूम था कि उन्हें बहुत सी ऐसी बाते मालूम हैं जो मैं नहीं जानता। उन्हें वे बातें मालूम थी जो मैं नहीं जानता और इस विषय में, वे अवश्य ही मुझसे अधिक ज्ञानी थे। किन्तु, एथेसवासियो! चतुर शिल्पकार भी उसी भूल पर थे जो मैंने कवियों में पायी थी। प्रत्येक चतुर शिल्प-कार यही सोचता था कि चूँकि मै अपनी विद्या में चतुर हूँ, इस कारण मैं संसार की और भी उपयोगी बातो का

। ज्ञानी हूँ, और उनकी इस भूल ने उनकी सच्ची शिल्प-सम्बन्धी चतुरता को भी धूल में मिला दिया था। इस कारण मैंने ऑरेकल की तरफ़ से अपने आपसे यह प्रश्न पूछा कि जैसा मैं हूँ, वैसा ही मुझे रहना चाहिये, अथवा उन लोगों की तरह मैं ज्ञान और अज्ञान दोनों को लिये फिरूँ। मैंने अन्त में स्वयं अपने को, और ऑरेकल को यह उत्तर दिया कि जैसा मैं हूँ—विना उन लोगों के ज्ञान और अज्ञान के वैसा ही मुझे बना रहना चाहिये।

एथेंसवासियो! मैंने मनुष्यों की इस परीक्षा के कारण बड़े कट्टर शत्रु पैदा कर लिये हैं। इन लोगों ने मेरे विरुद्ध कितनी ही झूठी बातें फैला रक्खी हैं और लोग मुझे 'ज्ञानी' कहते हैं। क्योंकि जब दर्शक यह देखते हैं कि मैंने किसी व्यक्ति को किसी बात में निरुत्तर कर दिया है तब वे समझते हैं कि उस विषय में, जिसमें मैंने उसे उसकी अज्ञानता के कारण निरुत्तर कर दिया है, मैं बुद्धिमान् हूँ, किन्तु मित्रो! मेरा विश्वास है कि वास्तव में केवल ईश्वर ही 'ज्ञानी' है और इस ऑरेकल देववाणी से उसका तात्पर्य यह दिखलाने का था कि वास्तव में मनुष्य का ज्ञान, बिलकुल तुच्छ अर्थात् कुछ भी नहीं है। मेरी समझ में उसका यह मतलब कदापि न था कि मैं 'ज्ञानी' हूँ। उस ने केवल मेरा आदर्श ले कर तुमको यह बतलाया है कि तुममें वही सब से अधिक ज्ञानी है जो साक्रटीज़ की तरह यह समझता है कि उसका ज्ञान वास्तव में कुछ भी नहीं है। और इस लिये अब भी मैं उन लोगों के पास जाता हूँ जो सर्वसाधारण में ज्ञानी होने के लिये प्रसिद्ध हैं और उनको मैं जाँचता हूँ, चाहे वह व्यक्ति नागरिक हो

या कोई परदेशी। मुझे ईश्वर की ऐसी ही आज्ञा है। और जब मुझे मालूम हो जाता है कि वह ज्ञानी नहीं है, तभी मैं उससे ईश्वर के नाम पर कह देता हूँ कि वह ज्ञानी नहीं है। मैं इस काम में इतना मग्न रहता हूँ कि न तो सार्वजनिक कामों ही में मुझे कोई विशेष भाग लेने का समय मिलता है और न मैं अपने निज के कामों पर ही ध्यान देता हूँ। ईश्वर की इस सेवा के कारण मैं बड़ा ग़रीब हो गया हूँ।

और इसके अलावा, धनी लोगों के लड़के, जिनके पास आवश्यकता से अधिक समय है, बड़े आनन्द से मेरे साथ रहते हैं और जब मैं लोगों को जाँचता हूँ तब वे बड़ी प्रसन्नता से हमारे प्रश्नोत्तरों को सुनते हैं। कभी कभी वे आपस ही में मेरी नक़ल उतारते हैं और फिर मेरे हथकण्डे वे दूसरों पर अज़माते हैं। उनको ऐसे आदमी बहुत मिल जाते हैं जो अपने को बड़ा ज्ञानी लगाते हैं पर वास्तव में जो कुछ भी नहीं हैं। और तब वे आदमी, जिनको मेरे साथी धनिकपुत्र जाँचते हैं, अपनी मूर्खता के लिये पछताते तो नहीं किन्तु उल्टे मुझ पर नाराज़ हो जाते हैं और कहते हैं कि मैं नौजवानों को बिगाड़ता हूँ। और जब कोई उनसे यह पूछता है कि 'क्यों साक़्रटीज़ ने क्या किया है? वह क्या सिखलाता है?' तब उनसे कोई उत्तर तो बन नहीं आता, वे मुझ पर वे ही पुराने अभिशाप लगाने लगते हैं जो सब तत्त्वज्ञानियों पर लगाये जाते हैं। वे कहते हैं कि मैं आकाश और पाताल की बातों की खोज में रहता हूँ और मैं लोगों को सिखलाता हूँ कि वे देवताओं पर विश्वास

न करै, तथा मैं तर्क करने में इतना चतुर हूँ कि एक असत्य बात को भी अपने तर्क बल से सिद्ध कर देता हूँ। किन्तु असल बात तो यह है कि वे यथार्थ कारण को बतलाना नहीं चाहते और वह कारण यह है कि उनको मूर्ख सिद्ध कर दिया गया है। और वे वर्षों से तुम्हारे कान भरते आये है, क्योंकि वे हठी हैं और उनकी संख्या अधिक है, तथा वे बात करने में बड़े चतुर हैं। इन्हीं कारणों से मेलिटस, एनिटस और लाइकन ने मुझ पर अभियोग चलाया है। मेलिटस कवियो की ओर से मुझसे अप्रसन्न है, एनिटस ने कारीगरों और राजनीतिज्ञों की ओर से मुझ पर अभिशाप लगाया है और लाइकन ने व्याख्यानदाताओं की ओर से मुझसे घृणा प्रकट की है। और इस कारण, जैसा कि मैंने तुमसे पहिले कहा था, मेरे लिये यह अत्यन्त कठिन है कि मैं इस थोड़े से समय में तुम्हारे हृदयों से चिरकाल के जमे हुए भयंकर द्वेष को हटा सकूँ। एथेंसवासियो! मैंने जो कुछ कहा है, वह बिलकुल सच है, मैं तुमसे छोटी या बड़ी, कोई भी बात छिपाना नहीं चाहता। पर तब भी मेरे इस खरेपन ने मेरे विरुद्ध इतने शत्रु पैदा कर दिये हैं। किन्तु यही एक ऐसा सबूत है जिससे मेरे वचन की सत्यता प्रमाणित होती है। यही बात सिद्ध करती है कि मेरे विरुद्ध लोगों के हृदयों में विद्वेष का कारण वही है जो मैंने कहा है और चाहे तुम मेरी बात पर अभी ध्यान दो या फिर कभी पीछे ध्यान दो, किन्तु तुम मेरी बातों को सदा सत्य पाओगे।

जो कुछ मैंने कहा है वह मुझ पर पहिले लगाये गये

साक्रटीज़—तो क्या एसेम्बली (राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा) के सदस्य उनको बिगाड़ते हैं? या वे भी उनको सुधारते हैं?

मेलिटस—वे भी उन्हें सुधारते हैं।

साक्रटीज़—तब तो मुझे छोड़ कर सब ही एथेंसवासी नौजवानों को सुधारते हैं और मैं ही अकेला उन्हें बिगाड़ता हूँ। क्या यही तुम्हारे कहने का मतलब है?

मेलिटस—बेशक, यही तो मेरे कहने का असल मतलब है।

साक्रटीज़—तुमने मुझे बड़ा अभाग्यशाली मनुष्य समझ रक्खा है। अब यह तो बतलाओ कि क्या यही बात घोड़ों के लिये भी ठीक है? क्या एक आदमी उनको बिगाड़ता और बाक़ी सब उन्हें सुधारते हैं? क्या यह बात सच नहीं है कि केवल थोड़े ही मनुष्य—वही जो शह सवार हैं--घोड़े के बच्चों को सुधार सक्ते हैं और बाकी सब यदि उन पर चढ़ें या उनसे और कोई काम लें तो वे बिगड़ जायँगे? क्या यह बात घोड़े और दूसरे जानवरों के बारे में ठीक नहीं है? चाहे तुम और एनिटस हाँ कहो या ना, यह बात बिलकुल सच है। और नौजवानों का यदि सभी सुधारते और केवल एक ही आदमी बिगाड़ता तो वे कदापि नहीं बिगड़ सक्ते। सच बात तो यह है कि मेलिटस! तुमने इस बात पर अपने जीवन में एक पल भर भी विचार नहीं किया। तुम्हीं इस बात को साबित कर रहे हो कि जिस बात के लिये तुम मुझ पर अभियोग चला रहे हो, उसमें तुम्हारा ज़रा भी अनुराग नहीं है।

अब कृपा करके यह बतलाओ कि अच्छे पड़ोसियों (नागरिकों) के बीच में रहना अच्छा है अथवा बुरों के

बीच में ? महाशयजी, जवाब दो। मेरा प्रश्न कुछ कठिन नहीं है। क्या अच्छे नागरिक अपने पड़ोसियों को लाभ, और बुरे नागरिक अपने पड़ोसियों को हानि नहीं पहुँचाते ?

मेलिटस—हाँ।

सुकरात—क्या कोई व्यक्ति ऐसा भी है जो यह पसन्द करता हो कि उसके पड़ोसी उसे लाभ के बदले हानि पहुँचावें ? आप चुप क्यों हैं ? कानून आपको उत्तर देने के लिये बाधित करता है। क्या कोई व्यक्ति अपना नुकसान करवाना चाहता है ?

मेलिटस—कदापि नहीं।

सुकरात—अच्छा, तब तुम हम पर किस बात का अभियोग चला रहे हो ? नौजवानों को जान बूझ कर बिगाड़ने का या अनजाने बिगाड़ने का ?

मेलिटस—जान बूझ कर बिगाड़ने का।

सुकरात—क्यों मेलिटस तुम्हारा मतलब क्या है ? तुम उमर में मुझसे इतने छोटे हो, पर बुद्धिवान इतने हो कि तुम यह समझते हो कि खराब सहवासी सदा हानि पहुँचाते हैं। फिर क्या तुम्हारी समझ में मैं इतना मूर्ख हूँ कि इतना भी न समझूँ कि जान बूझ कर अपने उन सहवासियों को बिगाड़ने से जिनसे मुझे दिन रात काम पड़ता है, कदाचित् मुझे ही कभी हानि न उठानी पड़े ? तुम कभी किसीको इस बात का विश्वास नहीं दिला सके कि मैं जान बूझ कर ऐसा काम करता हूँ। या तो मैं नौजवानों को बिलकुल ही नहीं बिगाड़ता, और यदि बिगाड़ता भी हूँ तो अनजाने से। इससे यह साबित

होता है कि हर हालत में तुम झूठे हो। और यदि मैं उन्हें अनजाने विगाड़ता हूँ, तो तुम्हें कानून से कोई भी अधिकार नहीं कि एक भूल के लिये तुम मुझपर मुकद्दमा चलाओ। तुमको ऐसी हालत में चाहिये कि तुम मुझे एकान्त में ले जा कर मुझे समझाओ और मुझे मेरी भूल दिखलाओ। यदि तुम मुझे मेरी भूल दिखला दोगे तो मैं तत्काल उसे छोड़ दूँगा। पर तुम न तो मुझे मेरी भूल दिखलाओगे और न मुझे समझाओहीगे, पर उल्टे तुम मुझे अदालत में घसीट लाओगे, जहाँ कानून आदमियों को समझाता नहीं किन्तु सजा देता है"।

एथेंसवासियो ! सच बात तो यह है कि जैसा मैं तुम-से कह चुका हूँ मेलिटस ने इस विषय पर रत्ती भर भी ध्यान नहीं दिया। जो हो, मेलिटस अब तुम मुझे यह वत-लाओ कि मैं नौजवानों को क्योंकर विगाड़ता हूँ ? तुम्हारे हिसाब से मैं उनको यह सिखला कर विगाड़ता हूँ कि वे नगर के देवताओं मे विश्वास न करें किन्तु और ही नये गन्धर्वों या देवों (Divinities)में विश्वास करें। तुम यही न कहते हो कि इसी उपदेश से मैं उन्हें विगाड़ता हूँ ?

मेलिटस—वेशक, इसी उपदेश से तुम उन्हे विगाड़ते हो।

साक्रटीज—तव इन देवताओं को समक्ष करके, ज़रा अपने मतलब को ठीक तरह से समझाओ। तुम्हारा मत-लब मेरी समझ मे नहीं आता। क्या तुम्हारा यह मतलब है कि मैं लोगों से नगर के देवताओं में विश्वास करने को नहीं कहता किन्तु नये ही देवताओं में विश्वास करने को कहता हूँ ? क्या तुम मुझ पर अजीव देवताओं पर विश्वास करने की शिक्षा देने का अभियोग लगाते हो ?

यदि तुम्हारा यही मतलब है तो मैं किसी न किसी देवता में विश्वास करता ही हूँ और इस कारण मुझपर 'नास्तिक' होने का अभियोग नहीं लगाया जा सक्ता। या तुम्हारा मतलब यह है कि मैं किसी भी देवता में विश्वास नहीं करता और दूसरों को भी देवताओं में विश्वास न करने की शिक्षा देता हूँ?

मेलिटस—मेरा मतलब यह है कि तुम किसी भी देवता में, किसी प्रकार का विश्वास नहीं करते।

साक्रटीज़—मेलिटस, तुम बड़े अजीब आदमी हो। तुम ऐसा क्यों कहते हो? क्या तुम्हारी समझ में मैं दूसरों की तरह सूर्य या चन्द्रमा को देवता नहीं मानता?

मेलिटस—जजो! मैं शपथ पूर्वक कहता हूँ कि यह उनको देवता नहीं मानता। यह कहता है कि सूर्य पत्थल है और चन्द्रमा पृथ्वी है।

साक्रटीज़—प्रियवर मेलिटस, तुम मुझ पर अभियोग चला रहे हो या प्राचीन तत्वज्ञानी अनेक्सागोरस पर? तुम जजों को निरा मूर्ख और अपढ़ समझते होगे, यदि तुम्हारा यह विचार हो कि जजों को यह नहीं मालूम कि क्लेज़ोमिनी के अनेक्सागोरस की पुस्तकों में इन शिक्षाओं की कितनी भरमार है। और इस कारण जब नौजवान एक ड्राक्मा देकर नाटकगृह में जा सक्ते हैं और वहाँ इन शिक्षाओं को देख सुन सक्ते हैं, तब यदि साक्रटीज़ इन विलक्षण शिक्षाओं को अपनाना चाहे तो वे उसे (मुझे) हँसी में उड़ा दें। पर कृपा कर यह तो बताओ कि क्या तुम सचमुच यह समझते हो कि मैं देवताओं में विश्वास नहीं करता?

मेलिटस—बेशक, मैं यही समझता हूँ। तुम पक्के नास्तिक हो।

साक्रटीज—कोई व्यक्ति इस बात को नहीं मानता और मेलिटस तुम स्वयं जानते हो कि तुम झूठ बोल रहे हो। एथेंसवासियो! मेरी समझ में यह मेलिटस बड़ा गुस्ताख़ और बदचलन आदमी है, और यह केवल युवावस्था की गुस्ताखी और बदचलनी के जोश में आकर मुझ पर अभियोग चला रहा है। यह मुझसे एक ऐसी पहेली पूछना चाहता है जिसका कुछ उत्तर नहीं है। वह यह कहता है कि क्या यह बुद्धिमान् साक्रटीज इस बात को पकड़ सका है कि मैं उसके साथ दिल्लगी कर रहा हूँ और ऐसी बातें कह रहा हूँ कि जो स्वयं अपने आप को काट रही हैं? और यह कि मैं उसकी और दर्शकों की आँखों में धूल झोंक सका हूँ। ऐसा मालूम पड़ता है कि वह अभियोगपत्रही में अपनी बात अपने आप काट रहा है। मानों वह कहता है कि 'साक्रटीज एक दुष्ट पुरुष है जो देवताओं में विश्वास भी नहीं करता और विश्वास करता भी है।' किन्तु यह केवल तुच्छ बात है।

मेरे मित्रो, अब हमें देखना चाहिये कि मैं ऐसा क्यों कहता हूँ। मेलिटस! तुम मुझे उत्तर देते हो या नहीं? (दर्शक शोर गुल मचाते हैं) और तुम एथेंसवासियो, मेरी प्रार्थना को मत भूलो और कृपा कर चुप हो जाओ।

मेलिटस! क्या ऐसा कोई व्यक्ति है जो आदमियों की स्थिति में तो विश्वास नहीं करता किन्तु आदमी से सम्बन्ध रखने वाली बातों में विश्वास करता है? (जजों से) मित्रो! इसको उत्तर देने के लिये बाध्य कीजिये और इस शोर गुल को बन्द कीजिये। मेलिटस!

क्या कोई ऐसा भी आदमी है जिसे शहसवारी (घोड़े की सवारी) का विश्वास हो किन्तु जिसे घोड़े की स्थिति का विश्वास न हो ? अथवा जो बाँसुरी के सुर के होने का विश्वास करे और बाँसुरी के होने का विश्वास न करे ? महाशयजी ! यदि आप चुप हैं तो मैं ही आपको और जजों को बतलाये देता हूँ कि ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है। किन्तु तुमको मेरे अगले प्रश्न का उत्तर देना ही होगा। क्या कोई ऐसा भी व्यक्ति है कि जो दैवी बातों पर तो विश्वास करता हो किन्तु स्वयं देवताओं की स्थिति पर विश्वास न करता हो ?

मेलिटस—नहीं, ऐसा कोई भी व्यक्ति न होगा।

साक्रटीज—मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि जजों ने आखिर तुम से उत्तर निकलवा ही लिया। अच्छा, तो तुम कहते हो कि मैं दैवी जीवों (गन्धर्वों, निम्न कोटि के देवताओं) में विश्वास करता हूँ, चाहे वे नये हों या पुराने, तथा दूसरों को भी इन्हींमें विश्वास करने की शिक्षा देता हूँ। कुछ भी हो, तुम्हारे कथनानुसार, मैं दैवी जीवों में विश्वास करता हूँ। इस बात की तुमने अभियोगपत्र पढ़ते समय शपथ खायी है। किन्तु यदि मैं दैवी जीवों में विश्वास करता हूँ—तो निस्सन्देह मैं देवताओं में अवश्य ही विश्वास करता हूँ। क्यों, क्या यथार्थ में यह सत्य नहीं है ? यह सत्य है। तुम कुछ भी उत्तर नहीं देते, इस कारण मैं माने लेता हूँ कि तुम इस बात को सत्य समझते हो। किन्तु क्या लोग इस बात को नहीं मानते कि गन्धर्व या निम्नकोटि के देवता, स्वर्गीय देवताओं की सन्तान हैं ? तुम इसे मानते हो या नहीं ?

मेलिटस—मैं मानता हूँ।

साक्रटीज—तब तुम इसे मानते हो कि मै दैवी जीवों में विश्वास करता हूँ। तब यदि ये दैवी जीव निम्न या उच्च कोटि के देवता है तो मेरा यह कथन सत्य है कि तुम मज़ाक़ कर रहे हो और मुझसे एक पहेली पूँछ रहे हो। तुम कहते हो कि मैं (साक्रटीज़) देवताओं की स्थिति मे विश्वास नहीं करता, और चूँकि मै दैवी जीवों की स्थिति में विश्वास करता हूँ—इससे मै देवताओं में विश्वास भी करता हूँ। किन्तु यदि ये दैवी जीव गन्धर्व हों, जो कि देवताओं द्वारा अप्सराओं या और स्त्रियों से पैदा है तो मै तुमसे पूछता हूँ कि ऐसा कौन व्यक्ति है जो देवताओं के पुत्रों की स्थिति में तो विश्वास करता हो किन्तु देवताओं में विश्वास न करता हो? यह कहना ऐसा ही है जैसा यह कहाजाय कि गधे और घोड़े तो नही होते किन्तु उनकी सन्तान खच्चर होते हैं। तुमने यह अभिशाप या तो मेरी चतुराई जॉचने के लिये मुझ पर लगाया है और या इस लिये कि तुम्हें मेरे विरुद्ध कोई सच्चा अभियोग नहीं मिला। किन्तु तुम्हारे कहने से, कोई भी आदमी, जिसे ईश्वर ने थोड़ी भी बुद्धि दी है, यह न मानेगा कि दैवी जीवों पर विश्वास करने वाला, देवताओ और वीरों में विश्वास नहीं करता।

एथेसवासियों! सचमुच मुझे यह सिद्ध करने की कोई आवश्यकता नहीं है कि मैंने कोई भी ऐसा अपराध नहीं किया कि जिसके लिये मेलिटस मुझ पर अभियोग चला रहा है। जो कुछ मैंने कहा है वह मेरे कथन को सत्य सिद्ध करने के लिये काफ़ी है। किन्तु मै इसे फिर कहता हूँ कि यह

अवश्य ही सत्य है कि मैं सर्वसाधारण द्वारा बहुत अप्रिय होगया हूँ और मेरे शत्रु भी बहुत होगये हैं; और यदि मुझे दण्ड मिला, तो इसी कारण मिलेगा। न तो एनिटस और न मेलिटस ही मुझे दण्ड दिला सके हैं, किन्तु सर्वसाधारण का मेरे विरुद्ध द्वेष और सन्देह ही मुझे दण्ड दिलायेगा। सर्वसाधारण के द्वेष और सन्देह ने कितनों ही का सर्वनाश किया है और ये दोनों कितनों ही का सर्वनाश आगे करेंगे। इस बात का भय न करना चाहिये कि मैं ही उनकी अन्तिम शिकार होऊँगा।

कदाचित् कोई यह कहे कि 'साक्रटीज़! क्या तुम्हें उन बातों के लिये लज्जा नहीं आती जिनके कारण बहुत करके तुम्हारे प्राण जाने का भय है?' मैं उसे यह न्यायानुमोदित उत्तर दूँगा कि 'मेरे मित्र! यदि तुम यह सोचते हो कि किसी भी पुरुष को, जिसमें तनिक भी आत्मसन्मान है, किसी काम को करते समय, सिवाय इसके कि 'मैं ठीक और उचित कर रहा हूँ या नहीं?' और कुछ जीवन-सम्बन्धी बात सोचनी चाहिये, तो तुम बहुत भूल में हो। तुम्हारे मतानुसार वे गन्धर्व जो ट्राय में मारे गये, किसी भी काम के आदमी न थे, और उनमें भी थीटिस के पुत्र का मूल्य तुम्हारी निगाहों में कुछ ऊँचा न होगा, जिसने उस समय मृत्यु की कुछ भी पर्वाह न की, जिस समय उसने देखा कि ऐसा न करने से अपकीर्ति और अनादर होगा। जब हेक्टर के प्राण लेने के लिये उसका कलेजा जला जा रहा था, तब उसकी मा ने, जो एक देवी थी—उसे समझाते हुए कदाचित् यह कहा था:—'मेरे पुत्र! यदि तू अपने मित्र पेट्रोक्लस का बदला लेने के लिये हैक्टर

का बध करता है, तो तू स्वयं मारा जायगा, क्योंकि 'मृत्यु हैक्टर की मृत्यु के बाद तेरी (उसे मारने वाले की) राह ताक रही है।' उसने (थीटिस के वीर पुत्र ने) अपनी मा की यह बात सुनी, किन्तु उसने भय और मृत्यु को बिलकुल ही तुच्छ समझा। उसे मृत्यु की अपेक्षा कादर की भाँति जीवन व्यतीत करने और मित्र का बदला न लेने की अपकीर्ति का बहुत भय था। उसने कहा-मैं अपराधी को दण्ड दूँगा, चाहे मैं मारा ही क्यों न जाऊँ। नहीं तो मैं संसार में केवल पृथ्वी का भार और मनुष्योंकी घृणा का पात्र बन जाऊँगा। क्या तुम सोचते हो कि उसने भय या मृत्यु की पर्वाह की ? एथेंसवासियो ! मैं इसे ही सत्य समझता हूँ 'आदमी को वहाँ रहना चाहिये, जहाँ या जिस जगह पर, उसे चाहे आज्ञा देनेवाले ने रक्खा हो और चाहे स्वयं उसने वहाँ रहना पसन्द किया हो। उसका यह कर्त्तव्य है कि वह अपने पद पर रहे और भय का सामना करे। उसे न तो मृत्यु ही का भय करना चाहिये और न अन्य किसी बात की चिन्ता ही करनी चाहिये। उसे केवल अपकीर्ति और आत्मसन्मान का ध्यान रखना चाहिये।

जब उन सेनापतियों के आज्ञानुसार जिन्हें तुमने मुझ पर आज्ञा करने का अधिकार दिया था, मैं पोटीडिया, डीलियम और एम्फीपोलिस में लड़ाइयों में नियत स्थान पर और लोगों की तरह रहा और वहाँ मैंने मृत्यु को कुछ पर्वाह न की, तब आज मैं अपने इस स्थान से अर्थात् लोगों को और स्वयं अपने को जाँचने से. यदि मृत्यु या और किसी भय के कारण हट जाऊँ तो

बड़े ही आश्चर्य की बात होगी, क्योंकि इस काम के लिये मुझे, मेरे विश्वास के अनुसार, स्वयं ईश्वर ने नियत किया है। सचमुच यह एक बड़े आश्चर्य की बात होगी, और यदि मैं अपने इस ईश्वर-प्रदत्त स्थान से भाग जाऊँ तो अवश्य ही मेरे ऊपर ईश्वर (की आज्ञा) न मानने का अभियोग चलाया जाना उचित है। क्योंकि नियत स्थान से भाग जाने की अवस्था में, मैं ओरेकल (देवी भविष्यवाणी) की अवज्ञा करूँगा, मृत्यु का भय करूँगा और अपने को बड़ा बुद्धिमान् समझूँगा, जब मैं महामूर्खता का काम करता होऊँगा। मेरे मित्रो! मृत्यु का भय करना ही अज्ञानावस्था में अपने को बुद्धिमान समझना है। क्योंकि जब हम मृत्यु का भय करते हैं तब हम अपने को उससे डरने के लिये बुद्धिमान् समझते हैं किन्तु वास्तव में हम मृत्यु के बारे में कुछ नहीं जानते। क्योंकि मनुष्य के लिये सबसे बड़ी भलाई मृत्यु ही है; किन्तु वे उससे डरते हैं और यह समझते हैं कि मानों मृत्यु ही सब से बड़ी विपत्ति है और यह समझना कि मृत्यु भयङ्कर विपत्ति है; क्या लज्जाजनक मूर्खता से कम है? क्योंकि हम मृत्यु के विषय में कुछ भी न जान कर अपने को उसके विषय में पारङ्गत समझते हैं। इस विषय में भी जनसाधारण से मेरा मन भिन्न है। यदि मैं अपने को दूसरों से अधिक बुद्धिमान् कहता हूँ तो उसका मतलब केवल यही है कि मैं यह भली भाँति समझता हूँ कि मुझे दूसरे लोक के विषय में कुछ भी नहीं मालूम है, और यह बात एक यथार्थ तत्त्व है। किन्तु मैं यह भी बहुत अच्छी तरह जानता हूँ कि दूसरों की बुराई करना,

तथा अपने से बड़ों की आज्ञा की अवज्ञा करना, वे बड़े चाहें देवता हों या मनुष्य, बड़े कमीनेपन और बड़ी भूल का काम है। मैं वह काम कभी न करूंगा जिसे मैं बुरा या अनुचित समझता हूँ। साथ ही मैं कभी उस काम से भय के कारण पीछे न हटूंगा, जिसे मैं उचित समझता हूं। इस कारण यदि तुम मुझे अभी छोड़ दो, और एनिटस के इस तर्क को न सुनो अर्थात् 'यदि साक्रटीज़ को छोड़ना निश्चित किया जाय तो उस पर अभियोग चलाने की आवश्यकता ही क्या थी? और यह कि साक्रटीज़ को मार डालना ही उचित है क्योंकि यदि वह छोड़ दिया जायगा तो सारी भविष्य सन्तान साक्रटीज़ के बताये पथ पर चलैगी और बिगड़ जायगी।' इस कारण यदि तुम मुझसे कहो कि 'साक्रटीज़! इस वार हम एनिटस के कथन पर ध्यान न देंगे, और हम तुम्हें इस शर्त पर छोड़ देंगे कि तुम आयन्दा अपने इस अनुसन्धान (जाँच से) और दर्शन (फ़िलासफी) से बाज़ आओ। यदि आगे फिर कभी तुम इन बातों के लिये पकड़े जाओगे, तो अवश्य ही तुम्हें मृत्युदण्ड मिलैगा।' यदि तुम मुझे इन शर्तों को तय करके छोड़ना चाहो तो मैं तुम्हें उत्तर दूंगा और कहूँगा—" एथेंसवासियों! मैं तुम्हारा बहुत ही अधिक आदर करता हूं और तुमसे स्नेह (प्रेम) करता हूँ। किन्तु मैं तुम्हारी आज्ञा न मान कर ईश्वर की आज्ञा मानूँगा और जब तक मुझमें दम है, या शक्ति है तब तक मैं न तो दर्शन (फिलासफी) से बाज़ आऊँगा और न तुमसे सत्य कहना ही छोड़ दूँगा। जब जब तुम मिलोगे तब तब मैं तुममें से प्रत्येक से, अपनी आदत के अनुसार

बराबर यह कहूँगा कि 'प्यारे मित्र! तुम उस एथेंस नगर के नागरिक (Citizen) हो, जो एक आदरणीय नगर है, और जो मस्तिष्क तथा विचारशक्ति के लिये दूर दूर तक भली भाँति प्रसिद्ध है। क्या तुम्हें धन के लिये, नाम के लिये और इज्जत के लिये इतनी चिन्ता करते लज्जा नही आती? क्या तुम ज्ञान और सत्य सम्पादन करने के लिये तथा अपनी आत्मा को उन्नत और शुद्ध करने के लिये कुछ भी चिन्ता न करोगे?' और यदि तुम यह कहोगे कि तुम इन बातों की चिन्ता या उपाय करते हो, तो मै तुम्हें ऐसे ही नहीं चले जाने दूँगा किन्तु मै तुम्हें जाँचूँगा, जिरह करूँगा और तुम्हारी परीक्षा करूँगा, और यदि मुझे यह मालूम होगा कि तुम अपने को भलाई का अनुयायी लगाते हो, किन्तु तुममें कुछ भी भलाई नही है, तो मैं तुम्हारी भर्त्सना करूँगा, तुम्हारी निन्दा करूँगा, और इस बात के लिये तुम्हारा तिरस्कार करूँगा, कि तुम महत्त्व के विषयों पर कुछ भी ध्यान नही देते और बिलकुल साधारण बातों पर आवश्यकता से अधिक ध्यान देते हो। इस प्रकार मै छोटे, बड़े, धनी, दरिद्र, नागरिक, परदेशी, सब की जाँच करूँगा, किन्तु विशेष कर मैं नागरिकों ही की जाँच अधिक करूँगा क्योंकि उनसे मेरा निकट का सम्बन्ध है। मै इसे अवश्य करूँगा क्योंकि ईश्वर ने मुझे यह करने की आज्ञा दी है। और मेरी समझ में एथेंस में तुम लोगों को कभी ऐसा कोई सौभाग्य न हुआ होगा, जैसा तुम्हें मेरी ईश्वर-सेवा के कारण प्राप्त हुआ है। क्योंकि मैं अपना सारा जीवन इसीमें व्यतीत करता हूँ। मैं तुममें से हर एक के पास जाकर यही

अनुरोध करता हूँ, पहिले अपनी आत्मा को उन्नत और पवित्र करो, फिर संसारी बातों, धन आदि पर ध्यान दो। मैं तुमसे यह कहता हूँ कि पुण्य धन से नहीं मिलता, किन्तु धन और प्रत्येक भली वस्तु जो मनुष्य के सार्वजनिक या घरेलू जीवन में काम आती है, इसी पुण्य द्वारा प्राप्त होती है। यदि मैं इन शिक्षाओं से नौजवानों को बिगाड़ता हूँ तो निस्सन्देह मेरा अपराध बहुत बड़ा है! किन्तु यदि कोई यह कहे कि मैं इन बातों के अतिरिक्त और कुछ सिखाता हूँ तो वह पक्का झूँठा है। इसी कारण, ऐ एथेंसवासियो! मैं तुमसे कहता हूँ कि चाहे तुम एनिटस की बात मानो या न मानो, मुझे छोड़ो या न छोड़ो, किन्तु इस बात को भली भाँति समझ रक्खो कि मैं अपनी चाल ढाल, रहन सहन में कदापि एक तृण मात्र भी परिवर्तन न करूँगा। नहीं, कदापि नहीं, हर्गिज़ नहीं, चाहे इसके लिये मुझे बीसों बार मृत्यु के मुख में क्यों न जाना पड़े।

एथेंसवासियो! मुझे बीच में मत टोको। मेरी प्रारम्भिक प्रार्थना का ध्यान रक्खो और मेरी बातें सुनते जाओ। मेरी समझ में उनके सुनने से तुम्हारा लाभ ही होगा। मै तुमसे अभी जो बात कहूँगा उस पर कदाचित् तुम चिल्ला उठो, किन्तु ऐसा मत करना। इस बात का विश्वास रक्खो कि यदि तुम यह जान कर कि मैं कौन हूँ, मुझे मृत्युदण्ड दोगे, तो मेरा तो कुछ कर ही न पाओगे, बल्कि उल्टा अपना ही अनिष्ट करोगे। मेलिटस और एनिटस मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सके। उनके लिये यह बिलकुल असम्भव है। क्योंकि मेरा यह विश्वास

है कि ईश्वर यह न होने देगा कि एक भले आदमी को दुष्ट लोग सतावें। निस्सन्देह वे मुझे प्राणदण्ड दिला सकते हैं, मुझे देश से निकाल सकते हैं, या मेरे नागरिक होने के (दीवानी) अधिकार छीन सकते हैं; और कदाचित् मेलिटस और एनिटस आदि इन बातों को बड़ी विपत्ति समझते हैं। किन्तु मैं इन्हें विपत्ति या बुराई नहीं समझता। मेरी समझ में उनका वर्तमान काम, अर्थात् एक व्यक्ति को अन्याय से मरवा डालने की चेष्टा करना, इन आगे कही हुई विपत्तियों से कहीं अधिक भयानक और दुष्ट है। एथेंसवासियो! अब मैं अपने बचाव के लिये कोई तर्क नहीं कर रहा हूँ, जैसा कि तुममें से कोई कोई व्यक्ति सोचते हों। मैं तुमसे ईश्वर के विरुद्ध पाप न करने की प्रार्थना कर रहा हूँ। क्योंकि ईश्वर ने दया करके मुझे तुम्हें दिया है, तुम ईश्वर की दी वस्तु को अस्वीकार न करो और उसे नष्ट न करो। मैं यह इस लिये कहता हूँ कि यदि तुम मुझे मार डालोगे तो मेरी जगह पूरी करने वाला तुम्हें शीघ्र ही न मिलेगा। यदि मैं उपमा देकर अपना भाव प्रकट करना चाहूँ—तो मैं यह कहूँगा कि यह एथेंस नगर एक बड़े उत्तम और शानदार घोड़े के समान है जो सो रहा है, उसके जगाने के लिये ईश्वर ने एक डाँस को भेजा है जो उसे काट कर जगावे। मुझे विश्वास है कि वह डाँस या पिस्सू मैं ही हूँ क्योंकि मैं सदा दिन रात तुमसे प्रश्न कर कर तुम्हें तंग करता रहता हूँ और तुममेंसे प्रत्येक की भर्त्सना किया करता हूँ जिससे तुम आलस्य में न पड़ जाओ। मेरा स्थानापन्न तुम्हें शीघ्र न मिलेगा और यदि तुम मेरी सम्मति से काम लेना चाहो तो मुझे

दण्ड मत दो। जिस तरह निद्रा में आदमी को छेड़ने से वह तंग आकर मारने दौड़ता है, वैसी ही तुम्हारी हालत है। और यदि तुम एनिटस की सम्मति स्वीकार करो तो तुम मुझे एक ही वार में मार डाल सक्ते हो और इसके बाद तुम चैन की निद्रा सो सक्ते हो। क्योंकि यदि ईश्वर ने तुम्हारे लिये कोई दूसरा मुझ ऐसा व्यक्ति न भेजा तो तुम को जगाने वाला कोई न रहेगा। और तुम इस बात को बड़ी सरल रीति से समझ सक्ते हो कि ईश्वर ही ने मुझे तुम्हारे नगर की सेवा के लिये भेजा है। क्योंकि कोई भी मानुषिक आदेश इतना शक्तिवान नहीं है कि जो मुझे अपने निज के कामों से छुड़ा दे। यद्यपि मुझे इस कारण से बहुत कष्ट सहने पड़े हैं। तथापि मैं केवल ईश्वर ही के आदेश के कारण अपनी निज की बातों और आवश्यकताओं को कुछ भी पर्वाह नहीं करता, किन्तु मैं अपने कष्टों की पर्वाह न कर तुममें से हर एक के पास पिता या बड़े भाई की तरह जा कर तुम्हें यह समझाने की चेष्टा करता हूँ कि तुम्हें पुण्य के लिये अधिक उद्योग करना चाहिये यदि इस सेवा के लिये मुझे कुछ धन मिलता या और किसी प्रकार कोई मेरा लाभ होता तो मुझे इस काम के करने के लिये कुछ कारण था, किन्तु तुम स्वयं इस बात को देख रहे हो कि मुझ पर अभियोग लगाने वालों ने यद्यपि मुझ पर सब अपराध निर्लज्जता से लगाये हैं तथापि उन्हें यह कहने का साहस नहीं हुआ कि मैंने कभी शिक्षा देने के लिये धन मांगा या कभी धन पाया। उनके पास इस बात का कोई भी सबूत न था। और मेरी दरिद्रता मेरे इस कथन की स्वयं गवाही है।

कदाचित् तुमको यह बात देख कर बड़ा आश्चर्य होता होगा कि यद्यपि मैं घरेलू रूप से लोगों को सलाह देने में सदा तत्पर रहता हूँ तथापि मैं सर्वसाधारण में आकर, नगर की कार्यकारिणी सभा में कुछ भी भाग लेने का साहस नहीं करता। तुमने इसका कारण मुझसे कई बार और कई जगहों में सुना है। वह कारण यह है कि बाज़ काम करने के लिये मुझे कभी कभी दैवीचिन्ह मिलता है-मेलिटस ने अभियोगपत्र में इसी दैवीचिन्ह की दिल्लगी उड़ाई है। यह एक प्रकार की आवाज़ है जिसे मैं बालकपन ही से सुनता आता हूँ, और जब मैं इसे सुनता हूँ तब बराबर वह मुझे किसी काम से हटाने को कहती है, किसी काम के करने का अनुरोध वह कभी नहीं करती। इसी दैवीचिन्ह या आवाज़ के कारण मैं सार्वजनिक कामों में भाग नहीं लेता, क्योंकि जब मैं भाग लेना चाहता हूँ तब वह मुझे उससे अलग हो जाने को कहती है। और मेरी समझ में उसका मना करना मेरे लिये अच्छा ही है, क्योंकि यदि मैंने सार्वजनिक कामों में भाग लेने का उद्योग किया होता, तो एथेंसवासियो! इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि मैं तुम्हारा या अपना कुछ भी भला किये बिना कभी का मर मिटा होता। मेरे सच कहने पर घबड़ाओ मत। एथेंस में या और किसी नगर में कोई भी ऐसा व्यक्ति बहुत दिनों तक जीवित नहीं रह सका जो सर्वसाधारण की इच्छाओं को और राज्य में फैली हुई अनीति और अन्याय को रोकने का उत्कट उद्योग करता हो। यदि कोई व्यक्ति वास्तव में सत्य और न्याय के लिये लड़ना चाहता

है और यदि उसको अपना जीवन थोड़े समय के लिये भी रखना अभीष्ट है, तो उसे उचित है कि वह गुप्त (घरेलू) रीति से लड़े—सर्वसाधारण में कदापि न लड़े।

मैं इस बात को केवल शब्दों ही से प्रमाणित नहीं करूँगा, किन्तु अपने कामों से इसे पुष्ट करूँगा, क्योंकि तुम कोरी बक बक की अपेक्षा काम को अधिक पसन्द करते हो। अतः मेरे कथन को ध्यानपूर्वक सुनो तब तुम समझ जाओगे कि कोई भी व्यक्ति मुझसे कोई भी अन्याय नहीं करा सक्ता चाहे वह मृत्यु ही का भय क्यों न दिखलावे। मैं अन्याय करने की अपेक्षा मृत्यु को अधिक पसन्द करता हूँ। जो मैं तुमसे अभी कहूँगा वह कदाचित् अदालतों में एक साधारण बात हो, किन्तु कुछ भी हो, वह सत्य है। एथेंसवासियो! मैं अपने जीवन भर में केवल एक बार सिनेटर के पद पर नियुक्त हुआ था। जब तुम लोगों ने 'आर्गिन्यूसी' के युद्ध के बाद, एक साथ दस सेनापतियों पर, युद्ध के बाद मृत सिपाहियों की लाशों के न बचाने का अन्याययुक्त अभियोग लगाया था, तब मेरी जाति वाले अर्थात् 'एण्टिओकिस' सभापति थे। पीछे से तुम स्वयं समझ गये थे कि वह अभियोग बिलकुल अनुचित था। उस समय सब सभापतियों में मैं ही एक ऐसा था जिसने तुम्हारे विरुद्ध सम्मति (वोट) दी थी। वक्ता लोग मुझे कैद कर लेने और चुप कर देने के लिये तैयार थे और तुम लोग मेरे विरुद्ध चिल्ला रहे थे और मुझे धमका कर अपनी ओर वोट लेने का प्रयत्न कर रहे थे, किन्तु मैंने इस बात का दृढ विचार कर लिया था कि मैं न्याय और नियम के लिये

भय का सामना करूँगा और तुम्हारे अन्यायानुमोदित प्रस्ताव से, जेल या मृत्यु के भय से, कभी सहमत न हूँगा। यह हाल प्रजातन्त्र (डिमाक्रेसी) के नष्ट होने से पहिले का है। जब 'ऑलिगार्की' की सत्ता हुई, तब उसके प्रबन्धकों ने, जिनकी संख्या तीसथी, मुझे राज्य के सभाभवन में बुलाया। मेरे साथ ही चार आदमी और बुलाये गये थे। 'ऑलिगार्की' के प्रबन्धकों ने हमें सालेमिस केलिअन को पकड़ लाने की आज्ञा दी, जिससे कि वे उसे मार डालें। उनका यह नियम था कि वे लोगों को ऐसी आज्ञाएं अक्सर दिया करते थे, क्योंकि वे चाहते थे कि बहुत से लोग उनके साथ उनका पाप बँटाने वाले हो जाँय। किन्तु उस समय भी मैंने केवल वचनो ही से नहीं किन्तु अपने काम से यह दिखला दिया कि मैं मृत्यु की तो एक रत्ती भर भी पर्वाह नहीं करता, पर मैं ईश्वर या मनुष्य के बनाये नियमो की बेशक पर्वाह करता हूँ। उस ऑलिगार्की की सर्कार की शक्ति मुझे अनुचित काम करने के लिये बाध्य न कर सकी। किन्तु जब हम राज्य के सभाभवन से निकले तो मेरे चार साथी तो सालेमिस को चले गये और लिअन को एथेंस मे ले आये, पर मैं अपने घर चला आया और यदि 'ऑलिगार्की' का नाश शीघ्र ही न होगया होता, तो कदाचित् बहुत शीघ्र ही मुझे अपने इस काम के लिये मौत का सामना करना पड़ता। तुममें से बहुत लोग इस बात के मेरे गवाह हैं।

यदि मैं सार्वजनिक कामों में भाग लेता और इसी तरह कर्त्तव्यानुसार न्याय और सत्य के पालन कराने के लिये सदा लड़ता होता, तो क्या तुम समझते हो कि मैं इतने

दिनों जीवित रह सका था? एथेंसवासियो! मैं क्या, कोई भी व्यक्ति कदापि इस तरह जीवित नहीं रह सका। किन्तु मैंने अपने जीवन में जब कभी सार्वजनिक कामों में भाग लिया है न तो तब, और न अपनी घरेलू बातों ही में, मैंने न्याय का कभी तिरस्कार किया है। मैंने इस विषय में उन लोगों की बात भी नहीं मानी है, जिन्हें मेरे शत्रु झूठ मूठ मेरा शिष्य कहते हैं। किन्तु मैंने कभी किसी व्यक्ति का गुरु होना स्वीकार नहीं किया है। जब मैं अपने काम में लगता था तब न तो मैंने कभी किसी व्यक्ति से, जो मेरी बात सुनने को उत्सुक था, बात करने से इन्कार ही किया है, चाहे वह बुड्ढा हो या बालक, और न मैं कभी रुपये के लिये बात करता हूँ और न रुपया न मिलने पर बात करने से इन्कार ही कर देता हूँ। मैं सदा एक ही प्रकार धनी और दरिद्र से बात करने को तैयार रहता हूँ, और यदि कोई मुझे उत्तर देना और मेरी बातें सुनना चाहता है, तो वह ऐसा कर सका है। और यदि न्याय की बात पूछी जाय तो मैं ऐसे लोगों के भले या बुरे होने का जिम्मेदार नहीं हो सका, क्योंकि न तो मैंने कभी उनको कोई विद्या सिखलाई ही है, और न मैंने कभी किसी को कोई विद्या सिखलाने का दावा ही किया है। यदि कोई व्यक्ति यह कहे कि 'मैंने साक्रटीज़ से गुप्त रीति से कोई ऐसी बात सीखी या सुनी है, जो और किसी ने नहीं सुनी' तो विश्वास रखो कि ऐसा कहने वाला झूठा है।

तो फिर लोग मेरी संगत में इतना समय बर्बाद करने के लिये क्यों प्रसन्नतापूर्वक तैयार रहते हैं? एथेंस-वासियो! तुमने इसका कारण सुन लिया है। असल बात

यह है कि जब मैं उन मूर्ख लोगों से जिरह करता हूँ जो अपने को बुद्धिमान समझते हैं तब वे उसे सुन कर बड़े प्रसन्न होते हैं। सचमुच उनकी बात चीत बड़ी रोचक होती है। मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ कि 'ऑरेकल' द्वारा या स्वप्न द्वारा, तथा अन्य जिन रीतियों द्वारा ईश्वर अपनी आज्ञा मनुष्य पर प्रकट करता है, उन सब रीतियों द्वारा ईश्वर ने मुझे मनुष्य की परीक्षा करने की आज्ञा दी है। एथेंसवासियो ! यही बात सत्य है, और यदि यह बात सत्य न होती तो बड़ी सरलता से काट दी जाती। क्योंकि यदि यह बात सत्य होती कि मैंने बहुत से लड़कों को बिगाड़ डाला है, तो यदि सब नहीं तो उनमें से कुछ तो अवश्य ही बड़े होने पर समझ जाते कि मैंने उनके साथ बुराई की है और वे अवश्य ही, अपना बदला लेने के लिये आज तुम्हारे सामने आगे बढ़ कर मुझ पर दोषारोपण करते। यदि वे स्वयं ऐसा करने को राजी न हों तो उनके सम्बन्धी, माता पिता, अवश्य ही मेरे अपराध को याद रखते और आज अपना बदला लेते। उनमें से बहुत तो यहाँ मेरे सामने अदालत में उपस्थित हैं। यहाँ मेरे मुहल्ले का क्रीटो है जो क्रीटो-बोलस का पिता है और मेरी ही अवस्था का है, यह स्फीट्स का लाइसेनियस है जो ईस्किनस का पिता है। यहाँ एपिजीनस का पिता, सिफिसस का एण्टिफन भी उपस्थित है। फिर और भी लोग यहाँ हैं जिनके भाइयों ने मेरे साथ बहुत समय बिताया है। यहाँ पर थियोज़ो-टिडीस का पुत्र निकोस्ट्रेटस है, जिसका भाई थियोडोटस मेरे साथ रहता था। थियोडोटस मर गया है, इस लिये

वह अपने भाई से चुप रहने का अनुरोध नही कर सक्ता। यहाँ डीमोडोकस का पुत्र, और थीजिस का भाई पारलस भी है। एरिस्टन का लड़का एडीमेएटस भी है जिसका भाई प्लेटो है, तथा एरिस्टोडोरस का भाई एएटोडोरस भी यही है। यहाँ और भी ऐसे लोग हैं जिन्हें मैं बतला सक्ता हूँ। मेलिटस को उचित था कि वह इनमें से कुछ को तो अवश्य ही अपने व्याख्यान के समय गवाही देने के लिये बुलाता। किन्तु यदि उस समय वह उनको बुलाना भूल गया तो अब वह उन्हें बुला सक्ता है, वह बतलावे कि उसके पास कोई ऐसी गवाही है? जब वह उन्हें बुलावेगा तब मैं एक ओर चुप खड़ा हो जाऊँगा। मेरे मित्रो! देखो वे लोग उल्टे उसे (मुझको) सहायता करने के लिये तैयार हैं, जिसने मेलिटस और एनिटस के कथनानुसार अपने साथियों को बिगाड़ा और उन्हें हानि पहुँचायी है। जिन्हें मैंने बिगाड़ा है, वे कदाचित् किसी कारणवश मेरे विरुद्ध बोलने के अनिच्छुक हों, किन्तु उनके रिश्तेदारों को जो बड़े और बेबिगड़े हैं न्याय और सत्य के सिवा और कौन सा कारण हो सक्ता है, जिससे वे मेरे विरुद्ध नहीं बोलते? वे मेरे विरुद्ध नहीं बोलते क्योंकि उन्हें भली भाँति मालूम है कि मैं सच कह रहा हूँ और मेलिटस झूठ बोल रहा है।

मेरे मित्रो! ऐसी ही बातें मेरे बचाव के लिये आवश्यकता से अधिक काफी हैं। तुममें से शायद कोई ऐसा हो जो याद करके घबड़ाता हो कि जब उस पर एक साधारण अभियोग चलाया गया था तब वह रो रो कर जजों से छोड़ देने के लिये प्रार्थना करता था, और तुम्हारे हृदयों

में करुणा उत्पन्न करने के लिये वह अपने वाल बच्चों और मित्रों को अदालत में लाता था, किन्तु वह देखता है कि मैं इनमें से किसी भी उपाय का अवलम्वन नहीं करता, यद्यपि उसके हिसाब से मैं बड़े खतरे में हूँ। कदाचित् ऐसा न करने के लिये वह मेरे लिये अपना हृदय कड़ा कर ले, कदाचित् इस कारण वह क्रुद्ध हो जाय और अपनी वोट (सम्मति) क्रोध में दे दे। मैं समझता हूँ कि यहाँ ऐसा कोई भी न होगा, किन्तु यदि तुममें से कोई ऐसा हो तो मेरी समझ से उसके लिये यह उत्तर युक्तियुक्त होगा कि—'मेरे मित्र! मेरे भी नाते रिश्तेदार हैं, क्योंकि 'कविवर' होमर के कथनानुसार "मैं पत्थल और लकड़ियों से उत्पन्न नहीं हुआ" किन्तु मैं माता का पुत्र हूँ। इस कारण, एथेंसवासियो! मेरे नाते रिश्तेदार भी हैं—मेरे तीन पुत्र हैं उनमे एक किशोरावस्था का है और दो अभी विलकुल वच्चे ही हैं। पर तो भी मैं उनमें से किसीको भी अदालत मे ला कर अपने को छुड़ाने के लिये तुम्हारी दया प्रार्थना न करूँगा। मैं ऐसा क्यों न करूँगा? एथेंसवासियो! मैं न तो धृष्टता के कारण ऐसा करना नापसन्द करता हूँ और न इस लिये कि मैं तुमको कुछ नहीं समझता। मैं मृत्यु का सामना वीरता से कर सक्ता हूँ या नहीं यह भी एक निराला प्रश्न है। किन्तु अपनी, तुम्हारी और अपने इस नगर की भलाई के लिये, तथा अपनी इस अवस्था और इस कीर्ति के सामने, मेरे लिये ऐसा करना विलकुल ही अच्छा न होगा। चाहे न्याय से या अन्याय से लोगों ने यह स्थिर कर लिया है कि साक्रटीज़ मनुष्य समाज से किसी तरह भिन्न

है। तुममें से जो लोग ज्ञान, वीरता या और किसी गुण के लिये प्रसिद्ध हैं वे यदि इस ढँग पर वर्तेंगे तो उनके लिये बड़ी लज्जा की बात होगी। मैंने बहुधा प्रसिद्ध पुरुषों को अभियोग के समय विचित्र रीति से काम करते देखा है, मानों वे मरने को अति भयङ्कर समझते हैं, और यदि तुम उन्हें न मार डालो, तो मानो उन्हें निरन्तर जीने की आशा है। मेरी सम्मति से ऐसे मनुष्य नगर के नाम पर धव्वा लगाते हैं क्योंकि परदेशी लोग यही समझेंगे कि एथेंस के वे चुनेहुए आदमी, जो वड़े महान् व्यक्ति समझे जाते हैं और जिन्हें एथेंसवासी वड़े वड़े पद देते हैं, स्वयं वे औरतों से वढ़ कर नहीं है। एथेंस-वासियों! तुममें से जो वड़े समझे जाते हैं उनको न तो स्वयं ऐसा करना चाहिये और न तुम्हें हमको ऐसा करने देना चाहिये। तुमको यह दिखलाना चाहिये कि तुम उन लोगों पर जो शान्त रहते हैं अधिक दया दिखलाते हो और उन लोगों से, जो ऐसे ऐसे हास्यास्पद दृश्य दिखला कर नगर को वदनाम करते हैं, तुम अधिक कठोरता का वर्त्ताव करते हो।

किन्तु नगर की नेकनामी के प्रश्न के अलावा मेरी समझ मे जजों से दया की भिक्षा माँगना और इस प्रकार छुटकारा पाना विलकुल ही अनुचित है। यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम जज को विचार द्वारा अपने रास्ते पर लावें। जज या न्यायाध्यक्ष अपने मित्रों में 'न्याय' वाँटने के लिये नहीं वनाया जाता किन्तु उसका कर्त्तव्यकर्म न्यायानुमोदित आज्ञा का सुनाना है, क्योंकि जज पहिले ही इस वात की शपथ खा चुका है कि वह किसी की रियायत न करेगा

किन्तु सदा वह न्यायानुसार ही विचार करेगा। इस कारण हमें न चाहिये कि हम तुमको अपनी कसम भूल जाने को कहें, और तुमको भी यह चाहिये कि तुम हमको कभी इस बात का मौक़ा न दो कि हम तुम्हें कुछ सिखावें. क्योंकि ऐसी अवस्था में हममें से कोई भी उचित काम न करता होगा। एथेंसवासियो! इस कारण मुझसे ऐसा काम मत कराओ क्योंकि मैं इस काम को न तो पवित्र ही समझता हूँ और न उचित और ख़ास कर आज तो तुम मुझे ऐसा कदापि न करने दो क्योंकि जब आज मुझ पर मेलिटस अधर्म के लिये अभियोग चला रहा है। क्योंकि यदि मैं अपनी प्रार्थनाओं से तुम को अन्याय पथ पर चलाने और तुम्हारी शपथ भुलाने में सफल होजाऊँ तो मैं साफ़ साफ़ तुम्हें देवताओं में विश्वास न करने की शिक्षा देता होऊँगा और इस तरह मैं अपने समर्थन के बदले स्वयं अपने आप पर देवताओं पर विश्वास न करने का अभियोग चलाता होऊँगा किन्तु एथेंसवासियो! यह बिलकुल सत्य नहीं है। मेरे वादी देवताओं में विश्वास नहीं करते किन्तु मेरा उनमें दृढ़ विश्वास है। मैं अपना यह अभियोग ईश्वर के और तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ, तुम इसका ऐसा न्याय करो जो हमारे और तुम्हारे, दोनों के लिये मंगलकारक हो।

(अनन्तर कौंसिल में वोट ली गयी। साक्रटीज़ के पक्ष में २२० और विपक्ष में २८१ वोट (सम्मतियाँ) आयी। तब मेलिटस ने प्रस्ताव किया कि साक्रटीज़ को मृत्युदण्ड दिया जाय। इसके बाद साक्रटीज़ ने अपने दण्ड के बारे में निम्न लिखित व्याख्यान दिया।)

साक्रटीज—एथेंसवासियो ! कई कारणों से मुझे तुम्हारे विचार पर आश्चर्य नहीं हुआ। मुझे इस बात का पूरा भरोसा पहिले ही था कि तुम मुझे अपराधी बतलाओगे और इसी कारण से मुझे तुम्हारे विचार पर इतना आश्चर्य नहीं हुआ जितना कि अपने पक्ष में सम्मतियों की संख्या देख कर हुआ है। सचमुच मैंने इस बात का कभी ख़याल नहीं किया था कि मेरे विपक्ष की सम्मतियाँ मेरे पक्ष की सम्मतियों से केवल कुछ ही अधिक होंगी, और अब ऐसा मालूम होता है कि यदि केवल तीस ही सम्मतियाँ उधर की इधर आजातीं तो मैं बच जाता। इससे मैं समझता हूँ कि मैं मेलिटस के कुचक्र से बच गया, क्योंकि यह साफ़ ज़ाहिर है कि यदि एनिटस और लाइकन भी मुझ पर अपराध न लगाते तो उसे वर्तमान सम्मतियों का पंचमांश भी न मिलता और इस कारण उसे एक हज़ार 'ड्राक्मी' का जुर्माना देना पड़ता।

अब वह मेरे दण्ड के लिये मृत्यु का प्रस्ताव करता है। ऐसा ही हो, और एथेंसवासियो ! इसके बदले में मैं किस दण्ड का प्रस्ताव करूँ ? क्या मुझे उसी बात का प्रस्ताव न करना चाहिये, जिसके लिये मैं उपयुक्त हूँ ? तब मुझे इस बात के लिये क्या दण्ड या जुर्माना उपयुक्त है कि मैंने अपना जीवन शान्तिपूर्वक न व्यतीत करने का प्रण कर लिया है ? मैंने उन वस्तुओं की कुछ भी पर्वाह न की जिनको अधिकांश मनुष्य बड़ी क़ीमती समझते हैं, अर्थात् धन, घर द्वार, सेना के उच्च पद, सार्वजनिक वक्तृता, या अन्य राजनैतिक पद, सभा सोसाइटी और उन सब दलादली (दलबन्दी) की जो कि एथेंस में हैं, मैंने कुछ

भी पर्वाह नहीं की, क्योंकि मैं इसे समझे बैठा था, कि यदि मै इन बातो में लगा तो मैं अपने जीवन बचाने में असमर्थ हो जाऊँगा। इस कारण मै उन स्थानों में नही गया जहाँ जाने से मै अपना या तुम्हारा किसी का भी भला नहीं कर सक्ता था। बल्कि मै तुममें से हर एक के पास अलग अलग गया और मैंने तुम्हारी बहुत बड़ी सेवा की अर्थात् मैंने तुम्हे यह समझाने की चेष्टा की कि तुम्हे अपने बारे में तब तक चिन्ता न करनी चाहिये जब तक कि तुम अपनी आत्मा की चिन्ता से निवृत्त न हो जाओ और जब तक कि अपने को तुम भरसक बुद्धिमान् और परिपूर्ण न बना लो। एथेंस के झगड़ों की चिन्ता तब तक मत करो जब तक कि तुम स्वयं एथेंस के बारे मे चिन्ता न कर चुके हो और इसी प्रकार दूसरी बातों में भी काम करो। तो ऐसे जीवन के लिये मुझे कौन सा इनाम मिलना चाहिये? एथेंसवासियो! यदि मै सच-मुच अपने लिये कुछ इनाम पसन्द करना चाहूँ तो वह इनाम कोई ऐसी वस्तु होनी चाहिये, जो मेरी योग्यता के अनुसार हो। एक ऐसे गरीब भलाई करनेवाले के लिये, जो तुम्हें सुधारने के लिये अवकाश ढूँढ़ता है, कौन सा पुरस्कार उपयुक्त है? एथेंसवासियो! कोई भी ऐसा पुरस्कार नहीं है जो उसके लिये उपयुक्त हो, सिवाय इसके कि उसे प्राइटेनियम के विशद राज्यभवन में एक सार्वजनिक दावत दी जाय। ओलिम्पिक खेलो मे घोड़े या रथों द्वारा विजय पानेवालो की अपेक्षा वह व्यक्ति इस आदर के लिये कहीं अधिक उपयुक्त है। ओलिम्पिक खेलों की विजय तुम्हें केवल क्षणिक सुख (आनन्द) पहुँचाती

है, किन्तु मैं तुम्हें सच्चा सुख पहुँचाता हूँ, और साथ ही खेलों में विजय पाने वालों को किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है किन्तु मुझे आवश्यकता है। इस कारण यदि सचमुच मुझे अपने लिये किसी उपयुक्त दण्ड का प्रस्ताव करना है तो मैं अपने लिये प्राइटेनियम के सभा-भवन में एक सार्वजनिक दावत पाने का प्रस्ताव करता हूँ।

कदाचित् तुम यह समझते हो कि जैसे मैंने क्षमा प्रार्थना और आँसू बहाने के बारे में ज़िद और गुस्ताखी की थी वैसे ही मैं अब कर रहा हूँ। एथेंसवासियो! ऐसा नहीं होसक्ता। कदाचित् मैं कुछ ज़िद कर रहा हूँ किन्तु उसका कारण यह है कि मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि मैंने कभी किसी को जान बूझ कर हानि नहीं पहुँचायी। मैं तुम्हें इसका विश्वास न करा सका क्योंकि हमें आपस में बात चीत करने का अवकाश बहुत कम मिला था। यदि और जगहों की तरह एथेंस में भी ऐसा कोई कानून होता कि कोई भी ऐसा अभियोग एक दिन में समाप्त न कर दिया जाय जिसमें जीवन मृत्यु का मामला हो, तो मै तुम्हें इस बात का विश्वास करा देता। किन्तु अब इस छोटे से समय मे यह अत्यन्त कठिन है कि मैं अपने को शत्रुओं के भीषण अभिशापों से बचा लूँ। किन्तु जब मुझे इस बात का विश्वास है कि मैंने किसी भी व्यक्ति को जान बूझ कर हानि नहीं पहुँचायी, तो न तो मैं कभी भी अपने को हानि ही पहुँचाऊँगा, और न इस बात को मानूँगा कि मैं किसी दण्ड भोगने के योग्य हूँ और न अपने लिये किसी दण्ड का प्रस्ताव करूँगा। मैं ऐसा क्यों करूँ?

मैं मेलिटस के प्रस्तावित दण्ड को ही क्यों न भोगूँ, जब मैं यह कह रहा हूँ कि मुझे नहीं मालूम कि वह कोई बुराई है या भलाई? क्या मैं उसके बदले में किसी ऐसी वस्तु का प्रस्ताव करूँ जो मेरी समझ से बुरी है? क्या मैं क़ैद पसन्द करूँ? और क्यों मैं अपना बचा हुआ जीवन जेल में, एक के बाद दूसरे जेलरक्षक के दास के समान व्यतीत करूँ? या मैं अपने लिये यह प्रार्थना करूँ कि मुझ पर कुछ जुर्माना कर दिया जाय और जब तक कि मैं उसे न दूँ तब तक मुझे क़ैद में रखा जाय? मैं तुमसे यह बतला चुका हूँ कि मैं ऐसा क्यों न करूँगा? मेरा जन्म जेल ही में व्यतीत हो जायगा क्योंकि मेरे पास जुर्माना देने के लिये धन ही नहीं है। तब क्या मैं अपने लिये स्वदेश निर्वासन का प्रस्ताव करूँ? कदाचित् इसके लिये तुम राज़ी हो जाओगे। जब तुम्हीं लोग जो मेरे नगर के हो कर मेरे प्रश्नों और बहसों को सहन नहीं कर सके और अपने को मुझसे छुड़ाना चाहते हो, तो यदि मैं इस बात की दुराशा करूँ कि परदेशी लोग उनको प्रसन्नता से स्वीकार और सहन करेंगे तो जीवन सचमुच मुझे प्यारा होता। एथेंसवासियो! ऐसा होना सम्भव नहीं है। मैं बुड्ढा हो कर अपना जीवन क्या ही अच्छी रीति से व्यतीत करूँगा यदि मैं एथेंस से भाग कर नगर नगर घूमता फिरूँ। क्योंकि किसी नगर में जाने पर वहाँ वाले मुझे बराबर निकाल देंगे। क्योंकि मुझे भली भाँति मालूम है कि जहाँ जहाँ मैं जाऊँगा नौजवान लोग मेरी बातों को ध्यानपूर्वक सुनेंगे, जैसा कि वे यहाँ सुनते हैं और यदि मैं उनको भगादूँगा तो वे अपने बड़ों से कह कर मुझे निकाल देंगे और यदि मैं उनको न

निकालूँगा, तो यहाँ की तरह उनके भाई बन्धु मुझे खदेड़ देंगे।

कदाचित् कोई यह कहे कि 'साक्रटीज़ तुम एथेंस से चले जा कर अपना जीवन चुपचाप क्यों नहीं व्यतीत कर सके?' संसार में यही सबसे अधिक कठिन बात है जो मैं तुम्हें नहीं समझा सका। यदि मैं यह कहूँ कि मैं चुप न रहूँगा क्योंकि चुप रहने से ईश्वर की अवज्ञा होगी तो तुम मेरी बात का विश्वास न करोगे, और समझोगे कि मैं सच नहीं बोल रहा। यदि मैं तुमसे कहूँ कि संसार में मनुष्य के लिये सब से अधिक आनन्द की बात पुण्य आदि विषयों पर बात चीत करना, और दूसरे को और स्वयं अपने को जाँचना है, साथही बिना जाँचा हुआ जीवन जीने योग्य नहीं है, तो तुम मेरा और भी कम विश्वास करोगे। किन्तु मेरे मित्रो! यही सत्य है। यद्यपि मैं तुम्हें इस बात का विश्वास नहीं दिला सका। सब से बड़े असमंजस की बात तो यह है कि मैं इस बात के सोचने का आदी नहीं हूँ कि मैं किसी दण्ड के लिये उपयुक्त हूँ। यदि मैं धनवान् होता तो मैं अपने लिये बहुत बड़ा धन जुर्माने के रूप में देने का प्रस्ताव करता उससे मेरी कुछ भी हानि न हुई होती। किन्तु जब तक तुम लोग कोई ऐसा धन निश्चित न करो, जो मेरे लिये असम्भव न हो, तब तक दरिद्र होने के कारण मैं जुर्माना नहीं दे सका। कदाचित् मैं एक 'मिना' दण्ड स्वरूप दे सकूँ। इस लिये मैं इसके लिये प्रस्ताव करता हूँ। एथेंसवासियो! प्लेटो, क्रीटो, क्रीटोबोलस और अपालोडोरस मुझे ३० मिना देने को कहते हैं, और वे इसकी जामिन रहेंगे। इस लिये

मैं तीस मिनी देने को कहता हूँ। ये लोग इस धन के लिये काफ़ी जामिन हैं।

[उसकी मृत्युदण्ड की आज्ञा सुनायी जाती है।]

साक्रटीज – एथेन्सवासियो! तुम्हें सोचने के लिये बहुत समय नहीं मिला, और उसके उपहार स्वरूप वे लोग तुम्हें सदा बदनाम करेंगे, जो इस नगर को नीचा दिखाना चाहते हैं, और वे तुम्हारे मुँह पर तुम्हें इसके लिये लज्जित करेंगे कि तुमने साक्रटीज जैसे बुद्धिमान् को मार डाला। क्योंकि चाहे मैं बुद्धिमान होऊँ या न होऊँ किन्तु जब वे तुम्हें फटकारना चाहेंगे तो वे मुझे अवश्य ही बुद्धिमान कहेंगे। यदि तुम थोड़े दिन ठहरते तो, स्वयं प्रकृति ही तुम्हारी इच्छा पूरी कर देती क्योंकि तुम देखते हो कि मैं बुड्ढा हूँ और मेरी मृत्यु पास ही है। मैं तुम सबसे इस समय बात नहीं कर रहा किन्तु केवल उन्हींसे बात कर रहा हूँ जिन्होंने मेरी मृत्यु के लिये वोट दी थी और उन्हीं से मैं अब भी बात कर रहा हूँ। मेरे मित्रो! कदाचित् तुम्हारा यह ख्याल रहा हो कि मुझे जो नीचा देखना पड़ा है उसका कारण यह है कि मेरे पास कोई ऐसे कारण नहीं थे जिनसे मैं अपने छोड़े जाने की प्रार्थना तुमसे करता। मैं ऐसे कारण उस दशा में दे सक्ता था जब मैं अपने बचने के लिये बुरे या भले किसी भी उपाय का सहारा लेता, किन्तु मैं ऐसा नहीं कर सक्ता था। मैं हार गया, इसका कारण यह नहीं है कि मेरे पास तर्क और युक्तियुक्त कारण न थे, किन्तु मेरी इस हार का कारण यह है कि मुझमें शोख़ी और गुस्ताख़ी न थी। क्योंकि मैंने तुम्हारे सामने उस रीति से अपने मन का समर्थन नहीं किया, जैसा कि तुम मुझसे

अपने मत का समर्थन करवाना चाहते थे, या मैंने तुम्हारे
सामने रो कर और गिड़ गिड़ाकर क्षमा प्रार्थना नही की
या मैंने कोई और ऐसी बहुत सी बातें नहीं कीं जिनको
मै अपने स्वाभिमान के विरुद्ध समझता हूँ, और जिनको
सदा सुनने के कारण जिनके तुम आदी हो गये हो। जब मै
अपने बचाव के लिये अपने मत का समर्थन कर रहा था
तब मैंने मृत्यु के भय से कोई भी कातर बात नहीं कही,
और अब भी मैंने अपने विचार को नही बदला है। जिस
रीति से मैंने अपना बचाव किया और तुमने मुझे दण्ड
दिया, उस प्रकार से मुझे मृत्यु स्वीकार है किन्तु मुझे
उस रीति से काम करके जीना पसन्द नही है जिस रीति
से तुम मुझसे काम करवाना चाहते हो । युद्ध में और
मुकद्दमों मे कुछ ऐसी बाते होती है, जिनको, मैं क्या,
कोई भी करा[illegible] करना पसन्द नही करता । युद्ध में
अ तुम्हें इस मौका आ पड़ता है कि भागता हुआ मनुष्य
से बड़े असमंजस यदि मै अपने हथियार डाल दूं और
सोचने का आदी [illegible] सामने घुटना टेक कर अपने जीवन
युक्त हूँ। यदि मैं धन से कम से कम मृत्यु से तो बच
बड़ा धन जुर्माने के नुष्य किसी भी प्रकार के नीच
मेरी कुछ भी हानि चके तो हर एक भय में वह मृत्यु के
कोई [illegible] धत्ता है। किन्तु मेरे मित्रो! मेरी समझ में
मृत्यु की अपेक्षा 'बुराई' से बचना अधिक कठिन है,
क्योंकि मृत्यु मनुष्य का पीछा धीरे धीरे करती है और
'बुराई' बहुत शीघ्रगामी होने के कारण मनुष्य का पीछा
बहुत जल्द कर सकी है। और अब मुझे, जोकि वृद्ध और
सुस्त हूँ, धीमी चाल वाले ने (अर्थात् मृत्यु ने) पकड़

लिया है और मुझ पर अभिशाप लगाने वालों को, जोकि चतुर और चपल हैं, शीघ्रगामी अर्थात् 'बुराई' ने पकड़ लिया है। और अब मैं तुमसे दण्डित हो कर मृत्यु के पास जाता हूँ और वे अर्थात् मुझ पर अभिशाप लगाने वाले—सत्य द्वारा दण्डित हो कर 'बुराई' और 'दुष्टता' का दण्ड भोगने के लिये जा रहे हैं। और हम दोनो को यह दण्ड स्वीकार करना पड़ेगा। कदाचित् इनका होना उचित और योग्य था, और मेरी सम्मति से तो ये दण्ड भली भाँति और उचित रीति ही से बाँटे गये हैं।

एथेंसवासियो! अब मैं तुम्हारे लिये, जिन्होंने मुझे दण्ड दिया है, कुछ भविष्यवाणी कहना चाहता हूँ। क्योंकि अब मैं मरने जा रहा हूँ और इसी समय मनुष्य में भविष्यवाणी कहने की सबसे अधिक शक्ति रहती है। और उन लोगो से, जिन्होंने मुझे मृत्युदण्ड दिया है, मैं यह भविष्य वचन कहता हूँ कि मेरे मरने के बाद ही तुम्हें उससे कहीं अधिक दण्ड मिलेगा जो तुमने मुझे दिया है। तुमने यह काम इसलिये किया है कि जिससे कोई व्यक्ति तुम्हारे जीवन की व्यवस्था पूछने वाला न रह जाय। किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि इसका परिणाम ठीक उल्टा होगा। और भी अधिक लोग आ कर तुम पर जीवन का उत्तर-दायित्व रखेंगे और तुमसे तुम्हारे जीवन का हाल पूछेंगे, तुम उन्हें नहीं जानते क्योंकि मैंने अभी तक उन्हें रोक रखा था। वे तुम्हारे लिये बड़े कठिन गुरु बन जायेंगे क्योंकि वे उमर में तुमसे छोटे होंगे और इस कारण से तुम उन पर और भी अधिक नाराज़ होगे। यदि तुम यह

सोचते हो कि लोगों को मार डालने से वे तुम्हारे दुष्ट जीवन के लिये तुम्हें फटकारना छोड़ देंगे, तो तुम बड़ी भूल में हो। छुटकारे का यह उपाय विलकुल असम्भव है और यह अच्छा भी नहीं है। यदि तुम फटकारों को बन्द करने के बदले अपना जीवन भर सक सच्चरित्र बनाने का उद्योग करो तो यह पहिले उपाय से कहीं अधिक अच्छा और सरल है। जिन लोगों ने मुझे दण्ड दिया है, उन लोगों से मेरी यही अन्तिम भविष्य वाणी है।

आप लोगों से, जिन्होंने मुझे छोड़ देने की वोट दी है, मैं इस विषय पर तब तक कुछ बात चीत करना चाहता हूँ जब तक अफसर काम में लगे हैं, और मैं उस स्थान पर नहीं जाता जहाँ कि वे मुझे ले जावेंगे। इसलिये मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि जब तक मैं यहाँ हूँ, आप न जायँ। कोई कारण नहीं कि यदि हमें मौका मिलै तो हम बात चीत न करें। मैं तुम्हे अपने मित्रों की भाँति यह बतलाना चाहता हूँ कि यह जो मेरे लिये हुआ है उसका क्या अर्थ है? मेरे विचारको! (मेरे लिये तुम्हें इस प्रकार ही सम्बोधन करना उचित है) मुझमें एक आश्चर्यजनक बात हो गयी है। वह दैवीवाणी, जिसके बारे में मैं कह चुका हूँ जीवन पर्यन्त मेरे साथ रही है और जब कभी मैं कोई न्यायविरुद्ध काम करने लगा हूँ, उसने मुझे बराबर टोंका है। और अब तुम स्वयं जान सक्ते हो कि मुझे क्या होगया है, अर्थात् मुझ पर वह बात आ पड़ी है जिसे तुम लोग सब से बड़ी विपत्ति समझते हो। किन्तु जब मैं आज सवेरे घर छोड़ने लगा तब मुझे दैवी वाणी ने मना नहीं किया और न तभी

मुझे रोका जब मै इधर अदालत की ओर आने लगा था जब मैं अपना वक्तव्य कहने लगा। यद्यपि अन्य समय वह सदा मुझे किसी न किसी बात के कहने से रोका करती थी तथापि इस वार एक वार भी, न तो बोलने के लिये और न किसी काम करने के लिये ही उसने मुझे रोका। मैं तुम्हें बतलाता हूँ कि इसका कारण मेरी समझ में क्या आता है। यह बात जो मुझ पर पड़ी है अवश्य ही मेरे लिये भली है। और हममें से जो यह समझते हैं कि मृत्यु एक विपत्ति है, बड़ी भूल में है। मेरे पास इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। वह यह कि यदि मृत्यु एक बुराई होती तो मेरी चिरसहचरी दैवी वाणी मुझे ऐसा काम करने से अवश्य रोकती जिससे मुझे मृत्यु का सामना करना पड़ता।

यदि हम दूसरे ढंग से देखे तो हम इस बात की पूरी आशा करते हैं कि हम मृत्यु को एक भली वस्तु ही पायेंगे। क्योंकि मृत्यु की अवस्था दो में से एक ही हो सक्ती है-या तो मृत व्यक्ति कि स्थिति ही नहीं रहती और वह बिलकुल अचेतन हो जावे, और या साधारण मत के अनुसार यह अवस्था आत्मा का एक लोक से दूसरे लोक मे जाना मात्र ही है। यदि मृत्यु केवल अचेतनता ही मात्र है और गम्भीर नींद के समान है, तो यह एक आश्चर्यजनक लाभ है। क्योंकि यदि किसी आदमी से यह पूछा जाय कि उसे किसी रात ऐसी भी गाढ़ी नींद आयी थी कि जिसमें उसने स्वप्न तक न देखे, और यदि उससे यह पूछा जाय कि उसे दिन पसन्द है या वह रात, तो उस व्यक्ति की तो बात ही

क्या, स्वयं फारस का बादशाह कह देगा उसे वही रात पसन्द है। यदि मृत्यु की अवस्था यही है तो कम से कम मैं तो उसे एक लाभ ही समझता हूँ। क्योंकि तब यह मालूम पड़ता है कि 'शाश्वत' (Eternity) या 'नित्यता' एक रात से अधिक नहीं है। किन्तु यदि मृत्यु दूसरे लोक की यात्रा हो, और यदि सर्वसाधारण का विश्वास सही हो, अर्थात् उस लोक मे वे सब है जो मर चुके है, तो न्यायाधीशो! इससे बढ़ कर आनन्द की और कौन बात हो सकती है। क्या वह यात्रा किसी को अग्राह्य होगी, कि जिसके समाप्त होने पर हम यहाँ के अपने आप को न्यायाधीश कहने वालों से बचकर सच्चे जजों के अर्थात् मिनोस, रेडामन्थस, ईकस और ट्रिप्टो-लीमस आदि गन्धर्वों और अर्द्ध देवताओं के सामने जावे, जिनके बारे में लोग कहते है कि वे इस जीवन में सच्चे और न्यायशील थे? या तुम आर्फियस, म्यूसियस, हिसियड और होमर से बातचीत करने का अवकाश पाने के लिये किस वस्तु को नहीं दे सकते? यदि यह सत्य है तो मै कई बार मरने को तैयार हूँ। मुझे तो उन लोगों से मिल कर, अपना अनुभव मिलाने की बड़ी इच्छा होगी जिन्हे लोगों ने अन्याय से मार डाला है, उदाहरण के लिए पैले-मीडिस, टैलेमनका पुत्र एजक्स तथा अन्य, ऐसे ही लोग वहाँ मौजूद होंगे। मै समझता हूँ कि यह कम आनन्द की बात न होगी। सब से बढ़ कर तो मुझे इस बात की प्रसन्नता होगी कि मुझे वहाँ भी यहाँ की भाँति उन लोगों से बात चीत करने और उनकी परीक्षा करने का, और यह जाँचने का मौक़ा मिलेगा कि उनमे से कौन बुद्धिमान है

और कौन बुद्धिमान् न हो कर भी अपनेको बुद्धिमान् समझताहै। न्यायाधीशो! ट्राय के विरुद्ध सेना के सेनापति उडीसस, सिसिफस तथा अन्य अगणित लोगों से बातचीत करने का मौका पाने के लिये हम क्या न करने को तैयार हैं? उनके साथ रहना, उनसे बातचीत करना, उनको जाँचना कितना आनन्ददायक होगा? सचमुच इसके लिये लोग वहाँ (फाँसी पर नहीं टाँग दिये जाते होंगे) मार नहीं डाले जाते होंगे। क्योंकि सार्वजनिक विश्वास के अनुसार और सुखों के साथ ही साथ वहाँ के लोग अमर भी हैं।

न्यायाधीशो! तुमको भी मृत्यु का सामना साहस के साथ करना चाहिये और इस बात का विश्वास करना चाहिये कि पुण्यात्मा व्यक्ति को, न तो यहाँ और न मृत्यु के बाद ही, कोई बुराई हो सक्ती है। देवता उसके भाग्य को भुला नहीं देते। (और) जो कुछ मुझ पर आज पड़ा है वह केवल अचानक ही नहीं होगया है। मुझे विश्वास है कि मेरे लिये इस समय मरना और झंझट से छुटकारा पाना अच्छा था और यही कारण था कि जिससे दैवी वाणी ने मुझे उससे हटने को नहीं कहा। इसी कारण मैं अपने ऊपर अभिशाप लगाने वालों या मृत्युदण्डाज्ञा देने वालों से बिलकुल ही नाराज नहीं हूं। किन्तु मुझपर अभियोग लाने और मुझे दण्ड देने में उनका यह उद्देश्य नहीं था। इतने के लिये अवश्य मुझे उन्हें उलाहना देना है।

अब उनसे मुझे एक प्रार्थना करनी है और वह यह है कि जब मेरे पुत्र बड़े हो जायँ तो आप उनके पास जायँ

और यदि आपको यह मालूम पड़े कि वे भलाई या पुण्य की अपेक्षा धन या संसारी बातों की अधिक पर्वाह करते हैं तो मेरे मित्रो ! आप उन्हें उसी तरह तंग करके दण्ड दें जिस प्रकार मैं आपको तंग किया करता था। और यदि वे कुछ भी न होने पर अपने को कुछ समझें तो आप उन्हें इसके लिये उसी प्रकार फटकारें जिस प्रकार मैं आपको फटकारता था अर्थात् यदि वे उस बात की पर्वाह न करें जिसकी पर्वाह उन्हें करनी चाहिये और अपने को तुच्छ होकर भी, बड़ा लगाते हों तो आप उन्हें खूब फटकारें। आप यह करेंगे तो मैं और मेरे पुत्र आपसे अपना पावना पा जायेंगे।

किन्तु अब समय आ गया है और हम लोग यहाँ से विदा होंगे, आप जीने के लिये और मैं मरने के लिये। जीवन से मृत्यु अच्छी है, या मृत्यु से जीवन अच्छा है, यह केवल ईश्वर ही को मालूम है।

क्रीटो ।

अथवा

नागरिक के कर्त्तव्य ।

[साक्रटीज अपने कारागार में सो रहा है । क्रीटो बैठा है । प्रात-काल का समय है । साक्रटीज का जागना]

साक्रटीज—क्रीटो ! इस समय तुम क्यों आये हो ? क्या अभी बहुत सवेर नहीं है ?

क्रीटो—हाँ, अभी बहुत सवेर है ।

साक्रटीज़—क्या समय होगा ?

क्रीटो—अभी दिन हो रहा है ।

साक्रटीज—मुझे आश्चर्य है कि जेलर ने तुम्हे भीतर आने दिया ।

क्रीटो—मैं यहाँ बहुधा आता हूँ इससे वह मुझे जान गया है, फिर साक्रटीज़ ! मैंने उसका कुछ काम भी कर दिया है ।

साक्रटीज़—क्या यहाँ तुम बहुत देर से थे ?

क्रीटो—हाँ, कुछ देर से ।

साक्रटीज—तब तुम चुप क्यों बैठे रहे । तुमने मुझे आते ही क्यों नहीं जगा लिया ?

क्रीटो—साक्रटीज़, मैं स्वयं चाहता हूँ कि मैं इतना दुखी और उन्निद्रित न रहूँ । किन्तु मै यह देख कर आश्चर्य कर रहा था कि तुम किस प्रकार आनन्द से सो रहे थे । और मैंने जान बूझ कर तुम्हे नहीं जगाया; क्योंकि मैं तुम्हारे आराम मे विक्षेप डालना नहीं

चाहता था। जीवन में बहुत बार मैंने यह सोचा था कि तुम प्रसन्नचित्त आदमी हो और अब तो इस बात को देख कर कि जो विपत्ति तुम पर पड़ी है उसे तुम प्रसन्नता के साथ सहन कर रहे हो, मेरा यह विश्वास अत्यन्त दृढ़ हो गया है।

साक्रटीज़—क्रीटो! इस उमर में मैं मरने के लिये दुःखी होऊँ ऐसा होना मेरे लिये असम्भव है।

क्रीटो—दूसरे लोग भी इस अवस्था में ऐसी ही विपत्तियों द्वारा दब जाया करते हैं, किन्तु साक्रटीज़, उनकी अवस्था उन्हें अपने भाग्य के ऊपर रोने से नहीं बचा सकी।

साक्रटीज़—हाँ, ऐसा होता है! किन्तु यह तो बतलाओ आज इस समय तुम यहाँ क्यों आये हो?

क्रीटो—साक्रटीज़! मैं एक बड़ी बुरी खबर लेकर आया हूँ, ऐसा मालूम पड़ता है कि तुम्हें वह दुःखदायी नहीं है, किन्तु तुम्हारे मित्रों को वह बड़ी बुरी और दुःखदायी दोनों है, और इतनी दुःखदायी किसी को भी नहीं है जितनी कि मुझे है।

साक्रटीज़—क्रीटो, उसका अन्त अच्छा ही हो। यदि देवताओं की इच्छा यही करने की है तो ऐसा ही हो। किन्तु मेरा अनुमान है कि आज वह पोत यहां नहीं आ सका।

क्रीटो—तुम ऐसा क्यों अनुमान करते हो?

साक्रटीज़—मैं तुमको बतलाता हूँ। मुझे उसके दूसरे दिन मरना है जिस दिन जहाज़ आवे। ऐसा ही है न?

क्रीटो—अफसर कहते तो ऐसा ही है।

साक्रटीज—तब मेरा अनुमान है कि वह आज न आ कर कल आवैगा। आज रात में थोड़ी देर हुई मैंने एक स्वप्न देखा था। उसीसे मैंने यह अनुमान किया। तुम ने मुझे न जगाया सो अच्छा ही किया।

क्रीटो—और यह स्वप्न क्या था?

साक्रटीज—स्वप्न में मुझे एक सुन्दर और भव्य स्त्री दिखलाई पड़ी, वह सफेद कपड़े पहिने थी, और मेरे पास आ कर मुझे पुकार कर कहने लगी, अरे साक्रटीज़!

'दिवस तीसरे तू पहुँचैगा
फिथया लोक जो है अभिराम'

क्रीटो—यह कैसा आश्चर्यजनक स्वप्न है!

साक्रटीज—किन्तु क्रीटो इसका अर्थ, कम से कम मुझे तो साफ दीख रहा है।

क्रीटो—हाँ, सचमुच इसका अर्थ बहुत साफ़ मालूम पड़ता है। किन्तु मेरे भले साक्रटीज़, मैं तुमसे अन्तिम बार प्रार्थना करता हूँ कि तुम मेरी बात को सुनो और अपने को बचा लो। मुझे तुम्हारी मृत्यु कई एक विपत्तियों से बढ़कर होगी। मै केवल एक बहुमूल्य मित्र ही न खो दूँगा जिस ऐसा मुझे फिर कभी न मिलैगा, किन्तु बहुत से आदमी जो हमारे और तुम्हारे सम्बन्ध से परिचित नहीं हैं, यह समझेंगे कि मैं तुम्हें बचा सक्ता था, किन्तु मैंने तुम्हारे लिये कुछ रुपया खर्च करना गवारा न किया और मनुष्य के चरित्र में इससे अधिक और कौन लज्जाजनक बात हो सक्ती है कि वह अपने मित्र की अपेक्षा धन की अधिक पर्वाह करे? संसार में कोई

भी इस बात का विश्वास न करेगा कि हम लोग तुम्हें बचाने के लिये उत्सुक थे, किन्तु स्वयं तुम्हींने भागना पसन्द नहीं किया।

साक्रटीज—किन्तु प्यारे क्रीटो! हम संसार के लोगों की सम्मति की इतनी पर्वाह क्यों करें? बुद्धिमान् व्यक्ति, जिसकी सम्मति का कुछ मूल्य हो सक्ता है, यही समझेगा कि हमने वैसा ही किया, जैसा हमें वास्तव में करना उचित था।

क्रीटो—किन्तु साक्रटीज़, तुम देख रहे हो कि संसार की सम्मति की भी पर्वाह करना आवश्यक है। तुम्हारा दृष्टान्त यह प्रमाणित करता है कि यदि एक व्यक्ति पर सर्वसाधारण के सामने मिथ्या कलङ्क लगाया जाय, तो सर्वसाधारण उस व्यक्ति का कुछ ही नहीं किन्तु सब से बड़ा अपकार कर सक्ते हैं।।

साक्रटीज—क्रीटो, मेरी राय तो यह है कि अच्छा होता यदि सर्वसाधारण में मनुष्य को सबसे बड़ी हानि पहुँचाने की शक्ति होती। क्योंकि तब यदि सर्वसाधारण चाहते तो उसे सब से बड़ा लाभ भी पहुँचा सक्ते। किन्तु असल बात तो यह है कि सर्वसाधारण में न तो हानि ही पहुँचाने की शक्ति है और न लाभ ही पहुँचाने की। वे किसी व्यक्ति को न तो मूर्ख ही बना सक्ते हैं और न बुद्धिमान् ही। वे केवल बेसमझे बूझे अचानक काम कर बैठा करते हैं।

क्रीटो—अच्छा, यही सही! किन्तु साक्रटीज़ यह बतलाओ कि कहीं तुम मेरी या अपने अन्य मित्रों की चिन्ता तो नहीं कर रहे कि यदि भागते समय पकड़ लिये गये

तो जासूस हमें न फँसादे जिसके कारण हमें खर्च सहना पड़े अथवा यह हो सक्ता है सब जायदाद से हाथ धोना पड़े या और कोई दण्ड साथ ही साथ सहना पड़े ? यदि तुम्हारे हृदय में कोई ऐसा भय हो तो उसे निकाल दो। क्योंकि हमें उनका सामना करना ही पड़ैगा और यदि तुम्हारे बचाने मे आवश्यकता पड़े तो हम इनसे भी बड़ी विपत्तियों का सामना करने को तैयार हैं। इस कारण मैं तुमसे अनुरोध करता हूँ कि तुम मेरी बात मानने से इन्कार न करो।

साक्रटीज़—क्रीटो, मैं इस सम्बन्ध में तथा और भी दूसरी बातों के बारे में बड़ा चिन्तित हूँ।

क्रीटो—तो इसके लिये फिक्र मत करो। ऐसे आदमियों की कमी नहीं है कि जो थोड़े से रुपये पाने पर तुम्हें कारागार से सही सलामत बाहर ले जाने को तैयार हैं। और फिर, तुम जानते हो कि, ये सूचना देनेवाले बड़े सस्ते में चुप किये जा सक्ते हैं और इस कारण इन पर अधिक रुपये खर्च करने की आवश्यकता नहीं है। मेरा धन तुम्हारी सेवा के लिये अर्पित है, और मैं समझता हूँ कि वह इस काम के लिये यथेष्ट है। और यदि तुम मेरा धन खर्च करने में हिचकते हो, तो तुम जानते हो कि एथेंस मे ऐसे बहुत से विदेशी हैं जो तुम्हारे लिये धन खर्च करने को तैयार हैं। और उनमे से थीबिस का सिमियस तो इसी काम के लिये यथेष्ट धन लाया है। तथा सीबिस तथा और भी कितने ही लोग तैयार है। इसीलिये मैं तुमसे कहता हूँ कि इस भय के कारण तुम भागने से मत हिचको और

यह बात जो तुमने न्यायालय में कही थी कि यदि तुम एथेंस से बाहर जाओगे तो तुम 'किं कर्त्तव्य विमूढ़' हो जाओगे, तुम्हें भागने से न रोके, क्योंकि ऐसी बहुत सी जगह हैं जहाँ तुम जा सक्ते हो और जहाँ लोग तुम्हारी खातिरदारी करेंगे। यदि तुम थिसली जाना पसन्द करो तो वहाँ भी मेरे मित्र हैं जो तुम्हारा आदर करेंगे और थिसली के लोगों की खिझलाहट से तुम्हें बचाते रहेंगे।

और इसके सिवाय साक्रटीज़! यदि तुम अपने जीवन को बचाने की शक्ति रखते हुए भी न बचाओ, तो तुम बड़ा पाप करोगे। तुम केवल अपने शत्रुओं की मनोकामना पूरी कर रहे हो, यह ठीक वही खेल है जो तुम्हारे नाश चाहने वाले खेलना चाहते हैं। और अधिक क्या कहूँ मुझे तो यह मालूम पड़ता है कि तुम अपने पुत्रों को भी त्याग रहे हो। यद्यपि तुम (भागने से) उन्हें पढ़ा लिखा सक्ते हो; तथापि (न भागने से) तुम उनको उनके भाग्य पर छोड़ देते हो। बहुत सम्भव है कि उनकी वह दशा हो जो अनाथों की दशा हुआ करती है? किन्तु यदि तुम्हारी यह इच्छा नहीं है कि तुम अपने बच्चों को पालने और पढ़ाने की तकलीफ़ गवारा करो, तो तुम्हे बच्चे ही न पैदा करने चाहिये। मेरी समझ में तो तुम सरल रास्ते जाना पसन्द करते हो और वीरों और बुद्धिमानों के रास्ते से जाना नापसन्द करते हो, जैसा कि तुम्हें करना चाहिये? क्योंकि तुम जीवन भर पुण्य के मूल्य की चर्चा करते रहे हो। मैं तो तुम्हारे लिये, और तुम्हारे मित्रों तथा स्वयं अपने लिये लज्जित

हूँ। लोग यही समझेंगे कि जो कुछ आदि से अन्त तक हुआ है—अर्थात् तुम्हारा न्यायालय में जाकर अभियोग में उपस्थित होना जब तुम्हारे लिये यह कुछ भी आवश्यक न था, अभियोग का इस प्रकार चलाया जाना, और सब से अन्त की यह मूर्खता,—सब हमारी (तुम्हारे मित्रों की) कादरता के कारण हुआ है। ऐसा समझा जायगा कि कादरता के कारण हम भय के सामने से खिसक गये, क्योंकि हमने तुम्हें नहीं बचाया, और तुम तब भी नहीं बचे जब तुम्हारा बचना सम्भव था, इसका कारण लोग यही लगावेंगे कि हमने तुम्हें कुछ भी सहायता नहीं दी। साक्रटीज़ सावधानी से काम करो, वरन कहीं ये बात तुम्हारी या हमारी बुराई ही नहीं किन्तु अनादर का कारण न हो जाय। तब सोचो, या यों समझो कि सोचने का समय निकल गया है। हमको कमर कसना चाहिये। और केवल एक ही उपाय सम्भव है। आज ही रात को सब कुछ कर डालना चाहिये। यदि हम और देर करेंगे तो सब चौपट हो जायगा साक्रटीज़, मैं तुमसे विनय करता हूँ कि तुम मेरी बात को न टालो।

साक्रटीज़—मेरे प्यारे क्रीटो, यदि मुझे बचाने की तुम्हारी उत्सुकता उचित हो तो वह बहुमूल्य है। किन्तु यदि वह अनुचित हो, तो उसका बड़ा होना उसे और भी अधिक भयङ्कर बना देता है। हमें यह सोचना है कि जो तुम कहते हो वह हमें करना चाहिये या नहीं क्योंकि मैं अब भी वही हूँ अर्थात् मेरी प्रकृति पहिले भी यही थी कि मैं किसी की बात नहीं सुनता और उसी बात को सत्य मानता हूँ जो विचार करने पर बुद्धि में आ जाय। यह कोई कारण

नहीं है कि मैं अपने पहिले विचारों को छोड़ दूँ चूँकि मुझ पर यह विपत्ति आ पड़ी है। वे मुझे सदा की तरह अब भी सत्य मालूम पड़ते हैं और अब भी मैं उन्हें आदर की दृष्टि से देखता हूं जिन्हें मैं पहिले आदरणीय समझता था और यदि हमारे पास इससे अच्छा और कोई उपाय इस के स्थान पूर्ति के लिये नहीं है, तो मैं कदापि तुम्हारी बात को न मानूँगा चाहे जनसमुदाय मुझे इस तरह नये नये डर दिखलावें जिस प्रकार जूजू या हौवा लड़कों को डर दिखलाते हैं, और चाहे मुझे नये नये जुर्माने, कैद या मृत्यु का दण्ड देने का भय दिखलावें। तब इस प्रश्न पर किस प्रकार उचित रीति से विचार हो सक्ता है? क्या हम पहिले मनुष्यों की सम्मति सम्बन्धी बात पर पुनर्विचार करें, और यह प्रश्न करें कि हमने जो पहिले यह सिद्धान्त स्थिर किया था कि हमको चाहिये कि हम थोड़ी ही सम्मतियों पर ध्यान दें और दूसरों पर ध्यान न दें, यह ठीक है या नहीं? इस अभियोग के चलने, और दण्डाज्ञा सुनने के पहिले हम लोग जो यह बात कहा करते थे वह क्या ठीक न थी और क्या अब यह मालूम होगया है कि हम केवल तर्क के लिये उसे कहते थे, किन्तु वास्तव में वह खेल और बकवाद मात्र थी। क्रीटो, मैं तुम्हारी सहायता से इस बात को हल करने के लिये, और यह जानने के लिये कि मेरी वर्तमान स्थिति का इस पर कुछ प्रभाव तो नहीं पड़ा, बड़ा उत्सुक हूँ और मैं इस बात की भी खोज करना चाहता हूँ कि हमें इस विषय को स्थगित कर देना चाहिये, या इसको मानना चाहिये। मुझे पूरा पूरा ख्याल है कि हममें से जिन लोगों ने गम्भीरता के साथ इस

विषय पर विचार किया था, वे सब सदा यही कहा करते थे जो अभी मैंने कहा है अर्थात् हमें केवल उन्हीं सम्मतियों पर ध्यान देना चाहिये जिन्हें लोग विचार पूर्वक प्रकाशित करते हैं और दूसरों पर नहीं। क्रीटो, तुम्हीं मुझे बतलाओ कि तुम्हारी समझ में वे ठीक थीं या नहीं? तुम इस विषय पर दत्तचित्त हो विचार कर सके हो, क्योंकि तुम्हें कल मरना नहीं पड़ेगा और इस कारण से तुम्हारे विचार में बाधा नहीं पड़ेगी। तो फिर सोचो। क्या तुम यह उचित नहीं समझते कि मनुष्यों की सब सम्मतियों की हमें पर्वाह नहीं करनी चाहिये, किन्तु केवल कुछ सम्मतियों की। तथा केवल कुछ मनुष्यों की सम्मति की पर्वाह करनी चाहिये न कि सब मनुष्यों की सम्मति की। तुम क्या सोचते हो? क्या यह सच नहीं है?

क्रीटो—यह ठीक है।

साक्रटीज़—और हमको केवल भली सम्मतियों का आदर करना चाहिये और सारहीन सम्मतियों का आदर न करना चाहिये।

क्रीटो—हाँ।

साक्रटीज—किन्तु अच्छी सम्मतियाँ वे हैं जो बुद्धिमानों की हैं और सारहीन वे हैं जो मूर्खों की हैं?

क्रीटो—बेशक।

साक्रटीज—और हम इस बारे में क्या कहा करते थे? उस व्यक्ति को जो किसी शिक्षा में दत्तचित्त है, केवल एक शिक्षक या वैद्य की सम्मति ही ग्रहण करनी चाहिये या उसे सब लोगों की सम्मति, बड़ाई या बुराई का ध्यान रखना चाहिये?

क्रीटो—वह केवल एक व्यक्ति (शिक्षक या वैद्य) की सम्मति पर ध्यान देता है।

साक्रटीज़—तो उसे इसी एक व्यक्ति की की हुई बुराई से डरना और इसी की की हुई बड़ाई से प्रसन्न होना चाहिये, न कि सब व्यक्तियों की बुराई या बड़ाई से भय खाना चाहिये ?

क्रीटो—ठीक है।

साक्रटीज़—उसे अपने गुरु की आज्ञानुसार कसरत करना, खाना, पीना चाहिये, या दूसरों की राय के अनुसार?

क्रीटो—गुरु की आज्ञानुसार।

साक्रटीज—अच्छा। तो यदि वह इस एक व्यक्ति की की हुई बड़ाई या बुराई का ध्यान न कर के, बहुत से व्यक्तियों की बड़ाई पर, जो इस बारे मे कुछ नहीं समझते, ध्यान दे तो क्या वह इसके लिये दुःख न भोगेगा ?

क्रीटो—बेशक, उसे इस भूल का फल मिलेगा।

साक्रटीज—और उसे क्योंकर फल मिलैगा ? वह फल कैसा और कहाँ होगा ?

क्रीटो—निस्सन्देह उसका शरीर इसका फल भोगेगा। क्योंकि वही निकम्मा हो जायगा ?

साक्रटीज़—तुम ठीक कहते हो। क्रीटो, क्या सब जगह यह नियम लागू नहीं है ? और इस कारण यदि सत्य और असत्य, आदर और निरादर, बुराई और भलाई का प्रश्न हो, जिस पर हम अब विचार कर रहे हैं। क्या हम बहुतसे लोगों की सम्मतियों की पर्वाह करें और उससे डरें, या हम उस एक व्यक्ति की सम्मति की पर्वाह करें जो सब

बात समझता हो (यदि ऐसा व्यक्ति मिल जाय) और या केवल उसीके सन्मुख अधिक लज्जा और भय पावे ? क्योंकि यदि हम उसकी बात को न मानेंगे तो हम शरीर के उस अङ्ग या अवयव को बिगाड़ या नष्ट कर देंगे जो उचित रीति से बढ़ता है और अनुचितरूप से निकम्मा हो जाता है। या यह बात असत्य है ?

क्रीटो—नहीं। साक्रटीज, मैं तुमसे सहमत हूँ।

साक्रटीज—अब यदि उन लोगों की बातें मानने से (जो इस विषय में कुछ नहीं समझते) हमारा वह अङ्ग बिगड़ जाय जो स्वास्थ्य से उन्नति करता और रोग से निकम्मा हो जाता है, तो क्या ऐसी दशा में जीवन धारण करने योग्य है ? वही अवयव शरीर है। क्या ऐसा वास्तव में नहीं है।

क्रीटो—हाँ।

साक्रटीज—क्या जीवन धारण करने योग्य है यदि शरीर निकम्मा हो और बुरी दशा में हो ?

क्रीटो—नहीं, कदापि नहीं।

साक्रटीज—तो क्या जीवन धारण करने योग्य है यदि हमारा वह भाग जो भलाई से सुधरता और बुराई से निकम्मा होता है, बिगड़ गया हो ? अथवा हम उस भाग को, वह चाहे कुछ ही क्यों न हो, जिसका सम्बन्ध भलाई और बुराई से है, शरीर के और अङ्गों की अपेक्षा कम महत्त्व का समझते हैं ?

क्रीटो—नहीं, कदापि नहीं ?

साक्रटीज—तो क्या हम उसे अधिक महत्त्व का समझें ?

क्रीटो—अवश्य, वह कहीं अधिक मूल्यवान् है।

साक्रटीज—तब मेरे प्यारे मित्र, हमें यह न चाहिये कि बहुत लोगों की सम्मति पर जायँ या उस पर ध्यान दें। हमें उस एक व्यक्ति की सम्मति का, जो उचित और अनुचित से परिचित है, ध्यान रखना चाहिये और इस बात का कि स्वयं सत्य हमारे विषय में क्या कहेगा। अतएव यदि तुम इस प्रकार इस विषय को आरम्भ करो कि औचित्य या आदर तथा इनके विरुद्ध विषयों में हम जनसमुदाय की सम्मति पर ध्यान दिया करें, तो तुम्हारी बड़ी भूल होगी। किन्तु, यह कहा जा सक्ता है कि जनसमुदाय हमारे प्राण हरण कर सक्ता है।

क्रीटो—हाँ, यह बिल्कुल सत्य है। हाँ, साक्रटीज़ यह भले ही कहा जा सक्ता है।

साक्रटीज—ठीक है। किन्तु मेरे प्यारे मित्र, मेरी मति के अनुसार तो यह मालूम पड़ता है कि जो नतीजा हमने पहिले निकाला था, वही अब भी वैसा ही है, जैसा कि पहिले था। अब यह सोचो कि हम अब भी यह मानते हैं कि नहीं कि हमें सब से अधिक मूल्य, जीने पर नहीं, किन्तु भलाई के साथ जीने पर लगाना चाहिये?

क्रीटो—हाँ, हम मानते हैं।

साक्रटीज—और भलाई से जीना, सम्मान के साथ जीना, और उचित रीति से जीना, एक ही बात है। क्या हम इसे मानते हैं?

क्रीटो—मानते हैं।

साक्रटीज—तो इन बातों को मानते हुए, हमें इस बात पर विचार करना है कि एथेंसवासियों की आज्ञा के बिना मुझे क़ैदख़ाने से भाग जाना उचित है या नहीं। यदि हमारे

विचार से यह मालूम पड़े कि भागना उचित है, तो हम भागने का उद्योग करेंगे, अन्यथा, इस बात की ज़िक्र ही छोड़देंगे। मुझे भय है कि तुम जो कुछ खर्च, मेरी कीर्ति और मेरे लड़कों के पालन के सम्बन्ध में कह रहे हो वह केवल उन बहुत से लोगों के विचार हैं, जो लोगों को बड़ी लापर्वाही से मार डालते हैं, और यदि उनके बस में होता तो उसी लापर्वाही से उन्हें फिर जिला भी देते। किन्तु विचार, जो हमारा पथ-प्रदर्शक है, बतलाता है कि हमें इस बात के सिवाय और किसी भी बात को नहीं सोचना चाहिए कि यदि हम उन लोगों को धन और धन्यवाद दें जो हमारे भागने में सहायक हो और हम स्वयं भागने में भाग लें, तो क्या यह उचित होगा? या यदि हम यह करें तो क्या यह अनुचित न होगा? और यदि हमें यह समझ पड़े कि भागना अनुचित है, तो हमें मृत्यु या और किसी भी बुराई की पर्वाह न करनी चाहिये यदि वह हमारे ऊपर यहाँ चुपचाप बैठने से आवे। किन्तु केवल इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि हमसे अनुचित काम न हो जाय।

क्रीटो—मैं समझता हूँ कि साक्रटीज़, तुम यथार्थ कहते हो, किन्तु हम क्या करें?

साक्रटीज—अब हम दोनों इस बात पर विचार करें और यदि महाशय, आप मेरी किसी भी बात का खण्डन कर सकें, तो करें, मैं उसे मान लूँगा। किन्तु यदि तुम मेरा खण्डन न कर सके, तो फिर आगे इसे मत कहना कि मैं एथेंसवासियों की सम्मति के बिना ही यहाँ से भाग जाऊँ। मैं तुम्हारी सम्मति के अनुसार काम करने

को उत्सुक हूँ। मैं यह नही चाहता कि तुम समझ लो कि मैं भूल में हूँ। किन्तु यह बतलाओ कि जिस सिद्धान्त को मान कर हम आगे बढ़ते हैं, वह तुम मानते हो या नही और मेरे प्रश्नों का उत्तर अपने भरसक देते जाओ।

क्रीटो—मैं भरसक उद्योग करूँगा।

साक्रटीज—क्या हमें जान बूझ कर कभी भी बुराई न करनी चाहिये, या हम बाज़ समय बुराई कर सक्ते हैं और बाज़ समय नहीं कर सक्ते? या जैसा कि हम पहिले कई बार स्वीकार कर चुके है कि क्या बुराई करना किसी भी समय में भला या आदरजनक नही है? क्या हम पुराने सिद्धान्त इन थोड़े दिनों में भूल गये है? क्रीटो, यद्यपि हम वृद्ध पुरुप थे, तथापि जब हम गम्भीरता के साथ बातचीत करते थे तब क्या यही नही मालूम देता था कि हम केवल बच्चे ही हैं? या जो हम विश्वासपूर्वक कहते थे वह सत्य नही था। चाहे संसार उसे माने या न माने? क्या बुराई करना, बुराई करने वाले के लिये लज्जाजनक और अनुचित नहीं है, चाहे सत्य के लिये हमें मृत्यु से भारी या मृत्यु से हलका दण्ड भोगना पड़े? क्या हम अब भी इसे मानते हैं?

क्रीटो—हाँ, मानते हैं?

साक्रटीज—तब हमें किसी भी हालत में कुछ भी बुराई न करनी चाहिये?

क्रीटो—कदापि नही।

साक्रटीज—हमें क्या केवल बुराई न करनी चाहिये अथवा क्या हम बुराई के बदले बुराई कर सक्ते हैं, जैसा कि संसार कहता है?

क्रीटो—हर्गिज़ नहीं।

साक्रटीज़—अच्छा तो क्रीटो, हमें क्या किसी को हानि पहुँचानी चाहिये ?

क्रीटो—साक्रटीज़, मेरी समझ में ऐसा न करना चाहिये।

साक्रटीज—और क्या यह उचित है जैसा कि संसार समझता है, कि हानि के बदले हानि पहुँचाना चाहिये, या यह अनुचित है ?

क्रीटो—यह कदापि उचित नहीं है।

साक्रटीज—क्योंकि एक व्यक्ति के साथ बुराई करना और उसे हानि पहुँचाना एक ही बात है। क्या इनमें कोई भेद है ?

क्रीटो—नहीं, कोई भेद नहीं है।

साक्रटीज—तो हमें किसी भी मनुष्य के साथ बुराई के बदले बुराई न करनी चाहिये, और हानि के बदले हानि न पहुँचानी चाहिये, हमने उससे चाहे जितना दुःख क्यों न पाया हो ? और क्रीटो, इसके मानने में अपने तात्पर्य से अधिक न मानना। क्योंकि मुझे मालूम है कि इस सिद्धान्त को मानने वालों की संख्या सदा बहुत कम रही है और भविष्य मे भी बहुत कम रहेगी। और वे जो इसे मानते हैं और वे जो इसे नहीं मानते, दोनों एक ही तर्क को ले कर विवाद नहीं कर सके। वे एक दूसरे के विश्वास को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। इस कारण इस पर खूब सावधानी से विचार करो कि तुम मेरे सिद्धान्त को मानते हो या नहीं ? तो अब क्या हम इस सिद्धान्त को मान कर आगे बढ़ें कि न तो किसी के साथ बुराई ही करना अच्छा है और न बुराई के बदले बुराई

ही करना उचित है, या किसी भी व्यक्ति से बुराई का बदला लेना ही अच्छा है ? या तुम मेरे सिद्धान्त को नहीं मानते और उसके विरुद्ध रहना चाहते हो ? मैं स्वयं इस सिद्धान्त को बहुत दिनों से मानता आया हूँ और अब भी इस सिद्धान्त में मेरा विश्वास है। किन्तु यदि किसी भी प्रकार तुम विरुद्ध हो तो समझाओ कि किस प्रकार तुम सहमत नहीं हो। यदि तुम मेरे साथ सहमत हो तो मेरे अगले तर्क को सुनो।

क्रीटो—हाँ, मैं तुमसे सहमत हूँ। आगे चलो।

साक्रटीज—तो मेरा दूसरा तर्क या दूसरा प्रश्न यह होगा कि मनुष्य को अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहना चाहिये या नहीं या वह उससे हट भी सक्ता है ?

क्रीटो—उसे अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहना चाहिये।

साक्रटीज—तब सोचो। यदि मैं राज्य की सम्मति के विना भाग जाऊँ तो मैं उन्हें सबसे अधिक हानि पहुँचाऊँगा या नहीं, जिनको मुझे ज़रा भी हानि न पहुँचानी चाहिये ? मैं अपने प्रतिज्ञा-बन्धन में बद्ध रहूँगा या नहीं ?

क्रीटो—साक्रटीज़, मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर नहीं दे सक्ता। मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा।

साक्रटीज—इस पर इस रीति से विचार करो। मान लो जिस समय मैं भागने की तैयारी कर रहा हूँ (क्योंकि मेरे यहाँ से बचने के लिये यही शब्द उपयुक्त है) उस समय (मूर्त्तिमान्) नियम और राष्ट्रतन्त्र आ कर मेरे सामने कहने लगें—'साक्रटीज़, बतलाओ तुम्हारी इच्छा क्या करने की है ? भागने से, इसके सिवाय तुम्हारा और क्या तात्पर्य हो सक्ता है कि तुम हमारा (नियम और

नगर का) नाश करो। क्या तुम समझते हो कि कोई भी राज्य, जिसमें कानून की आज्ञा का पालन नहीं किया जाता और जिसमें साधारण व्यक्ति उसकी आज्ञा का उल्लङ्घन करते हैं, जीवित रह सक्ता है और नष्ट न होगा ?' क्रीटो, हम इस प्रश्न का उत्तर क्या देंगे। सब कोई और विशेष कर वक्ता लोग, न्याय के बचाव में बहुत कुछ कह सक्ते हैं जो अपराधियों के दण्ड को सर्वोच्च रखता है। तब क्या मैं यह कहूँगा कि 'राज्य ने मुझे हानि पहुँचायी है, उसने मेरा विचार अन्यायपूर्वक किया है ?'

क्रीटो—अवश्य हम यही कहेंगे।

साक्रटीज़—और मान लो कि 'न्याय' यह उत्तर देने लगे—'क्या हमारी तुम्हारी यही प्रतिज्ञा थी (क़रार था)? या यह कि तुम उस आज्ञा को मान लोगे जो राज्य तुम्हें सुनावैगा ?' और यदि हम उसके वचन पर आश्चर्य करने लगें, तो कदाचित् वह कहैगा कि 'साक्रटीज़, हमारे शब्दों पर आश्चर्य मत करो, वरन् हमारे प्रश्न का उत्तर दो। तुम स्वयं प्रश्न करने और उनके उत्तर देने के आदी हो। तुम्हें हमारे और नगर के विरुद्ध कौन सी शिकायत है, जो तुम हमारा नाश करना चाहते हो ? क्या हम तुम्हारे जन्मदाता नहीं हैं ? हमारे ही द्वारा तुम्हारे पिता ने तुम्हारी माता को पाया और तुम्हें पैदा किया। हमें बत-लाओ कि क्या तुम्हें विवाह के क़ानून में कोई बात शिका-यत करने के योग्य मालूम पड़ती है ?' तब मैं कहूँगा कि 'इनके बारे में मुझे कुछ शिकायत नहीं है।' तब वे कहेंगे—'क्या तुम्हें उन नियमों के विरुद्ध कुछ कहना है जिनके द्वारा बच्चों को शिक्षा दी जाती है और उनका पालन

किया जाता है, और जिनके अनुसार स्वयं तुमने शिक्षा पायी है, क्या हमने तुम्हारे पिता से तुम्हें संगीत और मल्ल-विद्या की शिक्षा दिलवा कर अच्छा नहीं किया ?' मैं कहूँगा, 'हाँ तुमने अच्छा किया' तब वे कहेंगे कि 'अच्छा, जब हमारे ही द्वारा तुम्हारा जन्म हुआ, हमारे ही द्वारा तुम्हारा पालन पोषण हुआ, हमारे ही द्वारा तुमने शिक्षा पायी, तब पहिले यह बतलाओ कि तुम इस बात से कैसे इन्कार कर सके हो कि तुम हमारे पुत्र और दास नहीं हो, जैसे कि तुम्हारे पूर्वपुरुष थे ? और यदि तुम समझते हो कि तुम हमारे दास और पुत्र हो तो फिर तुम्हारे अधिकार हमारे अधिकारों के बराबर कैसे हो सके है ? क्या तुम समझते हो कि तुम्हें हमारे विरुद्ध बदले में कुछ करने का ज़रा भी अधिकार है, यदि हम तुम्हारे विरुद्ध कुछ करें ? तुम्हारे और तुम्हारे पिता के एक ही स्वत्व नहीं हो सके और यदि तुम दास होते तो तुम्हारे और तुम्हारे स्वामी के स्वत्वों मे भी भेद होता। यदि वे तुम्हारे साथ बुरा बर्ताव करें तो तुम्हें अधिकार नहीं है कि तुम उनके विरुद्ध कुछ करो, यदि वे तुम्हें झिड़कें तो तुम्हारा अधिकार उन्हें उत्तर देने का नहीं है, यदि वे तुम्हें मारें तो तुम उन्हें पलटे में मार नहीं सके तथा और किसी प्रकार भी तुम उन्हें हानि के बदले हानि नहीं पहुँचा सके। क्या तुम समझते हो कि तुम्हें अपने देश और क़ानून के विरुद्ध खड़े होने का अधिकार है ? यदि हम तुम्हें नष्ट करने का उद्योग करें, क्योंकि हम ऐसा करना कल्याणकर समझते हैं, तो क्या तुम, जो सत्य और पुण्य की इतनी डींग हाँकते हो, अपने देश और उसके क़ानून को नष्ट करने का उद्योग

करोगे और कहोगे कि ऐसा करना नियम सङ्गत है? अथवा तुम इतने अधिक बुद्धिमान् होगये हो कि तुम इस बात को नहीं देख सके कि तुम्हारा देश, तुम्हारे माता पिता तथा तुम्हारे पूर्वजों से कहीं अधिक अच्छा, अधिक आदरणीय, कहीं अधिक पवित्र और कहीं अधिक पावन है और यह कि सारे देवता और समझदार आदमी उसको कहीं अधिक पूज्य समझते हैं। तथा यह कि तुम्हारा यह परम कर्तव्य है कि तुम उसका आदर करो, उसकी आज्ञा मानो और उसके सामने अपने पिता की भी अपेक्षा अधिक विनीत भाव से जाओ जब वह तुमसे अप्रसन्न है। तुम या तो उसकी आज्ञा पालन करो और या उससे क्षमा प्रार्थना करो। यह तुम्हारा कर्तव्य है कि यदि वह तुम्हें कारागार भेजै अथवा तुम्हें कोड़े लगवावे तो उसे तुम चुपचाप सहते जाओ, अथवा यदि वह तुम्हें युद्ध में लड़ने या घायल होने के लिये भेजै तो चुपचाप उनकी आज्ञा का पालन करो। तुमको न तो हताश होना चाहिये, न हटना चाहिये और न भागना चाहिये। लड़ाई में, न्यायालय में और प्रत्येक जगह तुम्हें या तो अपने देश या नगर की आज्ञा का पालन करना चाहिये और या उन्हें इस बात को समझा देना चाहिये कि उनकी आज्ञा न्यायसङ्गत नहीं है। किन्तु अपने माता पिता के विरुद्ध खड़े होना ईश्वरी नियम के विरुद्ध है तथा अपने देश के विरुद्ध खड़ा होना तो और भी अधिक बुरा है। क्रीटो, हम इसका क्या उत्तर देंगे? क्या हम कहेंगे कि नियम सच कहते हैं?

क्रीटो—मैं समझता हूँ वे यथार्थ ही कहते हैं।

साक्रटीज़—तब कदाचित् वे फिर कहेंगे कि 'साक्रटीज़,

फिर सोचो, यदि हमारा यह कहना सत्य है कि अपने भागने के उद्योग करने से तुम हमें नष्ट करने का उद्योग कर रहे हो तो हमने तुम्हें संसार में जन्म दिया, हमने तुम्हें पाला, हमने तुम्हें शिक्षा दी, हमने तुम्हें तथा प्रत्येक नागरिक को, अपने भरसक प्रत्येक अच्छी वस्तु का हिस्सा दिया, तब भी हम इस बात की घोषणा करते आये हैं कि जो व्यक्ति हमसे (क़ानून से) या एथेंस से असन्तुष्ट हो वह अपना सामान ले कर जहाँ चाहे वहाँ चला जाय। हम यह अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को देते हैं, जो इसे पसन्द करता है और जब वह बालिग़ हो जाता है और जब वह इस नगर के शासन को और हमें समझने लगता है। हममें से कोई भी उस व्यक्ति को, जो इस नगर से या हमसे अप्रसन्न है, कहीं जाने को नहीं रोकता, चाहे वह किसी एथेंस के उपनिवेश को जाय या किसी दूसरे देश को जाय। किन्तु हम कहते हैं कि तुम सब लोग जो यहाँ रहते हो, और जो इस नगर की शासनप्रणाली और न्यायप्रणाली को देखते हो, केवल यहाँ रहने ही भर से अपने को इस प्रतिज्ञा में बद्ध कर लेते हो कि तुम हमारी आज्ञा को मानोगे। और हम यह कहते हैं कि जो हमारी आज्ञा भङ्ग करता है वह तिगुना दोष करता है। वह हमारी—अपने जन्मदाता की आज्ञा भंग करता है, वह हमारी—अपने पालने वाले की आज्ञा भंग करता है और वह हमें बिना यह समझाये कि हम भूल में हैं, पहिले हमारी आज्ञा मानने की प्रतिज्ञा करके भी, हमारी आज्ञा का उल्लङ्घन करता है। तो भी हम उससे कड़ाई के साथ आज्ञा पालन करने को नहीं कहते। हम उसे स्वयं दण्ड चुनने को कहते हैं। हमने उसे इस

बात का समय दिया कि या तो वह हमें समझा दे कि हम भूल में हैं और या हमारी आज्ञा का पालन करे, किन्तु वह इनमें से एक भी नहीं करता।

'साक्रटीज़, यदि तुम अपनी इच्छा पूरी करोगे, तो और एथेंसवासियों की अपेक्षा तुम अपने को इन अभिशापों का कहीं अधिक भागी बनाओगे, और यदि मैं पूछूंगा कि यह क्यों, तब वे कहेंगे—और उचित ही कहेंगे—कि मैंने अपने को और एथेंसवासियों की अपेक्षा उनके साथ कहीं अधिक प्रतिज्ञाबद्ध कर लिया है। वे कहेंगे—'साक्रटीज़, हमारे पास इस बात का यथेष्ट प्रमाण है कि तुम हमसे और हमारे नगर से सन्तुष्ट थे। यदि तुम अन्य एथेंसवासियों की अपेक्षा हमसे और नगर से अधिक सन्तुष्ट न होते, तो तुम हमारे नगर में अन्य एथेंसवासियों की अपेक्षा कभी भी अधिक न रहते। तुम एथेंस से बाहर एक बार इस्मियन गेम्स को छोड़ कर और कभी तमाशा देखने तक नहीं गये, तथा लड़ाई के समय को छोड़ कर तुम और कहीं भी नहीं गये। तुमने दूसरे लोगों की तरह कभी भी यात्रा नहीं की। तुममें दूसरे नगर या दूसरे क़ानून देखने की तनिक भी इच्छा नहीं थी। तुम हमारे नगर और हमसे सन्तुष्ट थे। तुम हमें और हमारे द्वारा शासित होना इतना अच्छा समझते थे, तथा तुमने हमें इतना सुहावना समझा कि तुमने इस नगर में बच्चे पैदा किये। इसके सिवाय यदि तुम चाहते तो अपने अभियोग के समय तुम देशनिर्वासन को पसन्द कर सकते थे। इस समय जो बात तुम राज्य से चुरा कर कर रहे हो, उस समय तुम राज्य की सम्मति से कर सकते थे। किन्तु, उस

समय तुमने मरने ही में अपनी शान समझी। तुमने कहा कि तुम देशनिर्वासन की अपेक्षा मृत्यु को अच्छा समझते हो। और अब तुम्हें इन शब्दों को कहने के लिये लज्जा नहीं आती। तुम हमारा (क़ानून का) आदर नहीं करते क्योंकि तुम हमें नष्ट करने का उद्योग कर रहे हो। तुम ठीक एक हतभाग्य क्रीत दास की भाँति काम कर रहे हो अर्थात् अहदनामे के विरुद्ध, अपनी सरकार की आज्ञा के विना ही, भाग जाने का उद्योग कर रहे हो। इस कारण पहिले इस प्रश्न का उत्तर दो। हम जो यह कहते हैं कि तुमने केवल वचनों ही से नहीं, किन्तु अपने वर्ताव से भी हमारे शासन में रहने की प्रतिज्ञा कर ली है वह सत्य है या नहीं ?' क्रीटो, हम इसका क्या उत्तर देंगे ? क्या हम इस कथन की सत्यता को न मानेंगे ?

क्रीटो—हमे तो साक्रटीज़, यह मानना पड़ेगा।

साक्रटीज—तब वे कहेंगे— 'क्या तुम हमारे साथ किये अपने अहदनामे को नहीं तोड़ रहे ? वह अहदनामा तुमसे बलपूर्वक या धोखे से नहीं कराया गया था, तुमने उसे जल्दी में नहीं किया था। तुम्हारे पास सत्तर वर्ष का समय था जिसमें यदि तुम असन्तुष्ट होते या यदि तुम्हें अहदनामा कठोर जान पड़ता, तो तुम यहाँ से जा सक्ते थे। यद्यपि तुम यह कहा करते थे कि लैसीडीमन और क्रीट सुशासित हैं तौ भी तुमने न तो वहाँ ही जाना पसन्द किया और न हेलिनाज़ि या वर्वरों के राज्यों ही में। तुम एथेंस के वाहर अन्धों और लँगड़े लूलों से भी कम जाया करते थे। अतएव साफ साफ़ ज़ाहिर है कि तुम अन्य एथेंसवासियों की अपेक्षा इस नगर से और

हमसे, जो इस नगर के नियम (क़ानून) हैं कहीं अधिक सन्तुष्ट थे, क्योंकि कौन ऐसा व्यक्ति है जो एक ऐसे नगर से सन्तुष्ट रहे जिसमें नियम (कानून) नही है ? और क्या अब तुम अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार काम न करोगे? यदि तुम हमारी सम्मति मानोगे तो तुम अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार ही कार्य करोगे और एथेंस से भाग कर अपने को हास्यास्पद वस्तु न बनाओगे।

'क्योंकि सोचो। इस तरह अपनी प्रतिज्ञा को तोड़ने से तुम अपना, या अपने मित्रों और परिवार वालों का क्या उपकार करोगे? यह विल्कुल निश्चित है कि वे कम से कम स्वयं देशनिकाले, नागरिक स्वत्वों के छिनने और सम्पत्ति अपहरण के भय में रहेंगे। तुम स्वयं पास की किसी भी रियासत में, उदाहरण के लिये थीब्सि या मैगारा मे जा सक्के हो क्योंकि ये दोनों ही सुशासित हैं। किन्तु साक्रटीज़, तुम इन राष्ट्रतन्त्रों में शत्रु की तरह पहुँचोगे। और उन राष्ट्रतन्त्रों का प्रत्येक हितैषी तुम्हारी तरफ़ कटाक्ष से देखेगा और तुम्हें नियम (क़ानून) का भंग करने वाला समझेगा। तुम जजों की राय को प्रमाणपूर्वक सावित कर दोगे और यह मालूम पड़ने लगेगा कि उनकी आज्ञा न्यायसंगत थी। क्योंकि वह व्यक्ति जो कानून के विरुद्ध काम कर सक्ता है, नवयुवकों और वेसमझ के व्यक्तियों को भी विगाड़ सक्ता है। तव क्या तुम सुशासित राज्य और सभ्य पुरुषों से दूर रहोगे? या ऐसे व्यक्तियों के साथ में रहोगे और उनके साथ निर्लज्जता के साथ किस विषय पर साक्रटीज़ तुम वातचीत करोगे? उन्हीं विषयों पर जिन पर तुम यहाँ वातचीत

किया करते हो ? क्या तुम उनसे कहोगे कि पुण्य, न्याय, संस्था और क़ानून मनुष्य के सब से अधिक मूल्यवान् पदार्थ हैं । क्या तुम यह नहीं समझते कि ऐसी वस्तु साक्रटीज़ के लिये निर्लज्जता की बात होगी ? तुमको ऐसा ही सोचना चाहिये । किन्तु तुम इन स्थानों को छोड़ दोगे, और क्रीटो के मित्रों के पास थिसली में जाओगे । क्योंकि वहाँ सबसे अधिक अराजकता और ऐयाशी है । सम्भवतः वे तुम्हारी जेल से भागने की हँसी दिलाने वाली कथा को प्रसन्नतापूर्वक सुनेंगे कि तुम कैसे किसान के वस्त्रों को पहिन कर और अपना रूप बदल कर भागे थे क्योंकि भागने के समय ऐसे ही रूप धारण कर लिये जाते हैं । किन्तु क्या तुमसे यह कहने वाला तुम्हें कोई न मिलेगा कि तुम्हें कदाचित् कुछ ही समय और जीना है और इस थोड़े से जीवन के लिये तुम कैसे इतने लालची हो गये कि तुमने संसार के सबसे ऊँचे नियम को भंग किया ? यदि तुम उन्हें अप्रसन्न न करोगे तो तुमसे कदाचित् यह कोई भी न पूँछेगा । किन्तु यदि तुम उन्हें अप्रसन्न करोगे तो उनसे तुम ऐसी बहुत सी बातें सुनोगे जो तुम्हें लज्जित कर देंगी । तुम अपना जीवन सब मनुष्यों के दास और खुशामदी बन कर बिताओगे । थिसली में तुम सिवाय मौज उड़ाने के और क्या करोगे ? ऐसा मालूम पड़ेगा कि तुमने थिसली की केवल इसी लिये यात्रा की है कि वहाँ मौज उड़ावें । तब पुण्य और न्याय के बारे में तुम्हारा पुराना कथन क्या होगा ? किन्तु तुम अपने बच्चों के लिये जीवित रहना चाहते हो ? तुम उनका पालन और उनको शिक्षित बनाना

चाहते हो ? यह क्या ? क्या तुम उन्हें थिसली ले जाओगे और वहाँ उनके पालन पोषण और शिक्षा का प्रबन्ध करोगे ? क्या तुम उन्हें अपने देश के प्रति अनजान बना दोगे जिससे यह लाभ तुम उन्हें भी दे सको ? या यदि तुम उन्हें एथेंस में छोड़ जाओ तो क्या तुम्हारे जीवित रहने से, चाहे तुम उनके साथ न रहो, उनकी शिक्षा, तुम्हारे मरने के बाद की अपेक्षा अच्छी होगी ? हाँ, तुम्हारे मित्र उनकी खबरदारी रक्खेंगे । क्या तुम्हारे मित्र तब तुम्हारे पुत्रों की खबरदारी अधिक करेंगे जब तुम थिसली की यात्रा करोगे और तब उनकी खबरदारी न करेंगे जब तुम हेडिस (Hades) की यात्रा करोगे ? तुमको यह न सोचना चाहिये कि कम से कम वे लोग जो अपने को तुम्हारा मित्र बतलाते हैं (ऐसी अवस्था में) किसी काम के हैं ।

'नहीं, साक्रटीज़, हमारी जिसने तुम्हारा पालन किया है, सम्मति मानो । न्याय के सामने, न तो जीवन का, न बच्चों का और न किसी दूसरी वस्तु का ध्यान करो जिससे जब तुम दूसरे लोक में जाओ तब वहाँ न्याय करने वालों के सामने अपना समर्थन कर सको । साफ़ ज़ाहिर है कि यदि तुम यह काम करोगे तो न तो तुम्हारा कोई मित्र ही इस जीवन म अधिक सुखी, अधिक पवित्र या अधिक न्यायी होगा और न इस जीवन के बाद तुम्हीं अधिक सुखी होगे । इस समय (यदि मरना स्वीकार करोगे तो) तुम हमसे (क़ानून से) नहीं, किन्तु मनुष्य द्वारा हानि पाओगे । किन्तु यदि तुम बुराई के बदले बुराई करो, हानि के बदले हानि पहुँचाओ अपनी प्रतिज्ञा को तोड़ो, और उन्हें जिन्हें तुम्हें कभी हानि न पहुँचानी

चाहिये अर्थात् स्वयं अपने को, अपने मित्रो को अपने देश को और हमें अर्थात् नियमो को हानि पहुँचाओ और भाग जाओ तो जब तक तुम जीते रहोगे तब तक हम तुमसे नाराज़ रहैंगे और मरने के बाद हमारे हैडिस (Hades) वाले भाई तुम्हारा स्वागत न करेंगे। क्योंकि वे जान लेंगे कि पृथ्वी पर तुमने भर सक हमें नष्ट करने का उद्योग किया था। इस कारण हमारी बात मानो और क्रीटो की बातों में मत आओ ?'

प्यारे क्रीटो, अच्छी तरह समझ रक्खो कि जिस प्रकार सिविल देवी के भक्त अपनी उन्मत्तावस्था में, बांसुरी के स्वरों में भविष्य सुन लिया करते है उसी प्रकार मैं इन बातों को सुन रहा हूँ और ये शब्द मेरे कानों में इतनी ज़ोर से गूँज रहे है कि इनके कारण और कोई शब्द नही सुनाई पड़ते। मुझे विश्वास है कि यदि तुम इसके विरुद्ध कुछ कहोगे तो वह केवल व्यर्थ होगा। तो भी यदि तुम समझते हो कि तुम्हें सफलता होगी तो कहते चलो।

क्रीटो—साक्रटीज़, मैं इससे अधिक नहीं कह सक्ता।

साक्रटीज—तो क्रीटो, ऐसा ही होने दो, और यह देख कर कि ईश्वर की ऐसी ही इच्छा है, मुझे मेरे कथन के अनुसार ही करने दो।

फ़ीडो

वा

आत्मा का अमरत्व ।

[दो दृश्य—प्रथम दृश्य फ्लिअस मे, दूसरा दृश्य साक्रटीज़ के कारागार में ।]

प्रथम दृश्य ।

ऐकीक्रीटिस और फ़ीडो ।

ऐकीक्रीटिस—फ़ीडो, उस दिन क्या तुम स्वयं साक्रटीज़ के साथ थे जिस दिन उन्होंने कारागार में विष पिया था, या तुमने यह कथा किसी दूसरे से सुनी थी ?

फ़ीडो—ऐकीक्रीटिस, मै स्वयं वहाँ उपस्थित था ।

ऐकीक्रीटिस—तो हमारे गुरू ने मरने के पहिले क्या कहा था और वे किस प्रकार मरे ? यदि तुम सब वृत्तान्त मुझसे बतलाओगे तो मैं बड़ा प्रसन्न होऊँगा । अब हमारा कोई भी नागरिक बहुधा एथेंस को नही जाता, और कोई भी विदेशी बहुत दिनो से यहां नहीं आया जो हमें इसके बारे मे इसके सिवाय कुछ पक्का समाचार दे सकै कि उन्होंने विष पी लिया और वे मर गये। इसके सिवाय हमें कुछ भी पता नहीं लगा ।

फ़ीडो—तो तुमने यह भी न सुना होगा कि अभियोग किस प्रकार चला था ?

ऐकीक्रीटिस—हाँ, हमने वह तो सुना था, और यह जान कर हमको बड़ा आश्चर्य भी हुआ कि उनकी मृत्यु उनके अभि-

योग के इतने दिनों बाद हुई। फीडो, इसका क्या कारण था ?

फीडो—ऐकीक्रीटिस, यह केवल एक संयोग आ पड़ा था। ऐसा हुआ कि अभियोग के एक दिन पहिले उस जहाज़ का पिछला भाग पूजा गया था, जिसे एथेंसवासी हर साल 'डिलास' भेजा करते हैं।

ऐकीक्रीटिस—और यह जहाज़ क्या वस्तु है।

फीडो—एथेंसवासी यह कहते हैं कि यह वह जहाज है कि जिस पर थिसिअस सात युवा और सात युवतियों को ले कर क्रीट गया था और जहां से वह उन्हें तथा स्वयं अपने को मृत्यु से बचा लाया था। आगे यह कहा जाता है कि एथेंसवासियों ने अपालो से यह प्रतिज्ञा की कि यदि उन की रक्षा हो जायगी तो वे प्रत्येक वर्ष एक पवित्र मिशन डिलास को भेजा करेंगे। उस समय से अब तक यह जहाज़ प्रत्येक वर्ष डिलास जाया करता है। वहाँ एक ऐसा नियम है कि जिस दिन से मिशन आरम्भ होता है उस दिन से जब तक कि जहाज़ डिलास से लौट न आवे, सारा नगर पवित्र रखा जाता है और कोई भी कैदी जिसे मृत्यु-दण्ड दिया जाता है, नहीं मारा जाता, और कभी कभी तो ऐसा होता है कि उलटी हवा के कारण जहाज़ बहुत दिनों तक नहीं आता। पवित्र मिशन उस दिन से आरम्भ होता है जिस दिन अपालो का पुजारी जहाज के पिछले भाग की पूजा करता है। जैसा कि मैंने कहा, यह कार्य अभियोग के एक दिन पहिले ही आ पड़ा। यही कारण है जिससे साक्रटीज के अभियोग और मृत्यु मे इतने दिनों का अन्तर आ पड़ा।

ऐकीक्रीटिस—किन्तु फ़ीडो हमें उनकी मृत्यु के बारे में कुछ

बतलाओ। किसने क्या कहा और किया था और हमारे गुरू के कौन कौन से मित्र वहाँ उपस्थित थे? अधिकारियों ने उन्हें वहाँ जाने से रोका तो नहीं? क्या उनकी मृत्यु एकान्त में हुई?

फीडो—अजी नहीं। कुछ क्या वहाँ तो कई एक व्यक्ति उपस्थित थे।

ऐकीक्रीटिस—यदि तुम किसी काम में फँसे न हो, तो हमें सारी कथा बतलाओ, बड़ी कृपा होगी।

फीडो—नहीं, मेरे पास इस समय कोई काम नहीं है। मैं तुमसे सब हाल कहूँगा। मुझे इतना आनन्द किसी भी बात मे नहीं मिलता जितना कि साक्रटीज़ के बारे मे बातचीत करके या सुनके या उनकी याद करने से मिलता है।

ऐकीक्रीटिस—ठीक है-और तुम श्रोता भी अपने ही समान पाओगे। किन्तु जहाँ तक हो सके मुझसे सब हाल पूरा पूरा और ठीक ठीक कहना।

फीडो—तो उस दिन मैं स्वयं अजीब तरह से घबड़ा गया था। मुझे यह नहीं मालूम पड़ता था कि मैं अपने किसी प्यारे मित्र के मृत्युकाल में उपस्थित हूँ। ऐकीक्रीटिस, वे इतने निडर हो कर तथा इतने साहस के साथ मरे, तथा वे अपने वचनों से और अपने कामों से इतने प्रसन्न मालूम पड़ते थे कि मुझे उन पर कुछ भी करुणा नहीं आयी। मुझे यह विश्वास हो गया था कि परलोक यात्रा के समय देवतागण उनकी रक्षा करेंगे, और यदि वहाँ जाने से किसी भी व्यक्ति को कभी भी सुख मिला है तो साक्रटीज़ को अवश्य ही सुख मिलेगा। इस कारण उस शोकमय समय मे भी, तुम्हारी आशा के विरुद्ध, मुझे कुछ भी करुणा न आयी।

उस समय दर्शनशास्त्र (तत्त्वज्ञान Philosophy) सम्बन्धी बातचीत हो रही थी, किन्तु उस दिन मुझे उस वार्तालाप में इतना आनन्द नहीं आया जितना कि साधारणतः आया करता था। मुझे एक बड़े विचित्र भाव ने आ घेरा था, दुःख और सुख का अजीब मेल मिलाप मुझमें विद्यमान था, क्योंकि उनकी बातचीत से आनन्द मिलता था और जब यह याद करता था कि ये हाल ही में मरने वाले हैं, तब कष्ट होने लगता था। जितने लोग वहाँ उपस्थित थे, सभी, प्रायः इसी अवस्था में थे। हम लोग कभी हँसते और कभी रोते थे। विशेष कर अपालोडोरस की यही अवस्था थी। तुम इस व्यक्ति और इसकी आदतों से परिचित हो ?

ऐकीक्रीटिस—निस्सन्देह मैं परिचित हूँ।

फीडो—तो वह अपने को बिल्कुल ही नहीं रोक सका था। तथा मैं और दूसरे लोग भी उस दिन बड़े उद्वेग में थे।

ऐकीक्रीटिस—फ़ीडो, वहाँ कौन कौन व्यक्ति उपस्थित थे।

फीडो—एथेंसवासियों में से यह अपालोडोरस था, क्रीटोबोलस तथा उसका पिता क्रीटो, तथा हर्मोजिनीस, एपिजिनीस, एस्किनीज़ और एण्टिस्थनीज भी थे। रिसिपस और मेनिक्सिनस तथा और भी कुछ एथेंसवासी थे।

ऐकीक्रीटिस—क्या वहाँ कोई परदेशी भी थे ?

फीडो—हाँ, वहाँ थीबिस का सिमिअस, सीबिस और फीडरिडस थे तथा मगारा के यूक्लीडस और टर्पशिअन थे। प्लेटो बीमार था।

ऐकीक्रीटिस—किन्तु क्या एरिस्टिपस और क्लिअम्ब्रोटस भी उपस्थित थे।

फ़ीडो—नहीं वे उपस्थित नहीं थे, लोग कहते हैं कि वे इजिना चले गये थे।

ऐकीक्रीटिस—क्या और भी कोई वहाँ था ?

फ़ीडो—नहीं, मेरी समझ में और कोई तो था नहीं।

ऐकीक्रीटिस—तो अब मुझे अपनी बातचीत का हाल सुनाओ।

फ़ीडो—मैं आरम्भ से तुम्हें पूरी कथा सुनाने का उद्योग करूँगा। और दिनों हम सब सवेरे ही अदालत में, जहाँ अभियोग हुआ था, मिला करते थे। वह कारागार के पास ही है। फिर हम सब भीतर साक्रटीज़ के पास जाया करते थे। कारागार खुलने तक हम सब बैठे बातचीत करते हुए खुलने का समय देखते रहते थे क्योंकि वह सवेरी न खुला करती थी। जब कारागार खुलती तो हम सब भीतर जाते और बहुधा साक्रटीज़ के पास ही हम सारा दिन बिताया करते थे। किन्तु उस दिन हम नित्य प्रति से कुछ सवेरे मिले, क्योंकि उससे एक दिन पहिले सन्ध्या के समय, कारागार से जाते वक़्त हमने सुना था कि डिलास से जहाज़ आ गया है। इस कारण जितनी जल्दी हो सका उतनी जल्दी हम आ पहुँचे। जब हम वहाँ पहुँचे तब नौकर, जो हमें निन्य प्रति भीतर ले जाया करता था, निकल आया और उसने हमसे थोड़ी देर ठहरने को कहा और कहा कि जब तक वह स्वयं न बुलावे हम भीतर न जायँ। उसने इसका कारण यह बतलाया कि एथेंस के मजिस्ट्रेट (जिनकी संख्या ग्यारह थी) साक्रटीज़ की बेड़ी काट रहे थे और आज उन की मृत्यु की आज्ञा दे रहे थे। थोड़ी ही देर

बाद वह लौटा और उसने हम लोगों को भीतर बुलाया। हम लोग भीतर गये और साक्रटीज़ को बेड़ियों से उसी समय छूटा हुआ पाया। ज़ेनथिप्पी अपने बच्चे को लिये उनके पास बैठी थी, तुम उससे परिचित होगे। ज्यों ही ज़ेनथिप्पी ने हम लोगों को देखा त्यों ही उसने चिल्ला कर रोते हुए कहा कि 'साक्रटीज़, अब आज ही अन्तिम दिन है जिस दिन तुम अपने मित्रों के साथ या तुम्हारे मित्र तुम्हारे साथ बातचीत कर सकेंगे।' और साक्रटीज़ ने क्रीटो की तरफ देख कर कहा कि 'क्रीटो, इसे घर पहुँचा देना चाहिये।' सो, क्रीटो के कुछ नौकर उसे वहाँ से ले गये, वह ज़ोर ज़ोर से रोती हुई और छाती पीटती हुई वहाँ से गयी। किन्तु साक्रटीज़ अपने बिस्तरे पर बैठ गये थे, और अपने पैर को मोड़ कर उसे हाथ से रगड़ने लगे और रगड़ते रगड़ते बोले :—

साक्रटीज—लोग जिसे सुख कहते हैं वह कैसी विचित्र वस्तु है! उसका और दुख का, जो उसका ठीक विरोधी मालूम पड़ता है, कैसा आश्चर्यजनक सम्बन्ध है! यह दोनों एक साथ ही एक व्यक्ति के पास नही आते। किन्तु यदि वह व्यक्ति इनमें से किसी एक का भी पीछा कर उसे पा जाता है तो उसे दूसरा भी बलपूर्वक स्वीकार करना ही पड़ता है मानो यह दो वस्तु भिन्न भिन्न पदार्थ हैं जो एक ही छोर पर बँधी हुई हैं। और यदि ईसप ने इस विषय पर विचार किया होता तो उसने ऐसी कोई कथा गढ़ ली होती जिसमें वह कहता कि जब ये दोनों लड़ रहे थे तब ईश्वर ने इन दोनों में मेल कराना चाहा था, किन्तु जब वह इनमें मेल न करा सका तो उसने इन दोनों के

छोर जोड़ दिये और इसी से जब मनुष्य पर एक आता है तो दूसरा भी अवश्य ही कृपा करता है। ठीक यही दशा मेरी भी है, मेरे पैरों में बेड़ियों के कारण पीड़ा (दुःख) थी और अब ऐसा मालूम पड़ता है कि पीड़ा के बाद सुख आ रहा है। इसी समय सीबिस ने बीचही में टोंक कर कहा।

सीबिस—आपने अच्छी याद दिलायी। कई व्यक्ति आपके अपालो के स्तोत्र, ईसप की कहानियों पर आप के बनाये पद्य, तथा आपकी कविता के बारे मे पूँछ ताँछ कर रहे थे। एक ही दो दिन बीते जब एवनस ने मुझसे पूँछा था कि जब आपने जीवन में कभी भी कविता नहीं की थी, तो यहाँ आ कर कविता करने से आपका क्या तात्पर्य है। वह मुझसे इसका कारण अवश्य ही फिर पूँछेगा। कृपया आप मुझे बतलावे कि यदि उसने फिर मुझसे यह प्रश्न किया तो मैं उसको क्या उत्तर दूँ।

साक्रटीज—तो सीबिस, तुम उससे यथार्थ बात कह देना। उससे कह देना कि मैंने उसकी कविता या स्वयं उसकी लाग डॉट में यह कविता नहीं की। मैं इसे जानता हूँ कि ऐसा करना सरल नहीं है। मैं केवल कुछ स्वप्नों की जाँच कर रहा था और यह देख रहा था कि उनका आशय मुझसे कहीं ऐसी कविता करवाने का तो नहीं है। असल बात यह है। वही स्वप्न जीवन में मुझे कई बार भिन्न भिन्न रूपों में दिखलाई पड़ा। प्रत्येक बार वह यही कहा करता था कि 'साक्रटीज़, संगीत में परि-श्रम करो और उसको रचो।' पहिले मैं यह समझता था कि जिस प्रकार दौड़ने वालों को दर्शक बढ़ावा देते हैं उसी प्रकार स्वप्न मुझे उस काम को करने का बढ़ावा दे रहा

है, जिसको मैंने अपने जीवन का उद्देश्य बना रखा था। मैंने समझ रखा था कि जिस काम को मैं कर रहा हूँ स्वप्न मुझे उसी काम में संगीत पैदा करने को कह रहा है। मैंने ऐसा इस लिये सोचा कि तत्त्व-ज्ञान ही सब से बड़ा संगीत है और मेरा जीवन तत्त्व-ज्ञान ही की खोज मे बीतता था। किन्तु जब अभि-योग के बाद, देवता के उत्सव के कारण मेरी मृत्यु में देर हुई, तब मैंने सोचा कि स्वप्न के संगीत का तात्पर्य कहीं असली संगीत से न हो, और ऐसी अवस्था मे मुझे उसकी आज्ञा का पालन करना उचित है। मैंने इस कारण यह निश्चित किया कि परलोकयात्रा करने के पहिले इस काम को करके मैं अपने मन का संशय मिटा दूँ। इस कारण पहिले मैंने उस देवता (अपालो) का एक स्तोत्र रचा जिसका वह उत्सव था। फिर मैंने ईसप की उन कहानियों को, जो मुझे याद थीं, जिस सिलसिले से मेरे सामने आयीं, कविता में कर डाला। क्योंकि मैंने यह विचार किया कि कवि को यथार्थ बात का नहीं, किन्तु बनावट या कल्पना का उपयोग करना चाहिये और मैं बनावट का आवि-ष्कार स्वयं नहीं करसक्ता था। इस लिये मैंने ईसप की कहानियों का उपयोग किया।

सीबिस तुम एवनस से यह कह देना और उससे मेरा अन्तिम प्रणाम कह देना तथा उससे यह भी कह देना कि यदि वह बुद्धिमान् है तो मेरा पदानुगमन करे। मुझे मालूम पड़ता है कि एथेसवासियों की इच्छा है कि मैं आज ही प्रस्थान करूँ।

सिमिश्रस—साक्रटीज़, तुमने एवनस को कैसी विचित्र सलाह दी है। मैंने उससे कई वार मुलाकात की है, और जहाँ तक उसके वारे में मेरा अनुभव है वहाँ तक मैं यह कह सक्ता हूँ कि वह ऐसा व्यक्ति है कि यदि उसका वस चलै तो वह इसे कभी न होने दे।

साक्रटीज—यह क्यों ? क्या एवनस तत्त्वज्ञानी नहीं है ?

सिमिश्रस—हाँ, मालूम तो ऐसा ही पड़ता है।

साक्रटीज—तो एवनस क्या, कोई भी व्यक्ति जिसे इस विद्या से सम्बन्ध रखने का सौभाग्य है अवश्य मरना चाहैगा। किन्तु वह आत्महत्या नहीं करैगा, क्योंकि वे यह कहा करते हैं कि ऐसा करना अनुचित है। (यह कहकर उन्होंने अपने पैर विस्तरे से नीचे करके पृथ्वी पर रख दिये। और इसी तरह वे शेष समय में वातचीत करते रहे)।

सीविस—साक्रटीज़, आपके इस कथन का क्या तात्पर्य है कि तत्त्वज्ञानी आत्महत्या तो नहीं करैगा किन्तु वह मरनेवाले व्यक्ति का अनुगमन करना चाहैगा ?

साक्रटीज—यह क्या सीविस ! तुम और सिमिश्रस फाइलोलास के पास रहे और तुमने इन वातों के वारे में कुछ नहीं सुना ?

सीविस—साक्रटीज़ कोई ठीक वात हमने नहीं सुनी।

साक्रटीज़—मैंने स्वयं इन वातों को दूसरों से सुना है, किन्तु यह कोई कारण नहीं है कि जो वात मैंने सुनी है वह मैं स्वयं न कहूँ। वास्तव में जब मैं स्वयं परलोकयात्रा के लिये तैयार वैठा हूँ, तब इस समय वात चीत करने और विचार करने के लिए इससे अधिक

उपयुक्त और कौन सा विषय हो सक्ता है। इससे बढ़ कर समय का और कौन सा सदुपयोग होसक्ता है?

सीविस—तो साक्रटीज़ यह कहने का क्या तात्पर्य है कि आत्मघात न करना चाहिये? यह सत्य है कि जब थीविस में फाइलोलास था तब मैं उससे यह सुना करता था कि ऐसा करना अनुचित है और दूसरे व्यक्ति भी ऐसा कहा करते हैं, किन्तु मैंने किसी से भी इसके बारे में कोई निश्चित बात नहीं सुनी।

साक्रटीज़—तुमको प्रसन्नवदन रहना चाहिये सम्भवतः इसके बारे में तुम आज कुछ सुनोगे। किन्तु कदाचित् यह सुन कर तुमको आश्चर्य होगा कि संसार में जितने नियम मनुष्य जाति पर लागू हैं, उनमें यही एक ऐसा है जो अमिट है और जिसमें कोई उपभेद नहीं है। और यह सत्य नहीं है कि केवल कभी कभी और किसी खास व्यक्ति ही के लिये मृत्यु जीवन से अच्छी है। कदाचित् तुम आश्चर्य करने लगोगे यदि मैं तुमसे कहूँ कि जिनके लिये मृत्यु बेहतर है वे स्वयं अपनी भलाई आप नहीं कर सक्ते किन्तु उन्हें किसी दूसरे का मुँह ताकना पड़ता है।

सीविस ने हँसकर कहा कि हाँ यह ठीक है और फिर वह अपनी मातृभाषा में कुछ कहने लगा।

साक्रटीज—ऐसा कहना आश्चर्यजनक मालूम हो सक्ता है, और तब भी इसके लिये कोई कारण दिया जा सक्ता है। इसका जो कारण गुप्त शिक्षा देनेवाले देते हैं, अर्थात् यह कि मनुष्य एक प्रकार के कारागार में है, जिससे कि न तो वह स्वयं छूट सक्ता है और न छुटकारा पा

सक्ता है, मुझे आशयपूर्ण और गम्भीर मालूम पड़ता है। किन्तु सीबिस मैं इसे मानता हूँ कि देवता हमारे रक्षक हैं और हम मनुष्य उनकी सम्पत्ति के एक भाग हैं। क्या तुम इसे नहीं मानते ?

सीबिस—मैं भी इसे मानता हूँ।

साक्रटीज—ऐसी दशा में कदाचित् यह कहना अयुक्तिपूर्ण न होगा कि किसी भी मनुष्य को अपना जीवन नष्ट करने का अधिकार नहीं है, जबतक कि ईश्वर उसे आवश्यकता पड़ने पर ऐसा करना उचित न समझे, जैसे कि ईश्वर ने मुझे जीवन देने का समय दिया है।

सीबिस—हाँ यह स्वाभाविक मालूम पड़ता है। किन्तु अभी आप कह रहे थे कि तत्त्वज्ञानी मरने की इच्छा करेगा। यदि यह सत्य हो कि ईश्वर हमारा रक्षक है, और हम उसकी सम्पत्ति हैं, जैसा कि अभी हम कह चुके हैं; तो साक्रटीज़, क्या तत्त्वज्ञानी की यह जीवन देने की इच्छा अयुक्ताभास (देखने में असत्य) नहीं प्रतीत होती ? यह कहना युक्ति संगत नहीं है कि बुद्धिमान् पुरुष इस सेवा (कर्म) के स्थान से चले जाना पसन्द करेंगे जहाँ कि देवता लोग, जो सर्वोत्तम शासक हैं, उस पर शासन कर रहे हैं। वह कदाचित् ही यह सोचे कि जब वह स्वतन्त्र हो जायगा तब वह अपनी खबरदारी देवताओं से अधिक कर सकेगा।

कदाचित् एक मूर्ख व्यक्ति कहे तो कह सक्ता है कि अपने मालिक के पास से भाग कर वह सुखी रह सक्ता है। वह शायद यह सोचना भूल जाय कि एक भले

स्वामी के पास से भाग जाना ठीक नहीं है; किन्तु जहाँ तक हो सके उसके पास रहना चाहिये। ऐसी अज्ञानावस्था में वह भले ही भाग जाय, किन्तु बुद्धिमान् सदा ही यह बात चाहेगा कि वह अपने से अच्छे व्यक्ति के पास रहे। किन्तु साक्रटीज़, यदि यह सत्य है तो जो तुमने अभी कहा है उसका विरुद्ध भाव आया जाता है, अर्थात् बुद्धिमान् पुरुष मरना नहीं चाहता और मूर्ख मरना चाहता है।

मुझे ऐसा मालूम पड़ने लगा कि साक्रटीज़ सीबिस के तर्क से प्रसन्न हुए। उन्होंने हम लोगों की तरफ़ देखा और वे बोले—

साक्रटीज़—सीबिस सदा तर्क की परीक्षा किया करता है। एकाएक वह किसी की भी बात का विश्वास न करेगा।

सिमिअस—हाँ यह ठीक है। किन्तु मैं समझता हूँ कि सीबिस के कथन में कुछ सार अवश्य है। मनुष्य अपने से अधिक बुद्धिमान् स्वामी की सेवा छोड़ कर क्या लापर्वाही से भाग जाना चाहते हैं? और मैं समझता हूँ कि सीबिस के तर्क का लक्ष्य आपके ऊपर है क्योंकि आप हम लोगों को और देवताओं को, जिन्हें आप स्वयं इतना अच्छा कहते हैं, इस प्रकार छोड़े जाते हैं।

साक्रटीज—तुम ठीक कहते हो। मैं समझता हूँ कि तुम्हारी इच्छा है कि मैं तुम्हारे लगाये अभिशाप से अपना बचाव करूँ मानो मैं किसी न्यायालय में हूँ।

सिमिअस—जी हाँ, हमारा मतलब तो यही है।

साक्रटीज—अच्छा तो मुझे उचित है कि तुम्हारे सामने मैं अपने अभियोग की अपेक्षा अपने मत का सम-

र्थन अधिक सफलता के साथ करूँ। सीबिस और सिमिअस, सचमुच मरने के समय मुझे अत्यन्त खेद होता, यदि मैं यह न सोचता होता कि मैं परलोक मे भले और बुद्धिमान् देवताओं तथा परलोकगत मनुष्यों के साथ रहने को जा रहा हूँ, जो इस संसार के मनुष्यों से अच्छे हैं। किन्तु इसे जान लो कि मैं भले आदभियों के साथ रहने की आशा में जा रहा हूँ, यद्यपि मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास नही है। किन्तु मुझे इस बात का विश्वास है कि मे देवताओं के साथ रहने के लिये जा रहा हूँ जो सचमुच अच्छे स्वामी हैं। इसी कारण मै मृत्यु से दुःखी नहीं हूँ। मुझे विश्वास है कि मरे हुओं की भी किसी न किसी प्रकार की स्थिति होती है, और वह स्थिति पुराने लोगों के कथनानुसार दुष्टों की अपेक्षा भलों को कहीं अधिक कल्याणकर है।

सिमिअस—अच्छा तो साक्रटीज़, क्या आपकी यह इच्छा है कि आप यह विश्वास अपने ही साथ ले जावें, या आप इस विश्वास में हमें भी सम्मिलित करेंगे? मुझे ऐसा मालूम पड़ता है कि इस भलाई में हमारा भी कुछ लाभ है और यदि आप हमें इसका विश्वास दिला सकें तो आपके मत का भी समर्थन हो जायगा।

साक्रटीज़—मैं उद्योग करूँगा। किन्तु क्रीटो मुझसे कुछ कहने की चेष्टा कर रहा है, पहिले मुझे उसका कथन सुन लेने दो।

क्रीटो—मुझे केवल यही कहना है कि जो व्यक्ति तुमको

विष देगा, उसने तुम्हें अधिक बातचीत करने के लिये मना कर दिया है। उसने कहा है कि बातचीत करने से मनुष्य गर्मा जाते हैं और इस गर्मी का प्रभाव विष पर उल्टा पड़ता है, जो लोग अपने को बातचीत या और किसी कारण से उन्मत्त कर लेते हैं, उनको विष दो या तीन बार पीना पड़ता है।

साक्रटीज़—क्रीटो उसे यह कहने दो। वह अपना काम देखै। उसे मुझे दो या तीन बार विष देने के लिये तैयार रहना चाहिये।

क्रीटो—मैं पहिले ही यह जानता था कि तुम्हारा यही उत्तर होगा, किन्तु उसने यह बात आग्रहपूर्वक और प्रार्थना करके कही थी।

साक्रटीज़—उसकी कुछ पर्वाह मत करो। किन्तु मैं तुम्हें यह बतलाना चाहता हूँ कि एक व्यक्ति जो तत्त्व-ज्ञानी है, उसे मरने के समय प्रसन्न चित्त क्यों रहना चाहिये, और मरने के बाद परलोक में उसे सर्वोत्तम भलाई की आशा क्यों करनी चाहिये। सीबिस और सिमिअस, मैं तुम्हें यह समझाने का उद्योग करूँगा।

कदाचित् संसार इस बात को ठीक तौर से नहीं समझ सका कि जो व्यक्ति तत्त्वज्ञान का मनन करता है वह केवल मरते हुए और मृत्यु ही का मनन करता है और यदि यह ठीक है तो यह बड़े ही आश्चर्य का विषय है कि जो व्यक्ति जीवन भर मरने की इच्छा करता आ रहा है, जिसका मनन विषय और इच्छा केवल मृत्यु ही है, वह मरने के समय घबड़ा जाय!

सिमिअस ने हँसते हँसते कहा-यद्यपि मैं इस समय हँसने की तरंग मे नहीं हूँ तथापि आप मुझे हँसा ही देते हैं। यदि सर्वसाधारण इस बात को सुने तो वे कहेंगे कि जो कुछ आपने तत्त्वज्ञानियों के बारे में कहा वह बिल्कुल सत्य है, और मेरे देशवासी चट पट आपसे सहमत हो जायँगे और कहेंगे वे जानते हैं कि तत्त्वज्ञानी वास्तव में मरना चाहते है इस कारण उन्हे मार डालना चाहिये।

साक्रटीज़—इसको छोड़ कर कि 'वे जानते हैं' उनका कथन बिल्कुल सच है। वे नहीं जानते कि सच्चा तत्त्वज्ञानी किस मतलब से मरने के लिये उत्सुक है, या उसके लिये कौन सी मृत्यु उपयुक्त है, या किस मतलब मे उसके लिये मृत्यु उचित है। हमें उनको भुला देना चाहिये, और स्वयं अपने आप इस विषय पर बातचीत करनी चाहिये। क्या हम मृत्यु को कोई वस्तु मानते हैं?

सिमिअस—हाँ, हम मानते हैं।

साक्रटीज—और क्या हम यह नहीं मानते कि आत्मा का शरीर से अलग होना ही मृत्यु है? क्या मृत्यु से यह अर्थ नहीं निकलता कि शरीर आत्मा से अलग होकर इकेला स्थित रहता है और आत्मा शरीर से अलग होकर इकेला स्थित रहता है? इसके सिवाय मृत्यु और क्या है?

सिमिअस—हाँ, वह यही है।

साक्रटीज—अब सोचो कि हम दोनों एक दूसरी बात

पर भी सहमत हैं या नहीं, जिसके द्वारा इस विषय के निर्णय करने में सरलता पड़े। क्या तुम समझते हो कि तत्त्वज्ञानी सांसारिक सुख, जैसे खाने पीने की कुछ अधिक पर्वाह करता है ?

सिमिअस—बिल्कुल नही साक्रटीज़।

साक्रटीज—या पाशविक सुखो की ?

सिमिअस—कदापि नहीं।

साक्रटीज—और क्या तुम समझते हो कि वह शरीर के और सुखों को कुछ चीज़ समझता है ? क्या वह अच्छे अच्छे कपड़े, सुगन्धि आदि शारीरिक आभूषणों की पर्वाह करेगा ? या वह आवश्यक वस्तुओं को छोड़ कर और वस्तुओं से घृणा करैगा ?

सिमिअस—साक्रटीज़, मेरी समझ में सच्चा तत्त्वज्ञानी और वस्तुओं से घृणा करैगा ?

साक्रटीज—तो, तुम समझते हो कि उसका मनन क्षेत्र शरीर नहीं है। जहाँ तक हो सक्ता है वह शारीरिक चिन्ताओं से हट कर आत्मा की तरफ़ झुकता है।

सिमिअस—ठीक है।

साक्रटीज—अब इससे यह ज़ाहिर है कि और लोगों की अपेक्षा तत्त्वज्ञानी अपनी आत्मा का सम्बन्ध शरीर से भरसक कम रखना चाहता है।

सिमिअस—ठीक है।

साक्रटीज—और क्या संसार यह नहीं सोचता कि यदि मनुष्य इन (सांसारिक) वस्तुओं से सुख न उठावे और उनका उपयोग न करै तो उसका जीवन व्यर्थ

है । क्या उनकी यह धारणा नहीं है कि ऐसे लोगों और मुर्दों में कुछ भेद नहीं है ?

सिमिग्रस—हाँ आप ठीक कहते हैं ।

साक्रटीज़—किन्तु ज्ञान के प्राप्त करने का विषय तो छूटा ही जाता है । उसके बारे में क्या कहते हो ? यदि ज्ञान की खोज के समय हम शरीर के साथ उसे खोजते हैं, तो क्या शरीर रुकावट नहीं डालता ? उदाहरण के लिये क्या आँख और कान द्वारा कोई ऐसा ज्ञान मालुम किया जा सक्ता है ? क्या लाखों वर्षों से स्वयं कवि लोग यह नहीं कहते आ रहे कि हम कोई बात ठीक तौर से न तो सुनते ही हैं और न देखते ही हैं ? किन्तु यदि शरीर की यही इन्द्रियाँ ठीक नहीं हैं तो दूसरी भला ठीक कैसे हो सक्ती हैं, क्योंकि वे सब इनकी अपेक्षा कम पूर्ण हैं ?

सिमिग्रस—हाँ इनकी अपेक्षा और इन्द्रियाँ अपूर्ण हैं ।

साक्रटीज—तो फिर आत्मा को सत्य कब मालूम होता है ? हम यह देखते हैं कि जब कभी आत्मा शरीर के साथ किसी बात की खोज करती है, तभी शरीर उसे भुलावा दे देता है ।

सिमिग्रस—ठीक है ।

साक्रटीज—तो फिर क्या केवल विचार ही द्वारा वह उस थोड़े बहुत सत्य को, जिसे वह जानता है, नहीं पाता ?

सिमिग्रस—हाँ ।

साक्रटीज—और आत्मा उसी अवस्था में ठीक ठीक विचार कर सक्ता है जब इन्द्रियाँ उसे तंग नहीं करतीं ।

और जब आत्मा शरीर को छोड़ देता है, और भरसक उसके सम्बन्ध से छुटकारा पा जाता है, और जब वह इकेला हो जाता है, तब वह सत्य की खोज में उद्योग करता है।

सिमिअस—यह भी ठीक है।

साक्रटीज—इसी कारण तत्त्वज्ञानी का आत्मा शरीर से घृणा करता है और भरसक इकेले रहने का प्रयत्न करता है। क्या यह ठीक नहीं है ?

सिमिअस—ठीक है।

साक्रटीज—और तुम दूसरे तर्क के लिये क्या कहते हो ? क्या हम मानते हैं कि कोई ऐसी भी वस्तु है जिसे हम विशुद्ध या सम्बन्धातीत न्याय कहते हैं ?

सिमिअस—हाँ, हम मानते हैं ?

साक्रटीज—और क्या हम सम्बन्धातीत सौन्दर्य और सम्बन्धातीत भलाई भी मानते हैं ?

सिमिअस—बेशक।

साक्रटीज—क्या तुमने इनमें से किसी को भी कभी अपनी आँखों से देखा है ?

सिमिअस—हमने कभी नहीं देखा।

साक्रटीज—क्या तुमने कभी इनको शारीरिक इन्द्रियों के द्वारा समझा है ? मैं प्रत्येक आकार के बारे में कह रहा हूँ चाहे वह स्वास्थ्य हो, चाहे वह बल हो, चाहे वह स्वरूप हो, अर्थात् प्रत्येक वस्तु में जो सार है, उसके बारे में मैं कह रहा हूँ। क्या शरीर वस्तुओं की सत्यता पर भी विचार कर सक्ता है ? क्या यह बात नहीं है कि वह व्यक्ति, जो अपनी बुद्धि से किसी

वस्तु की जाँच करता है, उस वस्तु के बारे में सबसे अधिक जान जाता है, और वह उस वस्तु के असली ज्ञान को बहुत कुछ समझ जाता है ?

सिमिअस—बेशक।

साक्रटीज—और यदि मनुष्य प्रत्येक वस्तु पर बिना इन्द्रियों की सहायता के विचार करे तो क्या वह उस वस्तु की सत्यता पर नहीं पहुँच जायगा ?

केवल अपनी शुद्ध बुद्धि के द्वारा वह प्रत्येक बार शुद्ध आकार को जाँचेगा और भरसक वह अपने को इन्द्रियों तथा शरीर से निर्लिप्त कर लेगा। क्योंकि शरीर का सम्बन्ध आत्मा के लिये हानिकारक है और वह आत्मा को सत्य और ज्ञान नहीं प्राप्त करने देता। यदि कोई व्यक्ति सत्य पुरुष का सच्चा ज्ञान प्राप्त कर सक्ता है तो इसके सिवाय और कौन कर सक्ता है ?

सिमिअस—आपका कथन वास्तव मे बिल्कुल ठीक है।

साक्रटीज—और क्या यह सब बातें देखकर सच्चे तत्त्व-ज्ञानी चिन्तित नहीं होजाते और यह नहीं कहने लगते कि मालूम पड़ता है कि कोई ऐसी तंग रास्ता है कि जिस पर यदि विचार को पथ प्रदर्शक बना कर चला जाय तो यात्रा के अन्तिम स्थान पर सरलता से पहुँचा जा सक्ता है। जब तक कि हमारे पास यह शरीर है, और जब तक हमारे आत्मा के साथ यह व्याधि लगी है तब तक हम अपनी मनोकांक्षा पूरी नहीं कर सक्के अर्थात् हम सत्य को नहीं खोज सक्के। क्योंकि शरीर अपनी इच्छाएँ और आवश्यकताएँ पूरी कराने के लिये हमारा ध्यान और समय बँटा लेता है, और इसके

सिवाय जब कभी रोग इस पर आक्रमण करता है तभी परमात्मा की खोज में बाधा पहुँचती है। शरीर हममें नाना प्रकार के उत्तेजक भाव, कामनाएँ, भय, मूर्खता और मृगतृष्णा पैदा कर देता है। कहावत यह ठीक ही कहती है कि शरीर के कारण हम सत्य का पीछा नहीं कर सक्ते। केवल शरीर और उसकी कामनाएँ ही संसार की सारी लड़ाई और झगड़ों की जड़ हैं। क्योंकि युद्ध का कारण धन की इच्छा है और हम धन की इच्छा करने को बाध्य हैं, क्योंकि हम शरीर के दास होकर रहते हैं। इन्हीं कारणों से हमे तत्त्वज्ञान प्राप्त करने का समय नहीं है, और फिर जब कभी थोड़े समय के लिये हम शरीर का ध्यान छोड़ देते हैं, और किसी वस्तु की जाँच करने लग जाते हैं, तो खोज करने के समय यह (शरीर) पग पग पर सामने आ पड़ता है और मनुष्य को ऐसा घबड़ा देता है तथा ऐसे विघ्न डालता है कि उनके कारण हम सत्य को नहीं पा सक्ते। सच बात तो यह है कि हम इसे जान गये हैं कि यदि हम सत्य की कुछ भी खोज करना चाहते हैं तो हमे शरीर से अलग हो जाना चाहिये। आत्मा को स्वयं (बिना शरीर की सहायता के) सब बात खोजनी चाहिये। तब ऐसा मालूम पड़ता है, और तर्क से यह प्रमाणित है, कि जिस ज्ञान के लिये हम उत्सुक हैं, और जिस ज्ञान की हमें आकांक्षा है वह हमें मरने ही के बाद मिल सक्ता है, और जीते जी नहीं प्राप्त हो सक्ता। यदि सशरीर रहने से हम सत्यज्ञान को नहीं पा सक्ते तो दो में से

एक ही बात सही हो सक्ती है-या तो हम कभी ज्ञान प्राप्त ही नहीं कर सकें और या हम उसे केवल मृत्यु ही के बाद प्राप्त कर सक्के हैं। क्योंकि केवल उसी अवस्था में आत्मा शरीर से भिन्न रह सक्ता है। यदि हम शरीर की आवश्यकताएँ मात्र पूरी कर दिया करें और उसकी आदतों से अपने को अपवित्र न होने दें, तो जीवन में भी हम ज्ञान के बहुत पास पहुँच जायँगे। हमें उससे (शरीर से) बच कर जहाँ तक हो सके, तहाँ तक पवित्र रहना चाहिये जब तक कि ईश्वर हमें इससे (शरीररूपी बंधन से) न छुड़ा दे। और जब इस तरह से हम पवित्र हो जायँगे और शरीर की मूर्खताओं से सम्बन्ध न रखेंगे, तो हम (परलोक में) पवित्र आत्माओं के साथ निवास करेंगे, और हम स्वयं पवित्र बातों को जान जायँगे, और सम्भव है कि वे पवित्र बातें ही 'सत्य' (ज्ञान) हों, क्योंकि मुझे विश्वास है कि अपवित्र वस्तु पवित्र वस्तु को नहीं पा सक्ती। सिमिअस, सच्चे तत्त्वज्ञानी के ये ही विचार और ऐसे ही वचन होने चाहिये। क्या तुम मुझसे सहमत हो?

सिमिअस—हाँ साक्रटीज़, मैं आपसे सहमत हूँ।

साक्रटीज—और मेरे मित्र, यदि यह सत्य है तो मुझे विश्वास है कि जब मैं उस स्थान पर पहुँच जाऊँगा तब मैं वहाँ अवश्य ही उस वस्तु को पाऊँगा जिसको मैं इतनी उत्सुकता के साथ इतने दिनों से खोजता आ रहा हूँ। और इसी कारण आज मैं प्रसन्नतापूर्वक अपनी यात्रा पर जा रहा हूँ। इसी तरह प्रत्येक मनुष्य जिसका मन शुद्ध हो और जो इसके लिये तैयार

हो, उसे चाहिए कि वह यह यात्रा प्रसन्नतापूर्वक करे।

सिमिअस—यह विल्कुल ठीक है।

साक्रटीज—पवित्रता का अर्थ क्या यह नहीं है कि जहाँ तक हो सके आत्मा को शरीर से अलग कर दिया जाय, तथा उसको शरीर के प्रत्येक सबन्ध से वचे रहने की आदत डलवायी जाय। उसकी इस लोक में और परलोक में स्वयं रहने की, अर्थात् शरीररूपी बन्धन से अलग रहने की, आदत डलवायी जाय?

सिमिअस—हाँ विल्कुल ठीक है।

साक्रटीज—क्या मृत्यु से आत्मा का शरीर से छुटकारा नहीं हो जाता?

सिमिअस—बेशक हो जाता है।

साक्रटीज़—और इसी कारण से हम कहते हैं कि सच्चा तत्त्वज्ञानी सदा ही अपनी आत्मा को शरीर से अलग करने की आकांक्षा करता है। उसका मनन विषय केवल आत्मा से शरीर का छुटकारा करना भर है। यह ठीक है?

सिमिअस—बेशक, ठीक है।

साक्रटीज—तब वह व्यक्ति, जो सारे जीवन मृत्यु की आकांक्षा करता आ रहा है यदि मृत्यु के समय मरने से नाह नूह करे, तो इससे बढ़ कर और कौन बात असम्भव हो सकती है?

सिमिअस—हाँ यह बात ठीक है।

साक्रटीज—तो असल बात यह है कि सच्चा तत्त्वज्ञानी केवल मृत्यु के बारे में छानबीन करता है और उसीको

मृत्यु सबसे कम भयङ्कर है। अब इस विषय पर इस प्रकार सोचो। हर एक बात में वह अपने शरीर से शत्रुता रखता है और केवल अपनी आत्मा ही अपने पास रखना चाहता है। तब यदि वह उस स्थान में जाने से, जहाँ उसको चिर-चिन्तित ज्ञान पाने की पूर्ण आशा है और जहाँ जाने से उसको अपने शत्रु से छुटकारा पाने का विश्वास है, प्रसन्न न हो कर भय करे या हिचके, तो क्या यह उसकी बड़ी मूर्खता न होगी ? बहुत से व्यक्ति स्त्री या पुत्र के मरने पर उनके प्रेम में विवश हो कर इस आशा से प्रसन्नतापूर्वक परलोक को चले गये हैं कि वहाँ जा कर उनसे वे मिलेंगे और उनके साथ रहेंगे; और इसी प्रकार जिस व्यक्ति को ज्ञान से सच्चा प्रेम है और जिसे दृढ़ विश्वास है कि उसे ज्ञान केवल परलोक ही में मिल सका है, क्या वह मरने के समय प्रसन्न न होकर डरेगा या दुःखी होगा ? यदि वह सच्चा तत्त्वज्ञानी है तो वह कदापि ऐसा न करेगा, वह इस बात पर विश्वास रखता है कि उसे सच्चा ज्ञान केवल वहीं मिल सका है और यदि ऐसा है तो मैं फिर पूछता हूँ कि क्या वहाँ जाने से डरना उसके लिये बड़ा अनुचित न होगा ?

सिमिअस—बेशक बड़ा ही अनुचित होगा।

साक्रेटीज़—क्या इससे साफ साफ यह ज़ाहिर नहीं होता कि जो व्यक्ति मरने से डरता है वह ज्ञान का प्रेमी नहीं है; किन्तु अपने शरीर का प्रेमी है ? वह कदाचित् धन या नाम का या दोनों का ही प्रेमी है।

सिमिअस—जो आप कहते हैं ठीक है।

साक्रटीज—तो क्या तत्त्वज्ञानी में विशेष कर साहस नहीं होता ?

सिमिअस—मेरी समझ के अनुसार तो उनमे साहस अवश्य होता है।

साक्रटीज—तब क्या (इन्द्रिय-) संयम, वह गुण जिसे स्वयं मनुष्य भी संयम कहते हैं, और जिसका अर्थ मनो-रागों पर अधिकार करना और उनको वश में रखना है, क्या वह गुण (इन्द्रिय-) संयम उस व्यक्ति मे सब से अधिक नहीं होता जो अपने शरीर की कुछ पर्वाह नहीं करता और जो अपने समय को तत्त्वज्ञान के विचार में व्यतीत करता है।

सिमिअस—अवश्य ऐसा ही होना चाहिये।

साक्रटीज—क्योंकि यदि तुम दूसरे लोगों के संयम और साहस पर विचार करो, तो तुम उस वस्तु (उनके संयम को) को बड़ी विचित्र वस्तु पाओगे।

सिमिअस—साक्रटीज़, यह कैसे ?

साक्रटीज—तुम जानते हो कि और लोग मृत्यु को मनुष्य के लिये सब से बड़ा दुर्दैव समझते हैं।

सिमिअस—हाँ, लोग यही समझते हैं।

साक्रटीज—और जब मनुष्य मृत्यु का आश्रय ग्रहण करते हैं तब वे ऐसा केवल और भी अधिक दुर्दैव से बचने के लिये करते हैं।

सिमिअस—हाँ।

साक्रटीज—तो दार्शनिक को छोड़ कर और सब मनुष्य भय से (बचने के लिये) बहादुर हो जाते हैं। तथापि

यह ज़रा अजीब मालूम पड़ता है कि आदमी भय और कादरता के कारण बहादुर हो जाय।

सिमिअस—बेशक यह ठीक है।

साक्रटीज—और क्या नियम से रहनेवाले साधारण मनुष्य इसी नियम के अन्तर्गत नहीं है? क्या वे किसी असंयम से (बचने के लिये ही) संयम से नहीं रहते? हमे यह कहना चाहिये कि ऐसा नहीं हो सक्ता। किन्तु इन लोगों में मूर्खता से संयम करने का यही परिणाम होता है। वे कुछ कामनाओं की इच्छा करते हे और उन्हें खोने से डरते है, इस कारण वे दूसरे सुखों से परहेज़ रखते है क्योंकि वे इन कामनाओं के बिल्कुल वश में हैं। असंयम का अर्थ लोग यह लगाते है कि 'सुखों के आधिपत्य में रहना असंयम है।' किन्तु वे इन सुखों को अपने वश में रखते है क्योंकि वे स्वयं दूसरे सुखों के वश में हैं। इसका तात्पर्य यही है जो मैंने कहा है अर्थात् वे किसी असंयम के कारण संयम से रहते है।

सिमिअस—मालूम तो ऐसा ही होता है।

साक्रटीज—प्यारे सिमिअस, मुझे इस बात का भय है कि मुझे यह कहना पड़ेगा कि वास्तव में पुण्य इस प्रकार से सुख के बदले सुख दे कर, कष्ट के बदले कष्ट दे कर, भय के बदले भय दे कर, थोड़े के लिये बहुत दे कर, रुपये पैसे की भाँति खरीदा नहीं जा सक्ता। इन सब के लिये केवल एक ही ऐसा सिक्का है जिसके बदले ये सब लिये जा सक्ते है. और वह सिक्का 'ज्ञान' है। जो कुछ इसके

बदले में बेचा जाता है, चाहे साहस हो, चाहे न्याय हो, वही सत्य है । सार यह है कि सच्चा पुण्य ज्ञान से भिन्न नहीं है । और सुख, दुःख का वहाँ उपस्थित होना या न होना कोई विशेष महत्त्व का विषय नहीं है । जो 'पुण्य' भय या सुख के आपस के अदल बदल से प्राप्त होता है, और जो ज्ञान से भिन्न है वह सच्चा पुण्य नहीं है किन्तु सच्चे पुण्य की छायामात्र है । सच्चा ज्ञान वास्तव में इन सब से पावन है । और संयम, न्याय, साहस और स्वयं ज्ञान पवित्र करने वाले हैं । मैं समझता हूँ कि जिन लोगों ने हमारी कथाएं बनायीं थीं उनका आशय बड़ा गूढ़ था । वे हमसे कथाओं के स्वरूप में सदा से कहते आये हैं कि जो 'हैडीस' में अपवित्र हो कर जाते हैं वे कीचड़ में पड़े रहते हैं । और वे लोग जो पवित्र हैं वहाँ देवताओं के साथ में निवास करते हैं, क्योंकि जैसा कि लोग कथानकों में कहा करते हैं, 'दण्ड-वाहक तो बहुत से होते हैं, किन्तु प्रेरित बहुत ही कम ।' इन प्रेरित-व्यक्तियों से मेरी समझ में सच्चे तत्त्वविचारकों की ओर इशारा है । मैंने अपने जीवन में भरसक यही उद्योग किया है कि मैं भी इन्हींमें का एक हो जाऊँ । मैं अपने उद्योग में सफल हुआ हूँ या विफल, अथवा मेरा उद्योग ठीक हुआ है या नहीं इसका हाल मुझे, यदि ईश्वर चाहेगा तो थोड़ी ही देर में मालूम हो जायगा जब मैं परलोक में पहुँचूँगा ।

सिमिअस और सीबिस, यही कारण है जिससे मैं

तुमसे और अपने गुरुओं से विछुड़ने पर नाराज़ और दुःखित नहीं हूँ। यद्यपि लोग इस बात पर विश्वास नहीं करेंगे, किन्तु मुझे विश्वास है कि जैसे मुझे इस लोक में सुहृद् मित्र और योग्य गुरु मिले वैसे ही पर-लोक में भी मिलेंगे। यदि मैंने अपने समर्थन से, एथेंस के जजों की अपेक्षा तुम्हें अधिक विश्वास दिला दिया है, तो यह बहुत ही अच्छा हुआ है।

जब साक्रटीज़ ने अपना कथन समाप्त कर लिया तब सीबिस कहने लगा।

सीबिस—साक्रटीज़ मैं समझता हूँ कि जो कुछ आपने कहा उसका अधिकांश सच्चा है। किन्तु साधारणतः मनुष्य आत्मा के सम्बन्ध में आपके कथन का विश्वास नहीं करते। किन्तु उनकी धारणा यह है कि जैसे ही वह शरीर से छूटेगा वैसे ही उसकी स्थिति नष्ट हो जावेगी, और मृत्यु के दिन ही उसका नाश हो जावेगा। वे यह समझते हैं कि जैसे ही वह शरीर से छूटेगा, वैसे ही वह साँस या धुआँ की तरह लय हो जायगा और इसके बाद उसका अस्तित्व नष्ट हो जावेगा। साक्रटीज़, यदि तुम्हारे कथन के अनुसार आत्मा मृत्यु के बाद कहीं अलग रहे और बुराइयों से बच जाय तो हम विश्वास कर सकते हैं कि तुम्हारा कथन सच है। किन्तु यह साबित करने के लिये बड़ा उद्योग और असीम प्रतिभा चाहिये कि मृत्यु के बाद आत्मा का अस्तित्व रहता है तथा उस दशा में उसमें शक्ति या ज्ञान रहता है।

साक्रटीज़—सीबिस, तुम ठीक कहते हो। किन्तु हमें

क्या करना चाहिये ? क्या तुम इस विषय पर बातचीत करके यह देखना चाहते हो कि मेरा कथन सत्य है या नहीं ?

सीबिस—साक्रटीज़, मैं बड़ी प्रसन्नतापूर्वक इस विषय पर आपका कथन सुनूँगा ।

साक्रटीज़—यदि हमारे वादविवाद को अभी किसी प्रहसन लेखक ने भी सुना होता तो वह कदापि यह न कह सक्ता कि हम लोग उन बातों पर व्यर्थ वादानुवाद कर रहे हैं जिनसे हमारा कुछ भी सम्बन्ध नही है। इस कारण यदि तुम चाहो तो इस प्रश्न पर हम लोग विचार करें ।

आत्मा मृत्यु के बाद दूसरे लोक में रहता है या नही, इस प्रश्न पर हमे इस भाँति विचार करना चाहिये । यह एक पुराना विश्वास है कि मृत्यु के बाद आत्मा दूसरे लोक में रहता है और लौट कर मरे हुए शरीर से वह फिर उत्पन्न होगा । किन्तु यदि यह सत्य हो कि मरे हुए से जीवित पैदा होते हैं, तो हमारा आत्मा मरने के बाद अवश्य दूसरे लोक में रहता है, नहीं तो वह फिर उत्पन्न न होता । यदि हम यह साबित कर सकें कि मरे हुए से जीवित उत्पन्न होता है तो हमारा कथन प्रमाणित हो जायगा । किन्तु यदि हम ऐसा न कर सकेंगे, तो हम किसी दूसरे तर्क का आश्रय ग्रहण करेंगे ।

सीबिस—यह ठीक है ।

साक्रटीज़—इस बात को हल करने की सब से सरल रीति यह है कि हम इस बात को देखे कि केवल

मनुष्य ही नहीं, किन्तु सारे जीव और वृक्ष के ऊपर, जो कि उत्पन्न होनेवाली वस्तु हैं, यह सिद्धान्त लागू है या नहीं ? क्या वह वस्तु, जिसकी विपरीत (विरुद्ध) भी कोई वस्तु है, अपनी विपरीत वस्तु से उत्पन्न होती है या नहीं ? विरुद्ध या विपरीत कहने से मेरा मतलब ऐसी चीज़ों से है जैसे माननीय और नीच, न्यायी और अन्यायी आदि। अब हमें यह देखना चाहिये कि क्या यह आवश्यक है कि ऐसी वस्तु अपनी वस्तु ही से उत्पन्न हो ? उदाहरण के लिये जो वस्तु बड़ी हो जाती है, वह पहिले अवश्य ही छोटी रहती है और पीछे बड़ी होती है।

सीबिस—हाँ।

साक्रटीज—और यदि कोई वस्तु छोटी हो जाती है तो पहिले वह बड़ी रहती है और तब छोटी होती है।

सीबिस—हाँ यह ठीक है।

साक्रटीज—और फिर जो अधिक कमज़ोर होता है वह पहिले अधिक शक्तिवाला होता है और जो अधिक तेज़ हो जाता है वह अवश्य ही पहिले धीमा होगा।

सीबिस—बेशक।

साक्रटीज—फिर बुराई भलाई से उत्पन्न होती है और अधिक न्याय अधिक अन्याय से उत्पन्न होता है।

सीबिस—ठीक है।

साक्रटीज—तो अब यह साफ ज़ाहिर है कि सब वस्तु अपने विरुद्ध से उत्पन्न होते हैं।

सीबिस—बहुत ठीक।

साक्रटीज—और प्रत्येक विरुद्ध वस्तु, जब एक दशा

से दूसरी दशा में पहुँचती है, और फिर उस दशा से अपनी पहिली दशा में पहुँचती है तब क्या उसे दो अवस्थाओं में हो कर नहीं जाना पड़ता ? बड़े से छोटे और छोटे से बड़े होने में वस्तु को घटना और बढ़ना पड़ता है और हम कहते हैं कि वह घटती या बढ़ती है। क्या हम यह नहीं कहते ?

सीबिस—हाँ यह ठीक है।

साक्रटीज—और इसी तरह फिर विभाग और जोड़ है, सर्दी और गर्मी है। असल में हम इस नियम को इतने लम्बे चौड़े शब्दों में नहीं कहते तथापि क्या यह नियम विश्वव्यापी नहीं है कि विरुद्ध विरुद्ध ही से उत्पन्न होते हैं और एक दशा से दूसरी दशा में जाते समय उसे उत्पन्न होने की अवस्था हो कर जाना होता है ?

सीबिस—हाँ, ऐसा ही होता है।

साक्रटीज—अच्छा तो जिस तरह जाग्रत् अवस्था की उलटी अवस्था निद्रावस्था है क्या वैसे ही जीवन की भी कोई उलटी अवस्था है ?

सीबिस—अवश्य है।

साक्रटीज—वह क्या है ?

सीबिस—मृत्यु।

साक्रटीज—तब यदि जीवन और मृत्यु दोनों एक दूसरे के उलटे हैं, तो वे एक दूसरे से उत्पन्न होते हैं। ये अवस्था दो (भिन्न अवस्था) हैं और इन दोनों अवस्थाओं के बीच में दो उत्पन्न होने की अवस्थाएँ हैं। ऐसा है कि नहीं ?

सीबिस—बेशक।

साक्रटीज—अब मैं अभी कहे हुए दो विरुद्ध जोड़ों में से एक विरुद्ध जोड़ और उसके उत्पन्न होने की अवस्था का वर्णन करूँगा और तुम मुझे दूसरे जोड़ को समझाना। नींद का उलटा है जागना। नींद से ही जाग्रत् अवस्था उत्पन्न होती है। उसके उत्पन्न होने की रीति इस प्रकार है कि पहिले सोना, फिर जागना। अब समझ गये ?

सीबिस—अच्छी तरह से।

साक्रटीज—अब तुम हमसे जीवन और मृत्यु के बारे में कहो। जीवन मृत्यु का उलटा है कि नहीं ?

सीबिस—हाँ है।

साक्रटीज—तो एक दूसरे से उत्पन्न होते हैं ?

सीबिस—हाँ।

साक्रटीज—तो जीवित से क्या उत्पन्न होता है ?

सीबिस—मरा हुआ।

साक्रटीज—और मरे हुए से क्या उत्पन्न होता है ?

सीबिस—हमको अवश्य यह कहना होगा कि मरे हुए से जीवित उत्पन्न होता है।

साक्रटीज—तो सीबिस, जीवित वस्तु और जीवित मनुष्य मरी हुई वस्तु और मरे हुए मनुष्यों से उत्पन्न होते हैं ?

सीबिस—यह साफ़ ज़ाहिर है।

साक्रटीज—तो हमारी आत्मा दूसरे लोक में (मरे पीछे) वर्तमान रहती है ?

सीबिस—मालूम तो ऐसा ही पड़ता है।

साक्रटीज—अच्छा, तो इन उत्पन्न होने वाली अव-

स्थाओं मे से मैं समझता हूँ कि एक अर्थात् मृत्यु अवश्यम्भावी है।

सीबिस—अवश्य ।

साक्रटीज़—तो अब हमें किस पथ का अनुसरण करना चाहिये ? क्या हम (इस अवश्यम्भावी अवस्था) मृत्यु के विरुद्ध नियमानुसार कोई उलटी अवस्था नियत नहीं कर सकें ? अथवा प्रकृति इस स्थान पर अपूर्ण है ? क्या मरने का कुछ उलटा नहीं है ?

सीबिस—अवश्य कुछ होना चाहिये ।

साक्रटीज—और वह क्या होना चाहिये ?

सीबिस—पुनर्जीवन ।

साक्रटीज़—और यदि पुनर्जीवन कोई वस्तु है तो यह मृत्यु से जीवन का उत्पन्न होना है।

सीबिस—अवश्य ।

साक्रटीज़—तो अब हम इस बात पर सहमत हैं कि जिस प्रकार जीवित से मरे हुए उत्पन्न होते हैं ठीक उसी प्रकार मरे हुओं से जीवित उत्पन्न होते हैं। किन्तु हम इस बात को पहिले ही मान चुके हैं कि यदि यह ऐसा है तो मरे हुए की आत्मा फिर से जीवन में आने से पहिले कहीं न कही अवश्य ही रही होगी, जहाँ से लौट कर वह फिर जीवन मे आयी ?

सीबिस—साक्रटीज़, मैं समझता हूँ कि हमारे विचार का यही निचोड़ है ।

साक्रटीज़—और सीबिस, मैं समझता हूँ कि हमारे विचार का परिणाम अनुचित नही हुआ। क्यों कि यदि उलटी वस्तु चक्र की तरह सदा उलटी वस्तु ही से

उत्पन्न न होतीं और यदि सीधी लकीर की तरह एक वस्तु दूसरे से उत्पन्न होती और दूसरी वस्तु पहिली से उत्पन्न न होती और चक्र की भाँति एक दूसरी से पैदा न होती तो अन्त में सब वस्तु एक ही प्रकार की हो जातीं, उनकी अवस्था भी एक ही हो जाती और परिणाम यह होता कि उनका उत्पन्न होना बन्द हो जाता।

सीबिस—आपका मतलब क्या है ?

साक्रेटीज—मेरा आशय समझना कुछ भी कठिन नहीं है। उदाहरण के लिये यदि एक विरुद्ध वस्तु वर्तमान रहे और दूसरी वस्तु जो उससे उत्पन्न होती है, जैसे यदि निद्रा हो और उसका उलटा जागना न हो, तो सारी प्रकृति एण्डिमियन की कथा की तरह निस्सार रह जायगी और उसका महत्त्व कुछ भी न रह जायगा। क्योंकि प्रत्येक जन केवल निद्रित अवस्था ही में रहेगा। और यदि सब वस्तु एक दूसरे से मिल जायँ और तमाम गड़बड़ हो जाय तो 'एनेक्सागोरस का अस्त व्यस्त' बहुत जल्द उपस्थित हो जाय। इसी प्रकार से, मेरे प्यारे सीबिस, यदि प्रत्येक प्राणी मर जाय और फिर कभी जीवित न हो तो क्या इसका अन्तिम परिणाम यह न होगा कि संसार में सब मरे ही मरे रह जायँगे और कोई भी जीवित न बचा रहेगा ? क्योंकि यदि प्राणी मृत्यु के सिवाय किसी दूसरी वस्तु से उत्पन्न हो तो यह बात अवश्यम्भावी है कि ऐसे सब प्राणी अन्त में मृत्यु से नष्ट हो जायँ। यह ठीक है या नहीं।

सीबिस—साक्रटीज़, मैं समझता हूँ कि जो आप कहते हैं वह बिल्कुल सत्य है।

साक्रटीज—हाँ सीबिस, तुम ठीक कहते हो। यह परिणाम ग़लत नहीं है। मरे हुए फिर से जीवित होते हैं और मरे हुओं की आत्मा का अस्तित्व नष्ट नहीं हो जाता। पुण्यात्मा (भले) मनुष्य की आत्मा इस स्थितिकाल में सुख से रहती है और पापी की आत्मा दुःख भोगती है।

सीबिस—इसके सिवाय यदि आपका यह सिद्धान्त कि 'हमारी विद्या केवल पुनःस्मरणमात्र है' सच हो, तो जिसका हम आज पुनःस्मरण कर रहे हैं उसे हमने पहिले कभी अवश्य देखा होगा। मनुष्य रूप धारण करने के पहिले हमारा आत्मा कहीं न कही अवश्य रहा होगा। इस लिये आत्मा को अमर मानने के लिये यह दूसरा प्रमाण है।

सिमिअस—किन्तु सीबिस, इसके प्रमाण क्या हैं। मुझे वे ठीक ठीक नहीं मालूम, उन्हें दुहरा दो।

सीबिस—एक बहुत अच्छा प्रमाण तो यह है कि यदि तुम मनुष्यों से ठीक ठीक तरह से प्रश्न करो तो वे अपने बारे में तुम्हे ठीक ठीक उत्तर देंगे। किन्तु यदि उनमें बुद्धि और ज्ञान न होता तो वे ऐसा नहीं कर सक्ते थे। फिर तुम उन्हें ऐसी वस्तु जैसे रेखागणित की आकृति दिखलाओ, और यह सिद्धान्त प्रमाणित हो जायगा।

साक्रटीज़—यदि इस प्रमाण से तुम कायल नहीं होते तो इस पर दूसरी रीति से विचार करो और

देखो कि तब भी तुम्हें विश्वास होता है या नहीं। मैं जानता हूँ कि तुम्हें इस बात पर सन्देह है कि ज्ञान का पुनःस्मरण कैसे किया जा सक्ता है।

सिमिअस—नहीं! मैं इस बात पर कुछ सन्देह नहीं करता। किन्तु मैं पुनःस्मरण वाले तर्क को फिर से सुनना चाहता हूँ। जो कुछ सीबिस ने कहा है उससे मुझे आपके सिद्धान्त की बहुत कुछ याद आगयी है और मुझे उसकी सत्यता पर विश्वास भी हो गया है। किन्तु मेरी उत्कट इच्छा है कि मैं आपसे सुनूँ कि आप इसका किस प्रकार प्रतिपादन करते हैं।

साक्रटीज—मैं इसका प्रतिपादन इस प्रकार करता हूँ। अच्छा, तुम इस बात को तो मानते ही होगे कि जिस वस्तु को तुम याद करते हो उसे तुम अवश्य पहिले से जानते होगे।

सिमिअस—अवश्य।

साक्रटीज—और क्या तुम इसे मानते हो कि जब ज्ञान आगे कही हुई रीति से प्राप्त होता है तब उसे 'पुनःस्मरण' कहते हैं? जब एक व्यक्ति किसी एक वस्तु को देखता या सुनता है या किसी दूसरी इन्द्रिय से उसके बारे में कुछ जानता है तब उसे केवल उसी वस्तु ही की याद नहीं आती किन्तु किसी दूसरी वस्तु का चित्र भी उसके मस्तिष्क में अङ्कित हो जाता है। और इस वस्तु का ज्ञान बिल्कुल भिन्न (प्रकारका) है। तो क्या हम यह नहीं कह सक्के कि जिस वस्तु का चित्र उसके मस्तिष्क में अङ्कित है, वह उसकी याद करता है?

सिमिअस—आपका मतलब क्या है?

साक्रटीज—मेरा मतलब यह है। एक मनुष्य का ज्ञान (आकार) एक वीणा के ज्ञान से भिन्न है। ऐसा है कि नहीं ?

सिमिअस—अवश्य।

साक्रटीज—और तुम यह भी जानते हो कि जब प्रेमिक वीणा या और कोई वस्तु, जिसे उसका प्रेमी काम में लाता था, देखता है तो उसमें यह ज्ञान (आकार) उत्पन्न हो जाता है। वे वीणा देखते है और उनके मस्तिष्क में उस व्यक्ति का चित्र खिंच जाता है जिसकी कि वह वीणा है। इसे स्मरण कहते हैं उदाहरण के लिये सिमिअस को देखने से सीविस की याद आ जाती है। इस प्रकार के अगणित उदाहरण दिये जा सकते हैं।

सिमिअस—हाँ, ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है।

साक्रटीज—क्या यह स्मरण नहीं है ? और विशेष कर उस समय यह अधिक स्पष्ट हो जाता है जब कि उस वस्तु को जिसे देख कर उसे याद हो आती है, उसने बहुत दिनों से देखा ?

सिमिअस—बेशक।

साक्रटीज—क्या यह सम्भव है कि एक घोड़े या वीणा का चित्र देख कर आदमी का स्मरण हो आवे ? या सीबिस का चित्र देख कर सिमिअस का स्मरण हो आवे ?

सिमिअस—सम्भव है।

साक्रटीज—और क्या यह सम्भव है कि सिमिअस का चित्र देख कर सिमिअस का स्मरण हो आवे ?

सिमिअस—इसमें कोई सन्देह नहीं।

साक्रटीज—तो इन सब दृष्टान्तों से यह प्रमाणित है कि

एक ही सी या भिन्न प्रकार की वस्तु देख कर किसी वस्तु का स्मरण हो आता है।

सिमिअस—जी हाँ।

साक्रटीज—किन्तु जब एक ही सी वस्तु देख कर वह किसी वस्तु की याद करता है तो क्या उसमें यह भाव न उठेगा कि उसका यह चित्र ठीक है या नहीं?

सिमिअस—अवश्य उठेगा।

साक्रटीज—अब इस कथन की सचाई पर विचार करो। क्या हम समता की स्थिति मानते हैं? लकड़ी के टुकड़ों और पत्थरों की समता नही, किन्तु इससे परे अनन्य-सम्बद्ध समता से मेरा तात्पर्य है। कोई ऐसी समता तुम मानोगे या नही?

सिमिअस—अवश्य मानेंगे।

साक्रटीज—क्या हम जानते है कि यह असम्बन्धातीत समता क्या है?

सिमिअस—अवश्य।

साक्रटीज—हमें उसका ज्ञान कहाँ से प्राप्त हुआ? क्या इस समता के मानने का कारण यह नहीं है कि हम लकड़ी या पत्थर के सम टुकड़े देखते हैं? क्या हम इन्हीसे अनन्य-सम्बद्ध समता का होना नहीं देखते, यद्यपि इन दोनों समताओं में भेद है? या तुम्हारा यह विचार है कि इन दोनों समताओं में भेद नहीं है। इस प्रश्न पर इस तरह विचार करो। क्या हमको ऐसा नही मालूम पड़ता कि कभी लकड़ी के टुकड़े बराबर हैं और कभी बराबर होने पर भी वे बराबर नहीं मालूम पड़ते?

सिमिअस—अवश्य, कभी कभी ऐसा हो जाता है।

साक्रटीज—किन्तु, क्या कभी समता को तुम असमता और असमता को समता भी समझ लेते हो ?

सिमिअस—नहीं साक्रटीज़ कदापि नहीं।

साक्रटीज—तब सम वस्तु और समता एक ही चीज़ नहीं हैं।

सिमिअस—नहीं।

साक्रटीज—किन्तु तबभी इन्हीं सम वस्तुओं से जो स्वयं समता से भिन्न हैं, तुमने समता का ज्ञान प्राप्त किया है।

सिमिअस—यह बिल्कुल सत्य है।

साक्रटीज—यह उनके सदृश या उनसे भिन्न है ?

सिमिअस—ठीक है।

साक्रटीज—किन्तु इससे कुछ मतलब नहीं निकलता। जब तक एक वस्तु देखने से तुम्हें दूसरी वस्तु की याद हो आती है तब तक 'स्मरण' विद्यमान है चाहे वे वस्तु एक ही प्रकार की हों या न हों।

सिमिअस—हाँ ठीक है।

साक्रटीज—अच्छा तब क्या लकड़ी के बराबर टुकड़े या इसी प्रकार की और वस्तु हम पर ऐसा ही प्रभाव डालती हैं ? क्या हमें वे उसी प्रकार सम मालूम पड़ती हैं जिस प्रकार अनन्य-सम्बद्ध समता बराबर मालूम पड़ती है? वे अनन्य-सम्बद्ध समता के बराबर होने योग्य हैं या नहीं ?

सिमिअस—वास्तव मे वे इस योग्य नहीं हैं।

साक्रटीज—क्या हम इस विषय पर सहमत हैं ? मान लो कि कोई व्यक्ति एक वस्तु देखता है और आप ही

आप कहता है कि 'यह वस्तु अमुक वस्तु के सदृश मालूम पड़ती है, किन्तु यह वस्तु उससे छोटी है, इससे यह उसके सदृश नहीं हो सक्ती, यह उससे न्यून है।' क्या इससे यह नहीं मालूम पड़ता कि इस व्यक्ति ने उस वस्तु को पहिले कभी देखा था जिसकी याद उसे इस वस्तु को देख कर आ जाती है, और जिसके लिये वह कहता है कि इससे वड़ी है ?

सिमिअस—उसने उस वस्तु को पहिले अवश्य देखा होगा।

साक्रटीज—तब क्या हममें बराबर वस्तु और समता के बारे में यही भाव नहीं उठते ?

सिमिअस—अवश्य उठते हैं।

साक्रटीज—तो बराबर वस्तु देखने से पहिले और यह मालूम करने से पहिले कि अमुक वस्तु के अमुक वस्तु से बराबर होने में थोड़ी ही कसर है, और वे न्यून हैं, हमें समता का ज्ञान होना चाहिये।

सिमिअस—अवश्य।

साक्रटीज—और हम इस बात पर भी सहमत हैं कि दृष्टि, कान या त्वचा या और किसी इन्द्रिय की सहायता के बिना हम समता की कल्पना नहीं कर सक्के।

सिमिअस—हाँ साक्रटीज़ तर्क के लिये ऐसा मान लिया जा सक्ता है।

साक्रटीज—कुछ भी हो, केवल इन्द्रियों द्वारा ही हम इस बात को जान सक्के हैं कि सब प्राप्त पदार्थ 'समता' के सदृश होने का उद्योग करते हैं किन्तु उससे न्यून हैं। क्या यह ठीक नहीं है ?

सिमिअस—ठीक है।

साक्रटीज़—तब पहिले इसके कि हमने देखना सुनना था और इन्द्रियों को काम में लाना आरम्भ किया, हममे अनन्य-सम्बद्ध और यथार्थ समता की प्रकृति का ज्ञान आ गया होगा। नहीं तो हम सम प्राज्ञ पदार्थों और अनन्य-सम्बद्ध समता का मिलान नहीं कर सक्के थे, और न यह जान सक्के थे कि सम-प्राज्ञ-पदार्थ सदा समता के बराबर होने की चेष्टा करते हैं, किन्तु वे उससे सदा न्यून रहते हैं।

सिमिअस—साक्रटीज़, हमारे कथनोपकथन का यही परिणाम निकल सक्ता है।

साक्रटीज़—क्या जन्म लेते ही हमें आँख, कान तथा और इन्द्रियाँ नहीं मिल जाती ?

सिमिअस—अवश्य।

साक्रटीज—तो इन इन्द्रियों के मिलने से पहिले ही हममें अनन्य-सम्बद्ध समता का ज्ञान होना चाहिये।

सिमिअस—हाँ।

साक्रटीज—तो ऐसा मालूम पड़ता है कि यह ज्ञान हमें जन्म लेने से पहिले ही मिल गया होगा।

सिमिअस—अवश्य पहिले ही मिला होगा।

साक्रटीज—अब यदि जन्म से पहिले हमें यह ज्ञान प्राप्त हुआ और उसको लिये हुए हम पैदा हुए, तो हम जन्म से पहिले और जन्म के समय भी केवल बराबर, उससे बड़ी या छोटी ही वस्तु को नहीं जानते थे किन्तु उस प्रकार की प्रत्येक वस्तु को भी जानते थे। हमारा वर्तमान तर्क केवल समता ही के बारे में

ठीक नहीं है। यह भलाई, सौन्दर्य, न्याय, पवित्रता, सारांश यह कि प्रत्येक 'सत्य' पदार्थ के सम्बन्ध में ठीक है इस कारण जन्म होने से पहिले ही हमने 'सत्य' का ज्ञान प्राप्त कर लिया होगा।

सिमिअस—आप ठीक कहते हैं।

साक्रटीज—हम इस ज्ञान को सदा प्राप्त किये हुए पैदा होते हैं। यदि प्रत्येक वार ज्ञान प्राप्त करने के वाद हम इसे न भूल जायँ तो जन्म भर हम इस ज्ञान को याद रखें। क्योंकि 'ज्ञान रखने' का अर्थ यह है कि ज्ञान सदा रहे और उसे खो न दिया जाय। जब हम यह कहते हैं कि हमने ज्ञान खो दिया तो क्या उसके यह अर्थ नहीं होता कि हम ज्ञान भूल गये?

सिमिअस—यही अर्थ होता है।

साक्रटीज—किन्तु मान लो कि जन्म लेने के समय हम उस ज्ञान को भूल गये जिसे हमने मरने से पहिले प्राप्त किया था और इन्द्रियों के द्वारा हम उस ज्ञान को, जिसे हम पहिले जानते थे, फ़िर से पा गये, तो जिसे हम विद्याध्ययन या सीखना कहते हैं, वह केवल अपने ज्ञान का फिर से प्राप्त करना मात्र है। क्या उसे पुनःस्मरण कहना उचित है?

सिमिअस—अवश्य।

साक्रटीज—क्योंकि किसी वस्तु को दृष्टि, श्रवणशक्ति या और किसी इन्द्रिय द्वारा समझना सम्भव है, और इससे किसी अन्य वस्तु का, चाहे यह वस्तु उसके समान हो या न हो, ध्यान हो सक्ता है, जिसके साथ

वह वस्तु थी, और जो भुला दी गयी है इसी कारण से मैं कह रहा हूँ कि दो में से एक बात सत्य होनी चाहिये। या तो हम इस ज्ञान को प्राप्त किये हुए ही जन्म लेते हैं और आजन्म इसे याद रखते हैं, या जन्म के बाद हम इसे सीखते हैं या यों कहो कि हम केवल उसका स्मरण भर करते हैं और हमारा ज्ञान केवल पुनःस्मरण मात्र है।

सिमिअस—हाँ साक्रटीज़, यह अवश्य ही सच है।

साक्रटीज—तो सिमिअस तुम कौन सा पसन्द करते हो? हम ज्ञान प्राप्त किये हुए ही जन्म लेते हैं या हम उन बातों का पुनःस्मरण करते हैं जिनको हमने जन्म के पहिले प्राप्त किया था?

सिमिअस—साक्रटीज़, इस समय मैं कुछ स्थिर नहीं कर सक्ता।

साक्रटीज—एक व्यक्ति जो कुछ बात जानता है क्या वह उस बात का वर्णन कर सक्ता है? इस पर तुम्हारी क्या सम्मति है।

सिमिअस—अवश्य साक्रटीज़, वह सम्मति दे सक्ता है।

साक्रटीज—और क्या तुम यह समझते हो कि जिन बातों पर हम इस समय विचार कर रहे हैं उनका हाल प्रत्येक व्यक्ति कह सक्ता है।

सिमिअस—साक्रटीज़, मेरी उत्कट इच्छा थी कि मैं ऐसा कर सक्ता, किन्तु मुझे भय है कि कल इस समय कोई भी ऐसा व्यक्ति जीवित न रह जायगा जो ठीक तौर से इस पर विचार कर सकै।

साक्रटीज़—तो सिमिअस तुम्हारा यह विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति इन बातों को नहीं जानता ?

सिमिअस—बेशक नहीं जानता ।

साक्रटीज—तो वे केवल उस बात का पुनःस्मरण भर करते हैं जिसे उन्होंने एक बार प्राप्त किया था ?

सिमिअस—अवश्य ।

साक्रटीज—और हमारी आत्मा को यह ज्ञान कब प्राप्त होता है ? यह मनुष्य जन्म धारण करने के बाद तो हो नहीं सक्ता ।

सिमिअस—कदापि नहीं ।

साक्रटीज—तो यह जन्म के पहिले प्राप्त किया गया था ।

सिमिअस—हाँ ।

साक्रटीज—तो सिमिअस, हमारा आत्मा पहिले, शरीर से अलग विद्यमान था, और मनुष्य रूप धारण करने के पहिले उसमें बुद्धि थी ।

सिमिअस—यदि जन्म के समय हमें यह ज्ञान न मिलता हो तो अवश्य ही आपका कथन सत्य है ।

साक्रटीज़—मेरे मित्र, और किस समय हम उसे खो सक्ते हैं ? अभी हम इस बात पर सहमत हो चुके हैं कि हम ज्ञान प्राप्त किये पैदा नहीं होते । तो क्या हम उसे उसी समय भूल जाते हैं जिस समय हम उसे प्राप्त करते हैं ? या तुम किसी दूसरी बात का सङ्केत करते हो ?

सिमिअस—मैं किसी और बात का सङ्केत नहीं कर सक्ता । पहिले मैं यह नहीं जानता था कि मैं व्यर्थ बक-वाद कर रहा हूँ ।

साक्रटीज़—सिमिअस, तो क्या यह सत्य नहीं है—जैसा कि हम बार बार कहते आये हैं यदि सौन्दर्य, भलाई आदि आकार सचमुच हैं और यदि हम प्रत्येक चेतन आकार से इनकी ओर सङ्केत करें जो कि पहिले हमारे पास थे, और जिन्हें कि अब भी हम अपने पास पाते हैं और उनका मिलान चेतन पदार्थों से करें, तो, जैसे कि इन सब की स्थिति पहिले थी, वैसेही हमारा आत्मा भी जन्म के पहिले विद्यमान था। किन्तु यदि वे सब विद्यमान न थे तो क्या हमारे तर्क व्यर्थ हो जायँगे? यदि ये आकार पहिले विद्यमान थे तो क्या इससे यह साबित नहीं होता कि हमारा आत्मा भी जन्म के पहिले विद्यमान था, और यदि ये भाव विद्यमान नहीं थे तो हमारे आत्मा की भी स्थिति नहीं थी?

सिमिअस—साक्रटीज़, आपने खूब कहा। मैं समझता हूँ कि जिस प्रकार (आकार) के लिये पहिले विद्यमान रहना आवश्यक है उसी प्रकार आत्मा के लिये भी (जन्म के) पहिले रहना आवश्यक है। साधारण प्रमाण होने के कारण हमारा यह सिद्धान्त कि, जन्म से पहिले हमारी आत्मा विद्यमान थी, प्रमाणित हो चुका। इसी प्रकार उन आकारों का होना भी सिद्ध हो चुका जिनके बारे में अभी आप बात कर रहे थे। मुझे यह बात बिल्कुल ही सत्य मालूम पड़ती है कि सौन्दर्य, भलाई आदि आकारों की स्थिति अवश्य है। मेरे लिये आपका दिया प्रमाण यथेष्ट है।

साक्रटीज़—किन्तु, सीबिस को तो अभी कायल करना बाक़ी है।

सिमिअस—यद्यपि वह वादानुवाद में बड़ा पटु है; तथापि मैं समझता हूँ कि वह सन्तुष्ट हो गया है। किन्तु इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि उसे विश्वास है कि जन्म से पहिले हमारा आत्मा विद्यमान था।

किन्तु साक्रटीज़, मेरी सम्मति में आपने अभी यह प्रमाणित नहीं किया है कि मरने के बाद भी हमारा आत्मा विद्यमान रहैगा। जैसा कि सीबिस ने कहा है। यह भय, कि मरने पर उसका अन्त हो जाता हो या वह वायु में मिल जाता हो, अब भी जैसा का तैसा बना है। यह मानते हुए भी कि आत्मा पैदा होता है और दूसरे दूसरे तत्वों से बनता है और शरीर मे प्रवेश करने से पहिले विद्यमान भी रहता है, इस बात के मानने के लिये क्या प्रमाण है कि जब वह शरीर में घुसने के बाद जब वह उसमें से निकलने लगना है तब उसका अन्त क्यो नहीं हो जाता?

सीबिस—सिमिअस, तुम ठीक कहते हो। हम समझते हैं कि आधी बात तो प्रमाणित हो चुकी अर्थात् यह प्रमाणित कर दिया गया कि जन्म से पहिले हमारी आत्मा विद्यमान थी किन्तु इस बात को भी प्रमाणित करना चाहिये कि यह हमारी मृत्यु के बाद भी बनी रहैगी। यदि प्रमाण को पूरा करना है तो इसे भी प्रमाणित करना चाहिये।

साक्रटीज—सीबिस और सिमिअस, यदि तुम इस पिछले प्रमाण को इस तर्क के साथ जोड़ लो कि प्रत्येक जीवन मृत्यु से उत्पन्न है तो यह बात प्रमाणित हो जाय कि आत्मा

अमर है। क्योंकि यदि आत्मा पहिले किसी अवस्था में रहता है और यदि वह जीव में पड़ कर जन्म पाता है, तो वह केवल मृत्यु ही से पैदा हो सक्ता है। जब हम जानते हैं कि उसे मृत्यु ही से फिर पैदा होना है ? तब क्या मृत्यु की अवस्था के बाद उसका विद्यमान रहना आवश्यक नहीं है सो, जो तुम कहते हो, वह बात पहिले ही प्रमाणित कर दी गयी है।

तब भी मुझे आशा है कि तुम दोनों इस विषय पर आगे वादानुवाद करने में प्रसन्न होगे। बच्चों की तरह तुम डरते हो कि मरने पर आत्मा को कहीं हवा न उड़ा लेजाय और विशेष कर यदि मनुष्य शान्त समय में न मर कर तूफान में मरा हो।

सीबिस ने हँसकर कहा—देखिये, आप यह समझ कर कि हम बच्चों की तरह डर रहे हैं, हमें कायल करने का उद्योग कीजिये। बल्कि यह न समझिये कि हम डरे हैं तो और अच्छा हो। कदाचित् हमारे भीतर कोई ऐसा बच्चा है जो इस प्रकार से डरा हुआ है। आइये उद्योग करें कि वह मृत्यु से न डरे। जिस प्रकार जूजू से डरना मूर्खता है उसी प्रकार उससे भी।

साक्रटीज़—तुम को चाहिये कि तुम तब तक प्रत्येक दिन बराबर उसे झाड़ फूँक दिया करो जब तक कि तुम उसका डर दूर न कर दो।

सीबिस—पर साक्रटीज़, जब तुम हमें छोड़े जा रहे हो तब हमें ऐसा अच्छा झाड़नेवाला कहाँ मिलेगा ?

साक्रटीज़—सीबिस, हैलस (ग्रीस) बड़ा देश है और

निस्सन्देह उसमें ढूँढ़ने पर तुम्हें गुणी व्यक्ति अवश्य मिलेंगे। तथा वर्वरों की भी अनेक जातियाँ हैं। तुमको इन सब में तन और धन लगा कर गुणियों की खोज करनी चाहिये। इससे बढ़ कर धन का सदुपयोग नहीं हो सक्ता और तुम को स्वयं आपस में भी ढूँढ़ना चाहिये कि कहीं तुम्हीं में तो कोई ऐसा गुणी नही है? क्योंकि तुमसे अच्छा गुणी मिलना बड़ा कठिन है।

सीबिस—यह तो किया जायगा किन्तु यदि आपकी इच्छा हो तो हम फिर अपने विषय पर आवें।

साक्रटीज—अवश्य। मेरी इच्छा क्यों न होगी?

सीबिस—तो बहुत ठीक।

साक्रटीज—अच्छा तो क्या हम ही स्वयं इस प्रश्न को अपने आप न करें? किस प्रकार की वस्तु का तहस नहस हो जाना सम्भव है, और किस प्रकार की वस्तु के विषय में हमें यह भय करना उचित है? तब हमें यह देखना चाहिये कि हमारी आत्मा उस प्रकार की वस्तुओं मे परिगणित है या नहीं, और तब हमें उचित है कि हम अपने आत्मा के बारे में चिन्तित हों या उससे निश्चिन्त हो जायें।

सीबिस—यह ठीक है।

साक्रटीज—मिश्र वस्तु ही के लिये यह भय है कि वह अपने भागों में विभाजित हो जाय अर्थात् जिन तत्वों से वह बनी है, वे तत्व अलग अलग हो जायें। तब क्या केवल एक वही वस्तु, जो किसी चीज़ से मिल कर नहीं बनी है, ऐसी नहीं मानी जा सक्ती कि उसका नाश नही हो सक्ता और उसका छितराना असम्भव है?

सीविस—मेरी सम्मति मे आपका कहना ठीक है।

साक्रटीज़—और जो वस्तु सदा एक ही अवस्था में रहती है, और जो वार वार वदलती नहीं, उसका ही अमिश्रित होना अधिक सम्भव है। किन्तु जो सदा वदलती रहती है और एक ही अवस्था मे रहती है, उसका मिश्र वस्तु होना ही अधिक सम्भव है।

सीविस—हाँ, मैं भी ऐसा ही समझता हूँ।

साक्रटीज़—अब हमें उस वात को देखना चाहिये जिसको हम पहिले वादानुवाद में कह रहे थे। क्या वह जीव, जिसको हम अपने तर्क मे अनन्य सम्वद्ध, कह चुके हैं, सदा एक ही सा रहता है और कभी नहीं वदलता? क्या सम्वन्धातीत वरावरी, सम्वन्धातीत सौन्दर्य, तथा अन्य प्रत्येक सम्वन्धातीत आकार परिवर्तनशील है? या, प्रत्येक उदाहरण में ये सब बिल्कुल ही एक से रहने के कारण बिल्कुल ही नहीं वदलते और उनमें किसी प्रकार का भी फेर वदल कदापि नहीं होता।

सीविस—उसको, साक्रटीज़, एक सा, विना वदलते हुए ही रहना चाहिये।

साक्रटीज़—और बहुत सी सुन्दर वस्तु, जैसे मनुष्य, घोड़े, कपड़े, तथा अन्य चीज़ों की क्या अवस्था है? तथा ऐसी ही अन्य वस्तु जिनके साथ गुण का नाम लगा हुआ है, चाहे वरावर हों चाहे सुन्दर हों या अन्य कुछ हों उनका क्या हाल है? क्या वे सदा एक ही से रहते हैं या कि उनकी दशा बिल्कुल विपरीत है? मतलब यह कि, क्या वे कभी भी, न तो अपने ही में और न अपने सम्वन्ध में एक से रहते हैं?

सीबिस—ये वस्तु कभी भी एक सी नहीं रहतीं ?

साक्रटीज—तुम उन्हें देख सक्ते हो, छू सक्ते हो, और दूसरी इन्द्रियों से उनको जान सक्ते हो। किन्तु अपरिवर्तन-शील को तुम केवल अपनी बुद्धि की गवेषणा ही से जान सक्ते हो। ऐसी, अर्थात् अन्त में कही गयी वस्तु अदृश्य है और कभी दिखलायी नहीं पड़तीं। यह ठीक है ?

सीबिस—यह बिल्कुल ठीक है।

साक्रटीज—तब हम यह मान लें कि दो प्रकार की स्थिति होती हैं। पहिली, जो दिखलायी पड़ती है और दूसरी जो बिल्कुल ही नहीं दिखलायी पड़ती।

सीबिस—जी हाँ।

साक्रटीज—अदृश्य वस्तु कभी बदलती नहीं और इन्द्रियों से दिखलायी देने वाली वस्तु सदा बदलती रहती है।

सीबिस—ठीक है।

साक्रटीज़—क्या हम अर्थात् मनुष्य, शरीर और आत्मा से नहीं बने हैं ?

सीबिस—हममें इन दो के सिवाय और कुछ नहीं है।

साक्रटीज—और हमारा शरीर किस प्रकार की स्थिति का है ?

सीबिस—दिखलायी देने वाली स्थिति का।

साक्रटीज़—और हमारा आत्मा किस स्थिति का है, अदृश्य की या दिखलायी देने वाली स्थिति का ?

सीबिस—यह मनुष्य के लिये अदृश्य है।

साक्रटीज़—और जब हम कहते हैं कि यह वस्तु दिख-

लायी पड़ती है या नहीं दिखलायी पड़ती, तो हमारा तात्पर्य यह होता है कि मनुष्य को दिखलायी या नहीं दिखलायी पड़ती।

सीबिस—हाँ, हमारा तात्पर्य यही होता है।

साक्रटीज—तो हम आत्मा के लिये क्या कहते हैं? वह दिखलायी पड़ता है या नहीं दिखलायी पड़ता?

सीबिस—वह नहीं दिखलायी पड़ता।

साक्रटीज़—तो क्या वह अदृश्य है।

सीबिस—हाँ।

साक्रटीज—तो आत्मा, शरीर की अपेक्षा अधिक अदृश्य है और शरीर की स्थिति दिखलायी पड़नेवाली है।

सीबिस—अवश्य ही साक्रटीज़, ऐसा ही होना चाहिये।

साक्रटीज—और क्या हमने यह भी नहीं कहा कि जब आत्मा शरीर द्वारा किसी वस्तु की जाँच कराता है और दृष्टि, कान या अन्य किसी इन्द्रिय का उपयोग करता है-क्योंकि शरीर द्वारा जॉच के अर्थ इन्द्रियो के द्वारा कराना है-तब वे सब इसे ऐसी वस्तु के निकट घसीट ले जाती हैं जो कभी भी एक सी नहीं रहती और इधर उधर अन्धों की तरह भटकती रहती है तथा एक पियक्कड़ मनुष्य के समान वह इन सदा बदलने वाली वस्तुओं के कारण घबड़ा और चकचौंधिया जाता है।

सीबिस—अवश्य।

साक्रटीज—किन्तु जब आत्मा अकेले ही किसी वस्तु की जॉच करता है तब वह पवित्र, अनन्त, अविनाशी,

तथा अपरिवर्तनशील वस्तु के निकट जाता है जिनके समान वह स्वयं है। जैसे ही वह अकेला कोई जाँच करने लगता है वैसे ही वह इन वस्तुओं के सन्निकट जा सक्ता है। तव वह और अधिक नहीं भटकता और अपरिवर्त्तित रूप से उनके साथ रहता है क्योंकि जिनके साथ उसका काम है वे स्वयं न वदलने वाले हैं और क्या आत्मा की इसी अवस्था को 'ज्ञान' नहीं कहते?

सीविस—साक्रटीज़, वास्तव में आप यथार्थ कहते हैं।

साक्रटीज़—तुम्हारी राय में वर्तमान और पहिले तर्क को ध्यान मे रखते हुए, आत्मा अधिकत्तर किस स्थिति के समान है?

सीविस—साक्रटीज़, मैं समझता हूँ कि इस अन्वेषण के वाद, मूर्ख से भी मूर्ख व्यक्ति इस वात को मान लेगा कि आत्मा परिवर्तनशील की अपेक्षा अपरिवर्तनशील के, कहीं अधिक समान है।

साक्रटीज—और शरीर?

सीविस—वह परिवर्तनशील के समान है।

साक्रटीज़—तो भी इस विषय पर दूसरी तरह से विचार करो। जव आत्मा और शरीर मिल गये हैं, प्रकृति ने ऐसा प्रवन्ध कर दिया है कि इनमें से एक तो दास है, दूसरा स्वामी। एक तो आज्ञापालन करता है और दूसरा आज्ञा देता है। मुझे फिर वतलाओ कि इनमें से कौन दैवी है और कौन क्षणभङ्गुर है? क्या तुम यह नहीं मानते कि साधारणतः दैवी ही आज्ञा देता है और अधिकारी

होता है तथा क्षणभङ्गुर स्वभावतः ही आज्ञापालन करता है और दास होता है?

सीबिस—मैं मानता हूँ।

साक्रटीज—तब आत्मा इनमें से कौन है?

सीबिस—यह तो बिल्कुल ही साफ़ है। आत्मा दैवी है और शरीर क्षणभङ्गुर है।

साक्रटीज—सीबिस अब मुझे बतलाओ कि जो कुछ हम ने कहा है उसका यही मतलब है कि नही कि आत्मा अविनाशी, संज्ञावान्, अपरिवर्तनशील, सदा एक समान तथा अजर है और शरीर क्षणभङ्गुर, नाना रूपवान्, नाश होने वाला और परिवर्तनशील है? क्या हम और किसी तर्क से यह साबित कर सक्के है कि ऐसा नहीं है?

सीबिस—नही कोई ऐसा तर्क हमारे ध्यान में नहीं आता।

साक्रटीज़—तब क्या इससे यह नहीं मालूम पड़ता कि शरीर ही का स्वभाव शीघ्र नष्ट होजाने का है तथा आत्मा का स्वभाव कभी नष्ट न होने का है।

सीबिस—बेशक।

साक्रटीज़—तुम इस बात को देखते हो कि जब मनुष्य मर जाता है तब उसका दिखलायी देनेवाला भाग अर्थात् शरीर जो दिखलायी देनेवाले संसार मे है, और जिसे हम 'शव' (मुर्दा) कहते हैं, जिसका नष्ट होना अवश्यम्भावी है, वह भी एकाएक नष्ट नहीं हो जाता। वह बहुत समय तक जैसा का तैसा बना रहता है और विशेष कर उस दशा मे जब वह व्यक्ति, जिसका वह शव है, युवावस्था या अच्छी दशा में मरा हो और जब

मरते ही शव को मसाले में लपेट देते हैं तव तो वह बहुत अधिक समय तक, मिश्रदेश की ममी के समान, जैसा का तैसा ही धरा रहता है। यदि शरीर नष्ट भी हो जाय तो उसके कुछ विशेष भाग जैसे हड्डी और पिंडिका तो प्रायः अमर ही रहती हैं। यह ठीक है?

सीविस—विल्कुल ठीक है।

साक्रटीज़—और तव क्या हम जनरव की इस वात पर विश्वास कर सके हैं कि वह आत्मा, जो अदृश्य है, और जो यहाँ से अपने ही समान पवित्र, ज्योतिर्मय और अदृश्य स्थान को, अर्थात् हैडिस में स्थित गुणागार और ज्ञानमय ईश्वर के पास जाता है (जहाँ यदि ईश्वर का अनुग्रह हुआ तो मेरा आत्मा भी शीघ्र ही जायगा) क्या वही शरीर छोड़ते ही नष्ट हो कर वायु द्वारा छिन्न भिन्न हो जाता है? नहीं प्यारे सीविस और सिमिअस ऐसा समझना उचित नहीं है। जो आत्मा शुद्ध है और जीवनकाल में जो शरीर से भरसक कम सम्वन्ध रखता था, मरने के वाद वह शरीर की भरसक वहुत कम गन्ध साथ ले जाता है। मैं तुम्हें वतलाऊँगा कि उस आत्मा का मरने के वाद क्या हाल होता है जो जीवनकाल में शरीर से घृणा करता रहा है, और अपने आपही मे प्रसन्न रहा है, क्योंकि शुद्ध आत्मा का यही मनन है, और इसका तात्पर्य यह है कि उसने ठीक ठीक तौर से ज्ञान का साधन किया है और वास्तव में मरने का अभ्यास किया है *। क्या

---

* शरीर से आत्मा का भिन्न होना ही मृत्यु है। इस कारण जो आत्मा जीवनकाल में शरीर से भिन्न होने का (अर्थात् समाधि लगाने का) अभ्यास करते हैं, वे वास्तव में मरने का अभ्यास करते हैं।

अनुवादक.

इस पिछले कहे गये अभ्यास को मरने का अभ्यास नहीं कहते ?

सीबिस—बेशक, इसे यही कहना उचित है।

साक्रटीज़—तब क्या वह आत्मा, जो ऐसी दशा में है उस स्थान में नहीं जाता जो उसके समान ही दैवी, अविनाशी और ज्ञानमय है। जहाँ कि भूल, अज्ञान, भय, मनोविकारों तथा उन अन्य अवगुणों से उसका छुटकारा हो जाता है जो मनुष्यमात्र के भाग्य में होते हैं और वह सुखी हो जाता है तथा बचे हुए समय में वह देवताओं के साथ रहता है, जैसा कि लोग बहुधा कहते हैं कि दीक्षित आत्मा रहता है। सीबिस, क्या हम इस बात को मान लें ?

सीबिस—अवश्य मानना पड़ेगा।

साक्रटीज़—किन्तु यदि वह शरीर छोड़ने के समय अपवित्र और अशुद्ध हो, और शरीर के साथ रहने के कारण उससे प्यार करने लगा हो, और केवल उसीकी सेवा करने लगा हो, और शरीर की कामनाओं और सुखो के कारण वह उनसे लिप्त हो गया हो, यदि उसने शारीरिक वस्तु, जो छुई जा सक्ती हो, देखी जा सक्ती हो, खायी जा सक्ती हो, पियी जा सक्ती हो या जो कुछ मनुष्य की वासनाओं में आ सक्ती हो, उनके सिवाय तत्त्व या सत्य को बिल्कुल खोज न की हो, यदि उसने ज्ञान से पहचाने जाने वाले, दर्शन से समझी जा सकने वाले और नेत्रों से अदृश्य वस्तु से घृणा और भय करना सीखा है, तो क्या तुम समझते हो कि ऐसी अवस्था में, मरने के समय वह विशुद्ध और अवगुणों से अमिश्रित होगा ?

सेबिस—नहीं कदापि नहीं।

साक्रटीज़—मैं समझता हूँ कि शरीर के साथ अत्यन्ताधिक रहने से और उसके लिये अधिक चिन्ता करने से उसका स्वभाव शारीरिक हो जाता है। वह उसमें विंध जाता है।

सीबिस—हाँ।

साक्रटीज़—और मेरे मित्र, अवश्य ही यह कष्टप्रद, अरोचक, पार्थिव और दिखलायी देनेवाला है। इसीके कारण आत्मा का मोह संसार में रह जाता है और वह इस स्थूल (दिखलायी पड़नेवाले) संसार के पास घसिट आता है, क्योंकि वह हेडिस में जाने से डरता है। यह कहा जाता है कि क़बरों और समाधि मन्दिरों के आस पास बहुधा ऐसे आत्मा घूमा करते हैं, जहाँ उनकी छाया देखी गयी है। यह उन आत्माओं के भूत होते हैं जो शरीर छुटने के समय अपवित्र होते हैं और अब भी स्थूल संसार से मोह रखने के कारण वे इस तरह दिखलायी पड़ते हैं।

सीबिस—सम्भव तो यही है।

साक्रटीज़—सीबिस, यही सम्भव है, और ये आत्मा भले व्यक्तियों के नहीं है, किन्तु उन बुरे व्यक्तियों के है जो अपने जीवनकाल में दुष्ट थे और अब जिनके आत्माओं को दण्डस्वरूप इन स्थानों मे भटकना पड़ता है। ये तब तक भटकते है जब तक कि इस शारीरिक कामना के कारण उनके आत्मा फिर किसी शरीर में बद्ध नहीं हो जाते।

कदाचित् इस बार उनके आत्मा ऐसे पशुओं के

शरीर में पड़ते हैं जिनकी आदतें उनके जीवनकाल की आदतों से मिलती जुलती है।

सीबिस—साक्रटीज़, इससे आपका क्या तात्पर्य है ?

साक्रटीज़—मेरा मतलब यह है कि जो व्यक्ति मनमाने दुराचार करते हैं और जो पियक्कड़ होते हैं, उनके आत्मा गधों के शरीर में प्रवेश करते हैं, क्या तुम इसे ऐसा नहीं मानते ?

सीबिस—अवश्य ही ऐसा ही होना सम्भव है।

साक्रटीज—जो व्यक्ति अन्याय करते है, अत्याचार करते हैं, डकैती करते हैं, उनके आत्मा भेड़ियों, बाज़ और चीलों के शरीर में प्रवेश करते हैं। इनके सिवाय उनके आत्मा और कहाँ जा सक्ते हैं ?

सीबिस—अवश्य, वे इन्हीं पशुओ के शरीर में जाते है।

साक्रटीज—इससे यह बिल्कुल साफ़ तौर से मालूम पड़ जाता है कि प्रत्येक आत्मा किधर जाता है, प्रत्येक आत्मा अपने स्वभाव के पशु मे प्रवेश करता है।

सीबिस—बेशक आप ठीक कहते हैं।

साक्रटीज—और इनमे से सब से अधिक सुखी आत्मा वे है जो सर्वोत्तम स्थान पर जाते हैं। ये उन व्यक्तियों केसे आत्मा है जिन्होंने अपने जीवनकाल में साधारण और सामाजिक पुण्य, अर्थात् न्याय और संयम का पालन किया है। जिन्होंने यह गुण अभ्यास और स्वभाव से सीखा है और इसके सीखने में दर्शन या ज्ञान की सहायता नहीं ली।

सीबिस—और वे सब से अधिक सुखी क्यो हैं ?

साक्रटीज़—क्योंकि यह सम्भव है कि वे सरल और सुशील स्वभाव के पशुओं में, जैसे शहद की मक्खी, वर्र या चींटी के शरीर में, प्रवेश कर जायँ और यह भी सम्भव है कि वे फिर से मनुष्य ही का शरीर धारण करलें और इनसे योग्य नागरिक वन जायँ।

सीबिस—ठीक है।

साक्रटीज़—किन्तु दार्शनिक या ज्ञान के प्रेमी के सिवाय, जो कि मरने के समय विल्कुल पवित्र है, और कोई भी देवताओं की श्रेणी में परिगणित नहीं होने पाते। और इसी कारण से सच्चा दार्शनिक सदा संयम से रहता है और शारीरिक सुखों से दूर भागता है और कभी भी अपने को सुखों में मग्न नहीं होने देता। वह अपनी सम्पत्ति की वर्वादी या अपनी दरिद्रता से नहीं डरता, जैसा कि जन-समुदाय डरा करता है, और न वह शक्ति या आदर मान के भूखे लोगों की तरह दुष्टों के अनादर या अपमान ही से डरता है। इन कारणों से वह संयमी नही रहता।

सीबिस—साक्रटीज़, यदि वह इन कारणों से संयमी रहे तो यह उसके लिये ज़रा कठिन जान पड़ेगा।

साक्रटीज़—अवश्य ही ऐसा जान पड़ेगा। और इसी कारण से वे, जो अपनी आत्मा के सम्बन्ध में कुछ भी सावधान रहते हैं, और जो अपना जीवन अपने शरीर की बनावट और सजावट में नहीं व्यतीत करते, ऐसे लोगों से जो उनके रास्ते पर नही चलते, यह सोच कर किनारा कस लेते हैं कि ऐसे लोग अपने जीवन का उद्देश्य नही जानते। वे स्वयं उधर ही जाते हैं जिधर उनका दर्शन उन्हें लेजाता है, क्योंकि वे इस वात पर विश्वास करते हैं कि न तो

दर्शन के आज्ञा की अवज्ञा करनी चाहिये और न उसके पवित्र करने और छुटकारा देने की शक्ति ही की।

सीबिस—यह क्यों, साक्रटीज़?

साक्रटीज—मैं तुम्हें वतलाता हूँ। ज्ञान के प्रेमी जानते हैं कि जब आत्मा दर्शन के सन्निकट जाता है तब वह शरीर से बॅधा रहता है और उससे लिप्त रहता है। वह, बिना अपने बन्दीगृह की सहायता के, यह जानने में असमर्थ रहता है कि शरीर क्या है? और वह अज्ञान के सघन अन्धकार में छिपा रहता है। दर्शन यह देखता है कि इस कैद के बारे में जो सब से भयानक बात है वह यह है कि यह क़ैद वासना के कारण हुई है और स्वय क़ैदी (आत्मा) अपने को कैद कराने में सहायक हुआ है। मैं फिर कहता हूँ कि ज्ञान के प्रेमी आत्मा को इस अवस्था में पाते हैं, और धीरे धीरे उसको दिलासा देते हैं और उसको इस क़ैद से छुटकारा दिलाने के लिये उद्योग करते हैं। उसे बतलाते हैं कि जो कुछ आँख से दिखलायी पड़ता है, या जो कान से सुनाई पड़ता है अथवा जो और इन्द्रियों से जाना जाता है वह सब मिथ्या है। वे उसे समझाते हैं कि इन्द्रियों से दूर ही रहना चाहिये और जब तक कि अत्यन्तावश्यक न हो, उनका उपयोग न करना चाहिये। और वे उसे, स्वयं अपने पर भरोसा करने, स्वयं अपने बल पर विश्वास करने, तथा अपनी सच्ची स्थिति पर, जिसे वह स्वयं समझता है दृढ़ रहने के लिये ढाढ़स दिलाते हैं। वे उसे समझाते हैं कि जो वस्तु परिवर्तनशील हैं, तथा जिनका ज्ञान उसे इन्द्रियों द्वारा होता है, उनकी सत्यता पर कदापि विश्वास मत करो क्योंकि ये वस्तु

दिखलायी पड़ती हैं और इनका ज्ञान इन्द्रियों को हो सक्ता है। जो कुछ वह स्वयं देखता है, वही सच है, क्योंकि वह ज्ञान द्वारा देखा गया है और वह अदृश्य है। सच्चे दार्शनिक का आत्मा यह सोचता है कि इस छुटकारे से अपने को रोकना ठीक नहीं है, इस कारण से वह अपने को भरसक शारीरिक सुख, दुःख, कामना और भय से दूर रखता है। क्योंकि वह यह समझता है कि जब एक व्यक्ति खूब सुख, दुःख, भय या कामनाओं का भोग कर रहा है तो वह केवल उससे निकलने वाले नतीजों, जैसे बीमारी या सुख से पैदा होने वाले क्षय ही को नहीं भोगता, किन्तु वह सब से बड़े और भयङ्कर बुराई का शिकार हो जाता है, जिसका उसे ज्ञान नहीं होता।

सीबिस—साक्रटीज़, आपका मतलब क्या है?

साक्रटीज—मेरा मतलब यह है कि जब किसी व्यक्ति का आत्मा अति दुःख या सुख पाता है तो वह लाचार हो कर यह सोचने लगता है कि इन सुखों का आनन्द या दुःखों की यातनाएँ सत्य हैं (किन्तु वास्तव में ये यातनाएँ मिथ्या होती है)। ऐसी वस्तु मुख्य कर दिखलायी पड़ने वाली होती है।

सीबिस—जी हाँ।

साक्रटीज़—और क्या इस अवस्था में आत्मा शरीर से सब से अधिक बँधा नहीं रहता?

सीबिस—यह कैसे?

साक्रटीज़—क्योंकि प्रत्येक सुख या दुःखमें एक प्रकार की कीलें होती है जो उसे शरीर से जड़ देती है और उसका

स्वभाव शारीरिक बना देती हैं और वह समझने लगती है कि जो कुछ शरीर कहता है वही सच है। और शरीर के समान सोचने तथा सुख पाने के कारण, मेरी समझ से, वह लाचार होकर शरीर ही की तरह जीवन व्यतीत करने लगता है। जब वह शरीर को छोड़ता है, तब (उससे लिप्त रहने के कारण) दूषित रहता है और परलोक में जाकर शुद्ध नहीं हो सक्ता। इस कारण वह फिर शरीर में प्रवेश करता है और बीज की तरह उसमें जड़ पकड़ती हैं। इस कारण वह पवित्रता एवं एक समानता से बिल्कुल भिन्न हो जाता है।

सीबिस—साक्रटीज़, आप ठीक कहते हैं।

साक्रटीज़—सीबिस, इन्हीं कारणों से ज्ञान के सच्चे प्रेमी संयमी और वीर होते हैं। उनके वीर होने का कारण संसारी कारण नही होता। या तुम समझते हो कि वे इसी कारण से ऐसे होते हो?

सीबिस—मैं ऐसा नहीं समझता।

साक्रटीज—अवश्य ही ऐसा नहीं है। दार्शनिक का आत्मा यह समझता है कि दर्शन का यह काम है कि वह आत्मा को कैद से छुड़ावे। वह समझ जायगा कि उसे सुख दुःख की उस कैद में फिर से न जकड़ जाना चाहिये जिससे कि दर्शन उसको छुड़ा रहा है। तथा पेनेलपी की तरह काम बनाने के बदले वह अपना काम विगाड़ता रहे जिस प्रकार वह जाल तोड़ने के बदले जाल को और दृढ़ करता जाता था। वह इन वस्तुओं से शान्ति पाता है और ज्ञान को पथप्रदर्शक मान कर सदा उसके अनुसार चलता है

तथा जो कुछ दैवी और सत्य है तथा जो उनसे प्रतिपादित है, उसी पर विचार करता है। इस कारण वह सोचता है कि इस जीवन में उसे (इसी प्रकार) रहना चाहिये तथा उसे विश्वास रहता है कि मरने के बाद वह अपने ही समान स्थान पर जायगा और मनुष्यसम्बन्धी दुःखों से छुटकारा पावेगा। सिमिअस और सीबिस, वह आत्मा जिसने इन बातों का साधन किया है और इनकी शिक्षा पायी है कदापि इस बात का भय न करेगा कि मरने के बाद वह हवा द्वारा छिन्न भिन्न हो जायगा तथा उसकी स्थिति ही नष्ट हो जायगी।

इसके बाद बहुत देर तक सन्नाटा रहा। ऐसा मालूम होता था कि स्वयं साक्रटीज़ अपने तर्कों की उधेड़ बुन में मग्न हैं। इसी प्रकार हममें से बहुत से उसी उधेड़ बुन में लगे रहे। सिमिअस और सीबिस आपस में थोड़ी देर तक बातें करते रहे, जब साक्रटीज़ ने उन्हें बातें करते देखा तब वे बोले—

साक्रटीज़—क्या तुम समझते हो कि हमारे तर्क अपूर्ण हैं? यदि इसकी पूरी पूरी परीक्षा की जाय तो मालूम होगा कि अब भी इसमें सन्देह और तर्क की गुंजायश है। यदि तुम किसी दूसरी बात पर वादानुवाद करते हो, तो मुझे कुछ कहना नहीं है, किन्तु यदि तुम्हें इस तर्क के मानने में कोई कठिनता हो तो बिना सङ्कोच किये तुम मुझे उसको बतला दो। और यदि तुम चाहते हो कि यह तर्क और भी अच्छी तरह समझाया जाय तो तुम अपनी सम्मति कहो और यदि तुम्हारी यह धारणा हो कि मेरे रहने से तुम्हारे वादानुवाद में अधिक सफलता होगी

तो मुझे भी अपने वादानुवाद में साथ साथ चलने दो।

सिमिअस—अच्छा साक्रटीज़, मैं तुमसे सच्ची बात कहता हूँ। हम में से हर एक को एक न एक कठिनता है और प्रत्येक एक दूसरे से आपसे पूछने को कह रहा है। हम लोग आपका कथन सुनने को उत्सुक थे, किन्तु हम लोग आपको इस समय कष्ट देने मे इस कारण हिचकते हैं कि कदाचित् इससे आप इस समय अप्रसन्न न हों।

सक्रटीज़ ने मुस्कुराकर कहा—प्यारे सिमिअस, जब मैं तुम्हें ही इस बात को न समझा सका कि मैं अपनी दशा को विपत्ति नहीं समझता तब मैं दूसरों को समझाना बड़ा कठिन समझता हूँ। तुम कदाचित् समझते हो कि मैं इस समय सदा से अधिक चिड़चिड़ा हो गया हूँ। तुम मुझको राजहंसों से भी छोटा ईश्वर का दूत समझते हो, जो (बलि देने के लिये) पकड़े जाने पर इस खुशी मे और भी अधिक ज़ोर से गाते हैं कि वे अब ईश्वर के सन्मुख जानेवाले हैं जिनके कि वे सेवक हैं। मनुष्य स्वयं मृत्यु से भय करता है इस लिये वह झूठ मूठ कह दिया करता है कि राजहंस अपनी मृत्यु को आयी जान कर रो रहा है और इसी कारण ज़ोर से चिल्ला रहा है। वे भूल जाते हैं कि कोई भी पक्षी, न बुलबुल, न अबाबील जिन्हें वे कहते हैं कि दुःख के कारण रोते हैं, जब तक कि वे भूखे, जड़ाये हुए या दुःखी होते हैं, कदापि नहीं जाते। किन्तु मेरा मत है कि ये पक्षी या राजहंस—दुःख के कारण नहीं चिल्लाते। मेरा विश्वास है कि उनमें भविष्य वाणी करने और होने वाली भली बातों को जान लेने की शक्ति है, क्योंकि वे

अपालो के पक्षी हैं, और इसी कारण वे अपने मृत्यु के दिन हर्ष प्रकाश करने के लिये सब से अधिक गाते है। मेरा विश्वास है कि मैं भी राजहंस का सहयोगी दास हूँ और उसी ईश्वर का अनन्य सेवक हूँ और मुझे मेरे स्वामी ने राजहंस से कम भविष्यवाणी करने की शक्ति नहीं दी है। मैं मरने के समय उनसे कम सुखी नहीं हूँ। इस कारण जब तक कि मृत्यु दण्ड को देखने वाला अधिकारी तुम्हें मुझसे बात चीत करने दे तुम बराबर मुझसे बात चीत कर सके हो और मुझसे प्रश्न पूछ सके हो।

तिमियस—बहुत अच्छा, मैं आपसे अपनी कठिनता कहूँगा और सीबिस आपको बतलावेगा कि वह आपके प्रश्न से क्यों असन्तुष्ट है। मैं समझता हूँ, और मेरा विश्वास है कि आप भी इस बात को मानते हैं कि इन विषयों का स्पष्ट ज्ञान इस जीवन में होना अतिकठिन या असम्भव सा है। तब भी मेरी धारणा यह है कि वह व्यक्ति जो इन बातों पर भरसक विचार नहीं करता और किसी कठिन स्थान पर आये बिना ही उसे छोड़ देता है, उस का जीवन निरर्थक ही है। हमारा कर्तव्य है कि हम दो में से एक बात करें। चाहे तो हम इन बातों की सत्यता सीखें और चाहे इनका अन्वेषण करें या यदि यह असम्भव हो तो हम सर्वमान्य मतों के बेड़े पर चढ़ कर जीवनयात्रा का साहस करें, जब तक कि कोई अधिक मज़बूत जहाज, अर्थात् दैवी वाणी न मिले, जिस पर हम अपनी यात्रा निश्चिन्त हो कर छोड़ दें। जो कुछ आपने कहा है इसके बाद मैं आपसे प्रश्न पूछने में लज्जित नहीं होता और तब मैं आगे अपने को इस बात के लिये दोषी न

बना रखूँगा कि मैंने इस समय आपसे यह बात न पूछी। हम (सीबिस और मैं) आपके तर्क पर वादानुवाद करते थे और हमने उसे यथेष्ट नहीं पाया।

साक्रटीज़—मैं कह सक्ता हूँ कि तुम ठीक कहते हो, पर मुझे बतलाओ कि तुमने उसे कहाँ ठीक नही पाया?

सिमिअस—मुझे यह इस लिये यथेष्ट नही मालूम होता कि यही तर्क वीणा, उसके स्वर तथा उसके तारों के लिये उपयोग में लाया जा सक्ता है। यह कहा जा सक्ता है कि बैठाये हुए वीणा के स्वर अदृश्य, अशारीरिक और बहुत सुन्दर तथा स्वर्गीय हैं। किन्तु स्वयं वीणा और उसके तार शारीरिक हैं, उनका स्वभाव शरीर के समान है, पार्थिव है तथा नश्वर है। अब मान लीजिये कि वीणा तोड़ डाला गया, तार काट डाले गये, तब कोई भी व्यक्ति आपके तर्क का उपयोग कर यह कह सक्ता है कि स्वर नष्ट नहीं हो सक्ता और वह अब भी वर्त्तमान है, यह तर्क असत्य है क्योंकि यह नहीं हो सक्ता कि स्वर, जो स्वर्गीय और अविनाशी है तथा इनसे मिलता जुलता है, वीणा के टूट जाने पर बना रहे। वह वीणा के टूटते ही नष्ट हो गया। कदाचित् वह व्यक्ति तर्क में कहे कि स्वर को कहीं न कहीं विद्यमान रहना चाहिये, और स्वर नष्ट होने के पहिले वीणा की लकड़ी और तार सड़ जायँगे। मैं समझता हूँ, साक्रटीज़, कि आप भी इस बात को जानते होंगे। हम में से कुछ लोग इस बात पर विश्वास करते हैं कि हमारा आत्मा उन तत्त्वों के समूह से बना है जिनसे हमारा शरीर बना है। मानो जिस प्रकार गर्मी और सर्दी, सूखी और तर, और इसी प्रकार की वस्तु उचित भागों में मिलने से

मिली रहती है, उसी प्रकार, हमारा शरीर और आत्मा मिले हुए हैं और वर्त्तमान हैं। अब, जब आत्मा स्वर संयोग है तब यह स्पष्ट है कि जब शरीर उचित भाग से अधिक बढ़ाया जाय अथवा रोग या अन्य विपत्ति के कारण अधिक कस जाय, तो आत्मा, स्वर्गीय होने पर भी, तत्काल नष्ट हो जायगा। जिस प्रकार ऐसे समय में स्वर भंग हो जाया करता है, या कारीगरी के कामों में जैसा होता है। जो कुछ प्रत्येक शरीर का बच रहता है वह तब तक बचा रहेगा जब तक कि वह सड़ या जला दिया न जाय। तब हम उस व्यक्ति को क्या उत्तर देंगे जो यह कहता है कि आत्मा शरीर के तत्त्वों का समूह है जो मृत्यु होते ही सर्व प्रथम नष्ट हो जाता है? साक्रटीज़ ने अपने स्वभावानुसार हमारी ओर देखा और मुस्कराकर बोले—

साक्रटीज—सिमिअस का आक्षेप ठीक है। यदि तुममें से कोई उत्तर देने में मुझसे अधिक चतुर है—तो उत्तर क्यों नहीं देता? सिमिअस बलवान् आक्रमण करने वाले की तरह है। किन्तु उसे उत्तर देने के पहिले हमे सीबिस का भी आक्षेप सुन लेना चाहिये, और तब यदि वे दोनों ठीक हो तो हम उनका कहना मान लेंगे और यदि उनमें त्रुटि देखेंगे तो अपने मत के समर्थन के लिये तर्क करेंगे। अच्छा तो सीबिस तुम भी अपनी कठिनाई कह डालो।

सीबिस—मैं अपनी कठिनाई बतलाता हूँ। मेरी समझ से तर्क अभी जहाँ का तहाँ है और पहिले आक्षेप के लिये उसमें अभी भी जगह है। आपने इसे पूर्णरीति से प्रमाणित कर दिया है कि हमारा आत्मा मनुष्य शरीर मे आने से पहिले वर्त्तमान था। मैं इस बात को मानता हूँ।

किन्तु मैं इस बात का कायल नहीं हूँ कि वह हमारे मरने के बाद भी वर्त्तमान रहेगा। मैं सिमिअस के इस आक्षेप से सहमत नही हूँ कि आत्मा शरीर से अधिक शक्तिमान् और टिकाऊ नहीं है। मेरी सम्मात मे तो वह शरीर से इन बातो में कहीं अधिक बढ़ चढ़ कर है। तब कोई तर्क कर सक्ता है कि "जब कमज़ोर हिस्सा मृत्यु के उपरान्त वर्त्तमान रहता है तब शक्तिमान् हिस्सा अधिक समय तक क्यों वर्त्तमान नहीं रहेगा?" इसलिये विचारिये और देखिये कि मेरे तर्क में कुछ सार है? मै समझता हूँ कि मैं भी सिमिअस की तरह अपने भाव उपमा द्वारा ही भली भाँति ज़ाहिर कर सक्ता हूँ। मेरी समझ से तो आपकी तरह कोई भी यह तर्क कर यह सिद्ध कर सक्ता है कि एक जुलाहा जो वृद्धावस्था के कारण मर गया है-वास्तव में नष्ट नहीं हुआ किन्तु कहीं न कहीं वर्त्तमान है, और प्रमाण में यह तर्क दे सक्ता है कि जुलाहे के कपड़े, जिनको उसने बनाया और जिन्हें कि वह पहिना करता था अब भी नष्ट नहीं हुए हैं। यदि कोई इस बात को न माने तो वह पूछ सक्ता है कि क्या मनुष्य की अपेक्षा सदा काम में आने वाला कपड़ा अधिक टिकाऊ है? यह उत्तर पाने पर कि नहीं मनुष्य अधिक टिकाऊ है तब वह कह देगा कि जब जल्द नष्ट होने वाली वस्तु (कपड़ा) वर्त्तमान है तो चिरस्थायिनी वस्तु (मनुष्य) कैसे नष्ट हो सक्ती है? किन्तु सिमिअस, तुम भी इस पर विचार करो, यथार्थ में तो ऐसा नहीं होता। सब लोग ऐसे तर्क को बकवाद बतलावेंगे। इस जुलाहे ने ऐसे बहुत से कपड़े बना डाले और इस अन्तिम

कपड़े को छोड़ और सब पहिन डाले किन्तु इस कारण से मनुष्य अपने कपड़े से कम टिकाऊ नहीं हो सक्ता। मैं समझता हूँ कि मनुष्य और आत्मा का सम्बन्ध इसी तरह का है। इसी तरह मनुष्य यह क्यों नहीं कह सक्ता कि आत्मा शरीर की अपेक्षा अधिक टिकाऊ है और शरीर कम टिकाऊ है ? वह इसी प्रकार यह भी कह सक्ता है कि यदि आत्मा (जुलाहा) बहुत दिनों वर्त्तमान रहे तो ऐसे ही कितने ही शरीर (कपड़े) पहिन डाले। क्योंकि यदि मनुष्य के जीवनकाल में उसका शरीर घिसता जा रहा है और आत्मा उसको बनाता जा रहा है, तो इससे यही साबित होगा कि आत्मा नष्ट होने के समय इस अन्तिम शरीर में रहेगा और केवल उसीके पहिले नष्ट होगा। जब आत्मा नष्ट होजायगा तब शरीर भी अपनी दुर्बलता के कारण शीघ्र ही सड़ गल जायगा। इस कारण हम अभी पूरा विश्वास नहीं कर सक्ते कि मरने के बाद हमारी आत्मा अवश्य ही वर्त्तमान रहेगी और आप के तर्क को काम में लाने वाले को उसका प्रतिद्वन्द्वी इस से भी अधिक दबा सक्ता है। वह कह सक्ता है कि जब आत्मा शरीर से पहिले वर्त्तमान था तब कोई कारण नहीं कि कुछ आत्मा शरीर के बाद भी वर्त्तमान न रहें, और मरने के बाद फिर से जन्म न लें। क्योंकि आत्मा स्वभाव ही से इस आवागमन को सहन करने के लिये यथेष्ट शक्तिमान् है। वह बिना इस बात को माने, कि इस आवागमन से आत्मा कमज़ोर नहीं होता जाता, मेरी कही बात को मान सक्ता है या यह कि एक मृत्युकाल में आत्मा बिलकुल नष्ट नहीं हो जाता। वह यह भी कह सक्ता है कि

किसी को भी यह नहीं मालूम कि वह मृत्यु जिसमें शरीर और आत्मा दोनों नष्ट हो जाते हैं, कब आवेगी, क्योंकि मनुष्य के लिये यह जानना नितान्त असम्भव है। किन्तु यदि यह सत्य हो तो मनुष्य का आत्मा सम्बन्धी विश्वास तब तक व्यर्थ विश्वास है जब तक कि वह यह प्रमाणित न कर दे कि आत्मा अमर और अविनाशी है। नहीं तो प्रत्येक व्यक्ति को यही भय रहेगा कि इस बार मरते ही उसकी आत्मा सदा के लिये बिल्कुल नष्ट हो जायगी।

जैसा कि हमने पीछे आपस मे कहा, उनके इस वादानुवाद ने हमारे हृदय में बड़ी अशान्ति उपस्थित कर दी। हम पहिले तर्क से बिल्कुल कायल हो गये थे और अब ऐसा मालूम पड़ने लगा कि इन तर्कों ने हमारे विश्वास को बिल्कुल ही उलट दिया। हमें पिछले और आनेवाले तर्कों पर अविश्वास होने लगा और हमें स्वयं अपनी विवेचना शक्ति पर सन्देह होने लगा। और तो क्या, हमें इस बात पर भी सन्देह हो गया कि कभी भी सत्य बात निर्धारित भी की जा सक्ती है या नहीं।

ऐकीर्कांटिस ने फीडो से कहा—फ़ीडो, मै तुम्हारी अवस्था को स्वयं अनुभव करता हूँ। मै स्वयं अपने आपसे यह पूछना चाहता था कि 'तो भविष्य में हम किस तर्क पर विश्वास करें? साक्रटीज़ का तर्क बिल्कुल ठीक मालूम पड़ता था किन्तु अब तो वह अविश्वस्त हो गया।' क्योंकि इस सिद्धान्त ने कि हमारा आत्मा (Harmony) स्वर संयोग है, मेरे हृदय पर बड़ा प्रभाव डाल रखा था और तुम्हारे कहने से मुझे भी उसकी याद आ गयी। अब मुझे फिर से वह विषय मनन करना पड़ेगा और किसी

ऐसे तर्क को ढूँढ़ना पड़ेगा जो मुझे विश्वास दिला दे कि मनुष्य की मृत्यु के साथ ही उसके आत्मा की भी मृत्यु नहीं हो जाती। सो-कृपया तुम मुझसे कहो कि साक्रटीज़ ने इस तर्क को किस तरह निभाया। क्या साक्रटीज़ ने कोई अस्थिरता के चिह्न दिखलाये जैसा कि तुम अपने बारे में कहते हो या वे शान्तिपूर्वक उत्तर देने लगे? उन्होंने जो तर्क किये क्या वे सन्तोषदायक थे? मुझसे सब बात जहाँ तक हो सके ठीक ठीक कहो।

फ़ीडो—ऐकीक्रीटिस, मैं बहुधा साक्रटीज़ की बातों पर आश्चर्य किया करता था किन्तु मैंने उस समय जितनी उनकी प्रशंसा की उतनी कभी नहीं की। इस बात का कोई आश्चर्य नहीं है कि उनके पास इन तर्कों का उत्तर था, किन्तु मुझे जिन बातों पर बहुत आश्चर्य हुआ वह पहिले तो उनकी दया, सरलता और शान्तभाव था जिससे उन्होने उन नवयुवकों के तर्कों को सुना, दूसरे उनका उन तर्कों का हमारे ऊपर इस शीघ्रता के साथ असर पड़ता था, और तीसरे उनका वह तरीका था जिससे उन्होने हमारे घावों को पूर दिया। वे हमको इस तरह आश्वासन देते रहे, मानो हम हारे हुए और भागते हुए सैनिक थे। वे हमको अपनी बातें सुनने का बढ़ावा देते रहे और हमसे अपने तर्क की परीक्षा करने को कहते रहे।

ऐकीक्रीटिस ने पूछा—उन्होने यह कैसे किया?

फ़ीडो ने कहा—मैं तुम्हें बतलाता हूँ। मैं उनके बिस्तर के पास दाहिनी ओर एक स्टूल पर बैठा था, और उनका स्थान मेरे स्थान से बहुत ऊँचा था। उन्होंने मेरे सिर को प्यार से थपथपाया और मेरी गर्दनपर पड़े हुए मेरे लम्बे

वालों को अपने हाथ में इकट्ठा किया (तुम जानते हो कि वे बहुधा मेरे बालों के साथ खिलवाड़ किया करते थे) और मुझसे बोले—

साक्रटीज—फ़ीडो, मैं साहसपूर्वक कह सक्ता हूँ कि कल तुम इन सुन्दर बालों को काट डालोगे।

मैंने उत्तर दिया—मैं भी यही समझता हूँ।

साक्रटीज—यदि तुम मेरी सम्मति मानो तो ऐसा मत करना।

मैंने पूछा—ऐसा क्यों न करूँ?

उन्होंने कहा—हम और तुम दोनों अपने बालों को आज ही कटा डालेंगे यदि हमारा तर्क सचमुच मर गया होगा और यदि हम उसमें फिर जान न डाल सकेंगे। यदि मैं तुम्हारे स्थान पर होता, और यदि मुझसे तर्क इस तरह निकल जाता तो मैं 'आरगिव्स' की तरह प्रण करता कि जब तक मैं सिमिअस और सीबिस के तर्कों को पराजित न कर दूँगा तब तक लम्बे बाल न रखूँगा।

मैंने कहा—किन्तु जैसा कि लोग कहते हैं एक के लिये दो बहुत होते हैं, स्वयं हरक्युलीज़ भी दो के सामने नहीं ठहर सक्ता था।

उन्होंने कहा—तो जब तक दिन है-तुम मुझे अपने 'आयोलस' की तरह सहायता के लिये बुला सक्ते हो।

मैंने कहा—मैं आपको आयोलस के स्थान मे नही बुलाता किन्तु जिस तरह आयोलस हरक्युलीज़ को बुलाता, उसी भाँति मैं आपको बुलाता हूँ।

साक्रटीज—कैसे भी कहो बात एक ही है, किन्तु पहिले

हमको इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि हम भूल न करें।

मैं—कैसी भूल ?

साक्रटीज—तर्क और विचार से घृणा करने की भूल से मेरा तात्पर्य है। बहुधा मनुष्य जनद्रोही हो जाते हैं। तर्क और विचार से घृणा करने से बढ़ कर कोई बुराई नहीं है। इन दोनों बुराइयों की उत्पत्ति एक ही से कारणों से होती है। मनुष्य जनद्रोही यों हो जाता है कि पहिले तो वह किसी व्यक्ति में, जिसे वह अपना मित्र समझता है पूर्ण विश्वास रखता है, किन्तु पीछे से वह उसको विश्वासघातक पाता है। ऐसा बार बार होता है और जब किसी व्यक्ति को यह अनुभव कई बार हो चुकता है, और विशेष कर उन लोगों से जिन्हें वह अपना सगा या मित्र समझता है, तो अन्तिम परिणाम यह होता है कि वह मनुष्यमात्र को घृणा की दृष्टि से देखने लगता है और यह समझने लगता है कि किसी भी व्यक्ति मे कोई भलाई नही है। क्या तुमने ऐसा होते नही देखा ?

मैं—अवश्य देखा है।

साक्रटीज—क्या यह मनुष्य का छिछोरापन नही है ? क्या यह सत्य नही है कि ऐसा मनुष्य, बिना मनुष्य स्वभाव के जाने ही मनुष्य से बर्ताव और व्यवहार करना चाहता है ? यदि उसने मनुष्य स्वभाव का मनन किया होता तो वह यह परिणाम न निकालता और इस बात को मान लेता कि संसार में अच्छे और बुरे मनुष्यों की संख्या बहुत ही थोड़ी है, तथा अधिकांश लोग न तो बुरे ही हैं और न अच्छे ही।

मैं—इसके कहने से आपका क्या तात्पर्य है ?

साक्रटीज़—जिस प्रकार बहुत ही बड़ी और बहुत ही छोटी चीज़ों का पाना कठिन है उसी प्रकार यह भी है। बहुत ही छोटे या बहुत ही बड़े मनुष्य या कुत्ते या और किसी चीज़ का पाना नितान्त ही कठिन है। बहुत ही तेज़ या बहुत ही धीरे चलने वाले, बहुत ही सज्जन या बहुत ही नीच अथवा बहुत ही सफ़ेद या बहुत ही काले रंग के आदमी का पाना कितना कठिन है ? इन सब अवस्थाओं मे क्या तुमने यह नही देखा कि औसत ही के आदमी अधिक है ?

मैं—जी हाँ।

साक्रटीज—और यदि पापियों मे (बड़ाई की) होड़ बदी जाय तो अत्यन्त पापी बहुत ही कम निकलें ?

मैं—सम्भव तो यही मालूम होता है।

साक्रटीज—हाँ, यही है भी। किन्तु-इस विषय में तर्क और विचार मनुष्य के बराबर नहीं है। तुम्हारे कारण मैंने इन बातों को कहा। समता यह है। जब एक व्यक्ति, जो तर्क-शास्त्र नही जानता, किसी तर्क या विचार को ठीक समझ लेता है, और फिर पीछे उस तर्क या विचार की ग़लती समझने लगता है, और जब बार बार ऐसा होता है-तब परिणाम यह होता है कि उसका विश्वास तर्क से एकदम उठ जाता है। तुम जानते हो कि जो लोग अपना समय वादानुवाद में व्यतीत करते है, अन्त में अपने को संसार मे सबसे बड़ा बुद्धिमान् व्यक्ति समझने लगते है और यह समझने लगते हैं कि केवल उन्होंने इस तत्त्व को समझ

पाया है कि न तो तर्क या विचार में, और न किसी वस्तु ही में स्थिरता या निश्चयता है, तथा यूरिपस की लहरों के समान सभी स्थितियाँ डावाँडोल रहती हैं और एक पल के लिये भी वे शान्त नहीं रह सकती।

मैं—हाँ यह ठीक है।

साक्रटीज—और फ़ीडो, यदि संसार में कोई ऐसा सच्चा तर्कशास्त्र हो जिसे हम समझ सके हों, तो यह बड़े दुःख की बात होगी कि वह व्यक्ति (जिसे ऐसे तर्कों से काम पड़ा है जो कभी ठीक और कभी ग़लत मालूम पड़ते हैं) अन्त में घबड़ा कर अपनी अनभिज्ञता पर दोष देने के बदले, यह परिणाम निकाले कि तर्क और विचार झूठे हैं। तथा वह अपना जीवन विचार की बुराई और घृणा करने में बिता दे और यथार्थ ज्ञान और तत्त्व को छोड़ दे।

मैं—सचमुच यह बड़े ही दुःख की बात होगी।

साक्रटीज—तो पहिले हमको अपने मन में इस बात को जगह न देनी चाहिये कि सभी तर्क ग़लत हैं। किन्तु हमें यही समझना चाहिये कि हममें स्वयं अभी कुछ कमी है। और हमको भरसक स्वयं योग्य होने का उद्योग करना चाहिये। मेरे मित्रो, तुम्हारे भविष्य जीवन के कारण और मुझे मृत्यु के कारण यह आवश्यक है। क्योंकि मुझे भय है कि मैं इस समय मृत्यु को तत्त्वज्ञानी की तरह नहीं समझ सका क्योंकि इस समय मैं उन अशिक्षित लोगों के समान वादविवाद में लगा हुआ हूँ जो स्वयं अपने तर्क की सत्यता पर ध्यान नहीं देते किन्तु जिनका उद्देश्य सुनने वालों को अपने मत में लाना होता है। आज मैं

अपने को उनसे केवल एक बात में भिन्न समझता हूँ। वह यह कि मैं इस बात का जान बूझ कर उद्योग न करूँगा कि सुनने वाले मेरे तर्क के क़ायल होजायँ, किन्तु मैं इस बात का उद्योग करूँगा कि मै स्वयं उसकी सत्यता पर विश्वास करलूँ। प्यारे मित्र देखो, मेरे कारण में कितना स्वार्थ भरा है। यदि मेरा कहना सच हो तो उस पर विश्वास करना ठीक है। यदि मृत्यु के बाद कुछ भी नहीं है तो मैं मरने से पहिले समय में अपने मित्रों को कम दुःख होने दूँगा। यह अज्ञान बहुत समय तक नहीं चल सक्ता, क्योंकि अज्ञान अनिष्टकर है अतः उसका अन्त शीघ्र ही हो जायगा। सीबिस और सिमिअस इस प्रकार से तैयार हो कर मैं तर्क करने के लिये सामने आता हूँ। तुम यदि मेरा कहना मानो तो साक्रटीज़ (मेरा) का विचार मत करना, किन्तु सत्य (तत्त्व) का विचार करना और यदि जो कुछ मैं कहूँ तुम्हें ठीक मालूम हो तो उसे मानना, नहीं तो हर तरह के तर्क से मेरा खण्डन करना। यह मत समझ लेना कि तुम्हें अपने तर्क से परास्त करने की उत्सुकता में मैं तुमको धोका दूँगा और शहद की मक्खी की तरह अपना डंक छोड़ जाऊँगा।

अब हमें आगे बढ़ने दो। यदि मैं तुम्हारे तर्क भूल गया होऊँ तो उनको दुहरा दो। मैं समझता हूँ कि सिमिअस को यह भय है कि चूँ कि आत्मा स्वभाव से सत्त्वगुण विशिष्ट है इस लिये वह शरीर से अधिक दिव्य होते हुए भी उससे कहीं पहिले ही नष्ट न हो जाय। यदि मैं नहीं भूलता हूँ तो सीबिस ने इतना मान लिया था कि आत्मा शरीर से अधिक शक्तिमान् और स्थायी है। किन्तु उसने कहा

था कि यह कोई नहीं कह सक्ता कि कई शरीर में आवागमन करने के बाद छिन्न और दुर्बल होकर आत्मा अपने अन्तिम शरीर के साथ ही नष्ट नहीं हो जाता और यह कि कहीं यही अर्थात् आत्मा का नष्ट होना ही तो मृत्यु नहीं है। क्यों सिमिअस और सीबिस, इसके सिवाय और कुछ तो नहीं जाँचना?

उन दोनों ने कहा—ये ही हमारे प्रश्न थे।

साक्रटीज़—तुम लोग पहिले स्थिर किये हुए सभी सिद्धान्तों पर आपत्ति करते हो या कुछ ही पर?

उन्होंने उत्तर दिया कि केवल कुछ ही पर उनकी आपत्ति है।

साक्रटीज—अच्छा तो तुम इसके बारे में क्या कहते हो कि हमारा ज्ञान केवल स्मरणमात्र है और इस कारण हमारा आत्मा शरीर में कारागारबद्ध होने के पहिले कहीं न कहीं अवश्य विद्यमान था?

सीबिस—मैं उस पर पूर्णरूप से विश्वास करता हूँ और मेरा विश्वास इतना किसी भी और सिद्धान्त पर नहीं है।

सिमिअस—मेरी भी यही राय है और यदि अब मैं उस पर अविश्वास करने लगूँ तो मुझे बड़ा आश्चर्य होगा।

साक्रटीज—किन्तु मेरे थीबन मित्र, यदि तुम अपनी यह सम्मति क़ायम रखना चाहते हो कि संयोग कई वस्तुओं से बना है और यह कि आत्मा शरीर के तत्वों के उचित आकर्षण द्वारा संयुक्त होने से बना है तो तुमको अपना यह विश्वास छोड़ देना पड़ेगा। क्या तुम यह कहने का साहस करोगे कि संयुक्त वस्तु (आत्मा) संयोजित

वस्तुओं (शरीर के तत्त्वों) के पहिले विद्यमान था ? क्या तुम यह कहोगे ?

सिमिअस—कदापि नहीं साक्रटीज़ ।

साक्रटीज़—किन्तु जब तुम यह कहते हो कि आत्मा शरीर में आने से पहिले विद्यमान था और फिर भी वह उन तत्त्वों से बना है जो उस समय विद्यमान नहीं थे तब तुम देखते हो कि तुम्हारे कथन का यही तात्पर्य निकलता है । तुम्हारा संयोग इस प्रकार का नहीं था जैसा कि तुम उदाहरण द्वारा बतलाते हो । वीणा, उसके तार और स्वर, सम स्वर में बजाने के पहिले विद्यमान थे और स्वरसंयोग ही सब से अन्त में बना, और इन सब वस्तुओं से नष्ट होने के पहिले ही नष्ट भी होगया । तुम्हारा यह विश्वास दूसरे विश्वास के साथ किस प्रकार सहमत हो सकेगा ?

सिमिअस—यह तो नहीं हो सकेगा ।

साक्रटीज—और तब भी संयोग का तर्क वैमत्य के साथ कठिनता से ठीक बैठ सक्ता है ।

सिमिअस—वह उसके साथ ठीक नहीं बैठ सक्ता ।

साक्रटीज—अच्छा तो तुम्हारे तर्क में वैमत्य है । तब अब निश्चय कर कहो कि तुम कौनसे सिद्धान्त को मानोगे और कौनसेको छोड़ोगे । यह मानोगे कि ज्ञान स्मरण है या यह कि आत्मा (शारीरिक तत्त्वों का) संमिश्रण है ।

सिमिअस—मैं पहिले वाला सिद्धान्त ही मानूँगा । दूसरा सिद्धान्त मुझको कभी नहीं सिखलाया गया, यह सिद्धान्त साधारण दृष्टि से देखने से ठीक मालूम होता है

और इसी कारण से लोग इस पर विश्वास करने लग जाते हैं। मैं जानता हूँ कि वे उपदेश (सिद्धान्त) जो सम्भव मालूम होते हैं बहुधा ग़लत होते हैं। यदि मनुष्य सावधान न रहे तो अवश्य वे उसे असत्य पथ पर भटका देंगे—चाहे वह ज्यामिति पर विचार कर रहा हो, चाहे किसी अन्य विषय पर, किन्तु ज्ञान और स्मरण का सिद्धान्त उस बुनियाद पर क़ायम है जिस पर विश्वास होना अनिवार्य है। हम इस बात को मान गये कि शरीर से पहिले आत्मा ठीक उसी प्रकार विद्यमान था जिस प्रकार वह तत्त्व विद्यमान है जिसे हम सत्य जीव कहते हैं। मुझे विश्वास है कि मैं इस तत्त्व पर ठीक और उचित प्रमाण होने के कारण विश्वास करता हूँ। अतएव मैं यह निचोड़ निकालता हूँ कि न तो मैं और न कोई दूसरा ही व्यक्ति इस बात को मान सक्ता है कि आत्मा (शारीरिक तत्त्वों का) संमिश्रण है।

साक्रटीज़—सिमिअस अब इस प्रश्न पर दूसरी तरह से विचार करो। क्या तुम समझते हो कि कोई भी संयुक्त वस्तु उन तत्त्वों की अवस्था को छोड़ कर (जिनके मेल से वह बनी है) और किसी भी अवस्था में रह सक्ती है?

सिमिअस—कदापि नहीं।

साक्रटीज—क्या वे वस्तुएँ उन (तत्त्वों) के कर्त्तव्य के सिवाय और कुछ कर या सह सक्ती हैं?

सिमिअस—नहीं।

साक्रटीज़—इस कारण संयुक्त वस्तु उन तत्त्वों के पीछे ही रहेगी जिससे वह बनी है तथा उनको पथ बतलाने वाली नहीं हो सक्ती।

सिमिअस—ठीक है।

साक्रटीज़—और अपने तत्त्वों के (स्वभाव के) विरुद्ध तो वह बहुत कम आवाज़ दे सक्ती है या काम कर सक्ती है ?

सिमिअस—बेशक बहुत ही कम।

साक्रटीज़—अच्छा। क्या प्रत्येक समस्वरता स्वभावतः उसी प्रकार की नहीं होती जिस प्रकार से वह मिलायी जाय ?

सिमिअस—मैं आपके कथन का तात्पर्य नहीं समझा ?

साक्रटीज़—यदि वह और समता में लायी जाय, थोड़ी देर के लिये मानलो कि ऐसा सम्भव है, तो क्या वह अधिक बड़ी समस्वरता न होगी, और यदि वह कम समता मे लायी जाय तो क्या वह कम समस्वरता (संमिश्रण) न होगी।

सिमिअस—अवश्य।

साक्रटीज़—क्या यह आत्मा के विषय मे ठीक है ? क्या एक आत्मा अधिक आत्मा और दूसरी आत्मा कम आत्मा हो सक्ती है ?

सिमिअस—कदापि नहीं।

साक्रटीज—अच्छा तो अब हमें यह बतलाओः-क्या यह नहीं कहा जाता कि अमुक आत्मा उत्तम, पुण्यवान्, समझदार है और बाज़ आत्मा मूर्ख, बुरा और खराब है ? और क्या यह सत्य नही है ?

सिमिअस—सत्य है।

साक्रटीज—तब वे लोग जो आत्मा को समस्वरता (संमिश्रण) बतलाते हैं इस बारे में क्या कहेंगे ? पुण्य

और पाप जो हमारा आत्मा में है उसकी वे क्या मीमांसा करेंगे। दूसरा संमिश्रण और दूसरा वैमत्य? क्या वे यह कहेंगे कि भला आत्मा समस्वर मे है-अर्थात् एक समस्वरता में दूसरी समस्वरता विद्यमान है तथा बुरा आत्मा समस्वरता में नही है और उसमे कोई और संयुक्तता नहीं है?

सिमिअस—मैं कुछ नहीं कह सक्ता-हाँ वे लोग अवश्य ही कुछ ऐसी ही बातें कहेंगे।

साक्रटीज—किन्तु यह मान लिया गया है कि कोई आत्मा किसी आत्मा से घट बढ़ कर नहीं है। दूसरे शब्दों में यह इस तरह कहा जा सक्ता है कि एक समस्वरता दूसरी समस्वरता से घट बढ़ कर नहीं है। यह है न?

सिमिअस—जी हाँ।

साक्रटीज—और जो समस्वरता कम या अधिक समस्वरता नहीं है-वह कम या अधिक स्वर में मिलायी भी नहीं गयी ऐसा ही है न?

सिमिअस—जी हाँ।

साक्रटीज—और ऐसे समस्वर जिनमें न तो एक दूसरे से कम समस्वरता है और न ज्यादा ही है कितनी समस्वरता है?

सिमिअस—बराबर बराबर है।

साक्रटीज—तो चूँकि एक आत्मा दूसरे आत्मा से घट बढ़ कर नहीं है इस लिये वे एक दूसरे से संयुक्तता में भी घट बढ़कर नहीं हैं।

सिमिअस—ठीक है।

साक्रटीज़—अतः एक किसी में दूसरे से संयुक्तता या वैमत्य घट बढ़ कर नहीं होगा।

सिमिअस—कदापि नहीं।

साक्रटीज—तो ठीक बात तो यह है कि किसी भी आत्मा में–यदि वह समस्वरता में है, तो कोई बुराई न होगी। मैं इसे मान लेता हूँ कि समस्वरता में पूरी समस्वरता है, उसमें वैमत्य नहीं हो सक्ता।

सिमिअस—कदापि नहीं।

साक्रटीज—और न कोई आत्मा–यदि वह पूरा आत्मा है–बुरा हो सक्ता है।

सिमिअस—तर्कों का परिणाम तो यही निकलता है।

साक्रटीज—तो इस विचार का परिणाम यह हुआ कि यदि आत्माओं का स्वभाव एकसा होने का है तो सभी जीवों का आत्मा एक ही समान अच्छा होगा।

सिमिअस—मैं यही समझता हूँ।

साक्रटीज—और क्या तुम समझते हो कि हमारे तर्क की यही दशा हुई होती यदि हमारी कल्पना–यह कि आत्मा संयुक्तता या समस्वरता है–ठकि होती?

सिमिअस—नहीं ऐसा कदापि नहीं होता।

साक्रटीज—अच्छा तो तुम यह मानते हो कि नहीं कि शरीर के भागों में आत्मा ही और विशेष कर बुद्धिमान् आत्मा ही–स्वामित्व करता है।

सिमिअस—मैं मानता हूँ।

साक्रटीज—क्या वह शरीर की वासनाओं के आगे झुक जाता है अथवा वह उनको रोकता है? मेरा मतलब यह है कि जब शरीर प्यासा होता है तब क्या वह उसे

जल पीने से नहीं रोकता अथवा जब वह भूखा रहता है तब क्या वह उसे भोजन करने से नहीं रोकता? इसी तरह क्या हम नित्यप्रति उसे शारीरिक वासनाओं को रोकते नहीं देखते?

सिमिअस—हाँ अवश्य देखते हैं।

साक्रटीज—किन्तु हम इस बात पर सहमत हो चुके हैं कि यदि आत्मा संयुक्त समस्वर है तो वह कदापि उन तत्वों को नही रोक सक्ता जिनसे वह बना है-वह उन्हें पथ प्रदर्शन नहीं करा सक्ता। ऐसी अवस्था मे उसे उनका पिछलगू बना रहना होगा।

सिमिअस—हाँ, यह बात ठीक है।

साक्रटीज—किन्तु क्या हम सभी बात इसके विपरीत नही देखते? क्या वह शरीर के तत्वों की पथ प्रदर्शक नही है और क्या जीवन मे निरन्तर यह शरीर की वासनाओं को नहीं रोकता? क्या वह सदा उन पर प्रभुत्व नही दिखलाता? क्या वह उनको, कभी कड़ा और कभी हलका दण्ड नहीं देता? क्या कभी कभी वह शरीर की वासनाओं, कामनाओं और भयों को इस प्रकार नहीं धमकाता मानो वह अपने के सिवाय किसी दूसरे से बात कर रहा है? ठीक उसी तरह से जिस प्रकार होमर ओडिसी में उडीसिअस से कहलाता है:—

"उसने अपनी छाती पीटी और हृदय पर घात किया और बोला मेरे हृदय! सहन कर, गुरुतर तूने सहन किया।"
क्या तुम समझते हो कि जब होमर ने इसे लिखा था तब वह यह समझता था कि आत्मा केवल संयुक्त सम स्वर के समान है? क्या होमर का यह विश्वास था कि

आत्मा शरीर की वासनाओं द्वारा परिचालित होता है अथवा यह कि उसमें उनको परिचालन करने की शक्ति नहीं है ? क्या वह उनका (शारीरिक तत्त्वों की) स्वामी होने योग्य नहीं है जब कि वह उनसे कहीं दिव्य है ?

सिमिअस—अवश्य, वह इस योग्य है।

साक्रटीज—तब मेरे मित्र, यह कहना सरासर भूल है कि आत्मा संयुक्त वस्तु है। क्योंकि उस अवस्था में न तो हम दिव्य कवि होमर से और न स्वयं अपने ही से सहमत हो सकेंगे।

सिमिअस—आपका कहना सर्वथा युक्तियुक्त है।

साक्रटीज—बहुत अच्छा। अब मुझे विश्वास है कि किसी तरह हम लोगों ने अपने थीबन हारमोनिआ को सन्तुष्ट करने में सफलता प्राप्त की है। किन्तु सीबिस, केडमस के बारे में क्या कर्त्तव्य है ? हम उसको क्यों कर और किस तर्क से सन्तुष्ट करें ?

सीबिस ने कहा—मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप मुझे तुष्ट करने का रास्ता निकाल ही लेंगे। आपने अपना मत-कि आत्मा संयुक्त वस्तु नहीं है-इतनी अच्छी तरह प्रतिपादित किया है कि मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। जब सिमिअस अपनी आपत्तियाँ कह रहा था, उस समय मैं यह समझता था कि उनका काटना अत्यन्त कठिन है। इस कारण जब आपके (तर्क) आरम्भ करते ही उसकी आपत्तियों की समीक्षा हो गयी तब तो मैं बड़ा ही चकित हुआ। यदि केडमस के तर्क की भी यही दशा हो तो मुझे कुछ भी आश्चर्य न होगा।

साक्रटीज ने कहा—मेरे मित्र, आशातीत विश्वास मत करो, नहीं तो आनेवाले तर्क को नज़र लग जायगी। ख़ैर, हम यह बात ईश्वर के भरोसे छोड़ते हैं। हमें होमर के (काव्य के) नायकों की तरह 'बहादुरी के साथ आगे बढ़ना' चाहिये और इस बात को देखना चाहिये कि तुम्हारे कथन में कुछ तत्त्व है या नहीं। तुम्हारा कुल तात्पर्य यह है: तुम मुझसे यह साबित कराना चाहते हो कि आत्मा अमर और अविनाशी है, क्योंकि यदि यह बात नहीं है तो तुम्हें भय है कि उस तत्त्वज्ञानी का विश्वास केवल मूर्खता है जिसका विश्वास है कि मृत्यु अच्छी वस्तु है और मृत्यु के बाद वह परलोक में इस लोक की अपेक्षा कहीं अच्छी तरह समय व्यतीत करेगा। तुम्हारा कहना यह है कि केवल इतना साबित करना ही यथेष्ट नहीं है कि आत्मा शरीर में प्रविष्ट करने के पहिले विद्यमान था और वह बलवान् तथा दिव्य है, क्योंकि इतने ही से उस का अमरत्व प्रमाणित नहीं हो जाता। यह केवल इतना ही प्रमाणित कर सक्ता है कि वह बहुत पहिले विद्यमान था तथा उसको बहुत बातें मालूम हैं और वह बहुत दिनों तक (जीवित) रह सक्ता है। किन्तु इससे उसका अमर होना सिद्ध नहीं हुआ। उसका मनुष्यशरीर में प्रविष्ट होना ही उसके रोग का (जिसका अन्त उसका नाश है) आरम्भ है। तुम कहते हो कि वह इस जीवन को दुःखी होकर व्यतीत करता है और अन्त में मृत्यु के साथ नष्ट हो जाता है। तुम्हारा कहना है कि यह कोई मार्के की बात नहीं है कि वह शरीर में एक ही बार या कई बार आता है, जैसा कि हम में से प्रत्येक को भय है, क्योंकि

तुम्हारे कथनानुसार जो व्यक्ति आत्मा को अमर सिद्ध नहीं कर सका, या उसका अमर होना नहीं जानता और फिर भी मृत्यु से डरता है—वह मूर्ख है। सीबिस, मै समझता हूँ कि यही तुम्हारे कथन का तात्पर्य है। मैं इसे बार बार इस लिये दुहराता हूँ जिससे कोई बात हमसे छूट न जाय, और जिससे यदि तुम कुछ इसमे जोड़ना चाहो तो जोड़ लो और घटाना चाहो तो घटा दो।

सीबिस—नहीं। इस समय मैं इसमें कुछ घटाना बढ़ाना नहीं चाहता।

साक्रटीज़ थोड़ी देर चुप रहे और कुछ सोचते रहे। और फिर बोलेः—

साक्रटीज—सीबिस, जो प्रश्न तुमने उठाया है वह कोई सहल प्रश्न नहीं है। हमें जन्म और नष्ट होने के कारणों की भली भाँति परीक्षा करनी होगी। यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हे अपना अनुभव कह सुनाऊँ। यदि हो सके तो तुम उससे अपनी समीक्षा आप कर लेना।

सीबिस—अवश्य ही मै आपके अनुभवों को सुनना पसन्द करूँगा।

साक्रटीज—अच्छा, सीबिस, तो सुनो। मैं तुमसे कहता हूँ। जब मैं नौजवान था तब मेरी उस ज्ञान को प्राप्त करने की बड़ी इच्छा थी जिसे भौतिक विज्ञान कहते है। मै सोचा करता था कि प्रत्येक वस्तु का कारण जानना बहुत अच्छी बात है। क्यो अमुक वस्तु पैदा होती है, क्यो वह नष्ट होजाती है और क्यो वह विद्यमान रहती है—मैं सदा ऐसे प्रश्नों के हल करने मे परेशान रहा करता था जैसे—क्या जीवित प्राणी सर्दी और गर्मी के उबाल से निर्णीत

आकृति धारण करते है-जैसा कि कुछ लोग कहते हैं? हम रक्त, वायु या अग्नि, किससे सोचते है? या सोचने की क्रिया में मस्तिष्क भाग लेता है, जिससे दृष्टि और घ्राण आदि शक्तियाँ निकली हैं और क्या मेधा तथा सम्मति देने की शक्ति भी इसीसे निकली है और क्या ज्ञान, निश्चेष्ट बैठे रहने के समय, मेधा एवम् सम्मति देने की शक्ति से उत्पन्न होता है? फिर मैंने इन सबके नष्ट होने के तथा आकाश और पृथ्वी के परिवर्तनों के कारणों की खोज की, किन्तु अन्त में मैंने यही निचोड़ निकाला कि मैं इस अध्ययन के लिये सर्वथा अयोग्य हूँ। मैं इस बात को तुम्हारे सामने अवश्य ही प्रमाणित कर दूँगा। इन वस्तुओं के अध्ययन के कारण मैं इतना अन्धा हो गया कि मुझको और मेरे आस पास रहने वालों को यह मालूम हो गया कि मैं उन बातों को भी भूला जाता हूँ जिनको मैं पहिले बहुत अच्छी तरह जानता था। उन सभी बातों को, जिनको अच्छी तरह जानने का मुझे पूरा विश्वास था, और तो क्या, स्वयं मनुष्य के बढ़ाव के कारणों को भी, मैंने भुला दिया। पहिले मैं यह समझता था कि मनुष्य के बढ़ने का कारण खाना पीना है, और जब भोजन से मांस में मांस और हड्डी में हड्डी जोड़ी जाती है, और इसी तरह से प्रत्येक अवयव को उसके अनुकूल वस्तु मिलती है; तब प्रत्येक अवयव बढ़ता है और लड़का पूरा मनुष्य हो जाता है। क्या मेरा विश्वास विचारपूर्ण नहीं था?

सीबिस—अवश्य था।

साक्रेटीज—तो लो, तुम्हारे लिये यह दूसरा अनुभव भी

तैयार है। जब मैं किसी नाटे आदमी के पास किसी लम्बे आदमी को खड़ा देखता तो मैं यह समझता था कि वह नाटे आदमी से लम्बा है। इसी तरह से एक घोड़ा दूसरे घोड़े से बड़ा है। मैं इसे अच्छी तरह समझता था कि दस आठ से दो द्वारा बड़ा है या दो हाथ लम्बी वस्तु एक हाथ लम्बी वस्तु की दुगनी होती है।

सीबिस—अच्छा तो अब आप क्या समझते हैं ?

साक्रटीज—अब केवल मैं यही समझता हूँ कि मैंने इसका कारण नहीं जान पाया। जब तुम एक एक मे दूसरा एक जोड़ते हो तो पहिला एक जिसमें दूसरा एक जोड़ा गया है दो हो जाता है या दूसरा एक जो पहिले एक के साथ जोड़ा गया है वह दो हो जाता है ? मैं यह नहीं समझ सक्ता कि जब एक दूसरे के पास लाया जाय तो यह लाना या जोड़ना उन्हें कैसे दो कर सक्ता है जब उनमें से प्रत्येक एक था न कि दो। न मैं यही समझ सक्ता हूँ कि जब तुम एक को दो हिस्सों में बाँट देते हो तो वह एक क्यों दो हो जाता है। इस समय दो होने का कारण पहिले दो होने के कारण से ठीक विपरीत है। पहिले तो दो एकाई लायी गयी थीं और दोनों जोड़ी गयीं तब कहीं दो हुई, और अब वे एक दूसरे से अलग की गयी हैं। फिर मैं अपने को यह भी न समझा सका कि एक कैसे पैदा होता है। मेरे कथन का सारांश यह है कि यह उपाय मुझे किसी वस्तु की उत्पत्ति नाश और स्थिति का कारण न बतला सका। मेरे मस्तिष्क में दूसरे उपाय का कुछ धुँधला अक्स है भी, पर इस उपाय को तो मैं कदापि स्वीकार नहीं कर सक्ता।

किन्तु एक दिन मैं एक व्यक्ति की बातें सुन रहा था जिसने मुझसे यह कहा कि उसने अनेक्सागोरस की एक किताब में यह पढ़ा था कि मानस ही सब (विचारों) को एकत्रित करता है और वही सब का (विचारों का) कारण है। मैं इस सिद्धान्त को सुन कर बड़ा प्रसन्न हुआ। मुझे यह ठीक जान पड़ा कि **मानस** ही को सब का कारण होना चाहिये। मैंने यह भी सोचा कि यदि यह सत्य है तो मानस प्रत्येक बात की सर्वोत्तम रीति से व्यवस्था कर देगा। इस लिये यदि हम किसी वस्तु की उत्पत्ति, स्थिति या नाश होने का कारण जानना चाहते हों तो हमको यह जानना चाहिये कि उस वस्तु के लिये किस दशा में रहना सब से अच्छा है, या किस प्रकार वह सर्वोत्तम रीति से काम कर सक्ती है। इस लिये मनुष्य को केवल इसी बात का विचार करना होगा कि उसके लिये या किसी और वस्तु के लिये सर्वोत्तम और उपादेय क्या है? इसे जान लेने पर वह अपने लिये सब से बुरी और हानिकर वस्तु भी जान सक्ता है, क्योंकि दोनों बातें एक ही विज्ञान में सम्मिलित हैं। इन विचारों ने मुझे बड़ा प्रसन्न कर दिया। मैंने समझा कि अनेक्सागोरस के स्वरूप में मुझे मेरे ही हृदय के अनुसार एक गुरु मिल गया है, और मैंने यह विचारा कि पहिले वह इसी बात की विवेचना करेगा कि पृथ्वी गोल है या चपटी, और फिर वह इस बात का प्रतिपादन करेगा कि पृथ्वी के लिये इसी आकार का होना श्रेयस्कर है। मैंने सोचा कि यदि उसने यह कहा कि पृथ्वी विश्व के बीचो बीच में है तो वह यह भी प्रमाणित करेगा कि उसका वहीं रहना उसके लिये सर्वो-

त्तम है और मैंने यह भी सोच लिया कि यदि उसने इन बातों को साफ़ साफ़ दिखला दिया तो मुझे और कोई कारण जानने की आवश्यकता भी नहीं पड़ेगी। इसी प्रकार मैं सूर्य चन्द्र और नक्षत्रों के बारे में भी प्रश्न करने के लिये तैयार था और मैं उनकी सापेक्ष चाल, घुमाव और परिवर्त्तनों के कारण जानने के लिये उत्सुक था और यह भी जानना चाहता था कि यही व्यवस्था उनके लिये क्यों सर्वोत्तम है। मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि जब उसने यह कह दिया है कि प्रत्येक वस्तु मानस द्वारा व्यवस्थित होती है, तो वह इसके सिवाय और भी कोई कारण देगा कि उनके लिये ऐसे रहना ही सर्वोत्तम है। मैंने यह समझ रखा था कि वह प्रत्येक वस्तु का एक कारण बतला देगा और फिर एक कारण संसार का भी बतला देगा और तब मुझे यह समझाना आरम्भ करेगा कि प्रत्येक वस्तु के लिये, वही अवस्था सर्वोत्तम है जिसमें वह है और फिर वह उन सब का साधारण उपयोग बतावेगा। मै अपनी आशाओं को बहुत अधिक नहीं बढ़ाता; सो मैंने बड़ी उत्सुकता के साथ उसकी पुस्तकें उठा लीं और मै यथाशक्ति शीघ्रता के साथ उनको पढ़ने लगा जिससे मैं यह जान जाऊँ कि क्या अच्छा है और क्या बुरा है।

किन्तु मेरी सभी आशाएँ नष्ट हो गयीं क्योंकि जब मैंने पढ़ना आरम्भ किया तब मालूम हुआ कि लेखक ने मानस का कुछ भी उपयोग नहीं किया है, और उसने वस्तुओं की व्यवस्था के लिये कोई कारण नहीं बतलाया है। उसके बतलाये कारण वायु, ईथर, जल इत्यादि अद्भुत वस्तुएँ

हैं। यह कहना इसी प्रकार का है जैसे कोई मनुष्य पहिले तो यह कहे कि साक्रटीज़ प्रत्येक काम मानस से करता है, किन्तु यदि उससे पूछा जाय कि साक्रटीज़ यहाँ क्यों बैठा है तो वह यह उत्तर देने लगे कि हड्डी और पिंडिका दो वस्तुओं से मेरा शरीर बना है। हड्डी कड़ी है और पिंडिका ढीली या कड़ी की जा सकी है, और यह तथा मांस और खाल हड्डियों को ढाँके हुए है। इस कारण जब हड्डी अपने छिद्र में पहुँच गयी है तब पिंडिका के कसने या ढीली पड़ने पर मेरा यों बैठना सम्भव हो गया है। इसी तरह जब उससे यह पूछा जायगा कि मैं तुमसे क्यों बोल रहा हूँ तो वह शब्द, वायु, श्रवण शक्ति आदि अनेकों अद्भुत वस्तुओं को मेरे बोलने का कारण बतलावेगा किन्तु वे असली कारण नही बतलावेंगे जो यह है कि चूँकि एथेंसवासियों ने मुझे दोषी सिद्ध करना उचित समझा है इस लिये मैंने यहाँ बैठना और तुमसे बातचीत करना उचित समझा है। क्योंकि मैं सत्य कहता हूँ कि यदि मैंने राज्य की आज्ञा को शिरोधार्य करना उचित और सन्मानप्रद न समझा होता तो मेरी ये हड्डियाँ और पिंडिका कभी की 'मेगारा' या 'बीओेशिआ' में होतीं। किन्तु इन बातों को कारण बताना नितान्त असम्भव है। यदि यह कहा जाता कि बिना हड्डी पिंडिका आदि शरीर के भागों के मै अपना मनोरथ पूर्ण न कर सका, तो यह ठीक भी होता। किन्तु यह कहना कि जो मै कर रहा हूँ उनके ये कारण हैं और इस तरह विवेक बुद्धि द्वारा परिचालित न हो कर, मै मानस द्वारा परिचालित होता हूँ, सरासर असावधानी से बात करना

होगा। इससे केवल यही प्रमाणित होता है कि जन साधारण यथार्थ कारण में और उस वस्तु में भेद नहीं जान सके जिसके विना कारण कारण नहीं हो सका। वे उस वस्तु को वह नाम देते हैं जो यथार्थ में उसको न मिलना चाहिये। इसीसे एक व्यक्ति की राय में तो पृथ्वी चारों ओर से एक भौंरी द्वारा घिरी है और आकाश उस को सम्हाले हुए है। दूसरे की राय में पृथ्वी थाली के आकार की है और हवा पर स्थित है। किन्तु वे कभी उस शक्ति की खोज नहीं करते जिसके कारण यह सब व्यवस्था बनी है और न वे उस शक्ति की दैवी शक्ति ही को स्वीकार करते हैं। वे निरन्तर एक ऐसी वस्तु के पाने की आशा मे रहते हैं जो पृथ्वी को इस स्थिति में रखने के लिये अधिक योग्य और शक्तिमान् हो। वे उस आकर्षण शक्ति की ओर कदापि ध्यान नहीं देते जो यथार्थ में वस्तुओं को बाँधती और उनको मिला कर रखती है। मैं इस प्रकार के कारण को किसी भी व्यक्ति से सीखने के लिये सदा प्रसन्न रहता हूँ-किन्तु न तो मैं स्वयं उसे जान सका और न और ही कोई व्यक्ति मुझे उसे समझा सका। जो हो, मैंने दूसरा पथ ग्रहण किया और तुम अवश्य ही उसे सुनना पसन्द करोगे।

सीबिम—अवश्य ही मैं उसको सुनने के लिये बड़ा उत्सुक हूँ।

साक्रटीज—जब मैंने वास्तविक स्थिति सम्बन्धिनी परीक्षा छोड़ दी, तब मैंने अपने मन में यह विचार किया कि मुझे इस बात से सावधान रहना चाहिये कि मैं उस तरह से त्रास न पाऊँ जिस तरह से वे लोग पाते हैं जो

ग्रहण के समय सूर्य की ओर देखते हैं। क्योंकि यदि वे सूर्य की परछाईं जल या ऐसी ही किसी वस्तु में न देखें तो वे अपनी दृष्टि खो देने के भय में रहेंगे। मुझे भी यह भय मालूम पड़ने लगा। मुझे यह भय था कि यदि मैं सभी चीज़ों को जड़दृष्टि ही से देखूँ और उनकी परीक्षा इन्द्रियों द्वारा करूँ, तो कहीं मेरा आत्मा बिल्कुल अन्धा (ज्ञानहीन) न रह जाय। सो मैंने यह विचार किया कि मेरे मन में पहिले कुछ न कुछ उनकी कल्पना रहनी चाहिये और उन्हींसे मुझे स्थिति की सत्यता की जाँच करनी चाहिये, कदाचित् मेरा उदाहरण बिल्कुल ठीक न हो। मैं यह मानने के लिये तैयार नहीं हूँ कि जो व्यक्ति स्थिति की जाँच कल्पना द्वारा कर रहा है वह उस व्यक्ति की अपेक्षा केवल ख्याली घोड़े दौड़ा रहा है जो उसकी स्थिति की जाँच उन वस्तुओं द्वारा करता है जो इन्द्रियों द्वारा देखी जा सकती हैं। जो कुछ भी हो, मैं इस तरह आगे बढ़ा। प्रत्येक बार मैंने वह सिद्धान्त मान लिया जो मुझे सबसे अधिक अच्छा जंचा। फिर जो बात उससे मेल खाती गयी उसीको मैंने सही माना, और जिसने उससे मेल नहीं खाया उसीको मैंने ग़लत समझा। मै अपना अभिप्राय और साफ किये देता हूँ, क्योंकि कदाचित् तुम उसे न समझे होवो।

सीबिस—सचमुच मैं अच्छी तरह नहीं समझा।

साक्रटीज—मैं कुछ नई बात नहीं कहता। मैं वही बात कह रहा हूँ जिसे मैं आज और पहिले भी दुहरा चुका हूँ। मैं तुम्हें यह समझाना चाहता हूँ कि वह कारण जिसे मैंने खोज निकाला है, किस तरह का है। मै उसी पिछली

बात को फिर उठा लूँगा और यह मान कर आगे बढ़ूँगा कि सम्बन्धातीत या शुद्ध (Absolute) सौन्दर्य, भलाई, बड़प्पन आदि की स्थिति है। यदि तुम इनको मानते हो, तो मैं तुम्हें यह बतला सक्ता हूँ कि मेरा ढूँढ़ा हुआ कारण क्या है और यह प्रमाणित कर दूँगा कि आत्मा अमर है।

सीबिस—मान लीजिये कि मैं इन बातों को मानता हू। आप सिद्ध कीजिये।

साक्रटीज—तब क्या तुम उससे भी सहमत होगे जो इसे मानने से मानना पड़ता है। मुझे ऐसा मालूम पड़ता है कि यदि सम्बन्धातीत या शुद्ध सौन्दर्य के सिवाय और कोई सौन्दर्य है तो इस सौन्दर्य ने पहिले सौन्दर्य से यह गुण (सौन्दर्य) पाया है। इसी तरह मैं और सब अद्भुत बातों का कारण इसी प्रकार बतलाता हूँ। तुम इसे मानते हो?

सीबित—हाँ मैं मानता हूँ।

साक्रटीज—अच्छा मैं अब न तो इन दूसरे कारणों को मानता ही हूँ और न इनको समझ ही सक्ता हूँ। अब यदि मुझसे कोई यह कहे कि अमुक वस्तु सुन्दर है क्योंकि उसका रंग अच्छा है या उसकी आकृति भव्य है तो मैं इन कारणों की तनिक भी पर्वाह न करूँगा, क्योंकि इस प्रकार के वचन केवल मुझे घबड़ा देते हैं। मैं सादी तौर से यही कहूँगा कि यह वस्तु इस लिये सुन्दर है कि यह सम्बन्धातीत या शुद्ध सौन्दर्य से सम्बन्ध रखती है, या इस में वह वर्त्तमान है। तुम इसे किसी प्रकार भी कह सक्ते हो, मुझे इसमें कोई भी आपत्ति नहीं है। किन्तु मैं सदा ही इस बात को ठीक समझता हूँ कि सम्बन्धातीत या शुद्ध सौन्दर्य ही दूसरी वस्तुओं को सुन्दर बनाता है।

मुझे यही ठीक उत्तर मालूम पड़ता है, जिसे मैं स्वयं अपने को और दूसरों को विश्वासपूर्वक दे सक्ता हूँ। मेरा विश्वास है कि जब तक मैं इस बात को मानता हू, मैं कभी भटक नहीं सक्ता। तुम इस उत्तर को क्या ठीक नहीं समझते ?

सीबिस—मैं इसे ठीक समझता हूँ।

साक्रटीज़—और आकार बड़ी वस्तु को बड़ी एवं बहुत बड़ी वस्तु को बहुत बड़ी बनाता है, तथा छुटाई छोटी वस्तु को छोटी कर देती है।

सीबिस—हाँ।

साक्रटीज़—और यदि तुमसे कहा जाय कि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से एक सिर छोटा है, या नाटा आदमी एक सिर छोटा है तो तुम कथन को स्वीकार नहीं करोगे। तुम यह कहोगे कि तुम केवल यही कहते हो कि बड़ा आदमी आकार के कारण बड़ा है और आकार ही उसके बड़े होने का कारण है, और छोटा छोटाई से छोटा है, और छोटाई छोटा होने का कारण है। तुम यह कहते हिचकोगे कि वह एक सिर से छोटा या बड़ा है, क्योंकि उत्तर में यह कहा जा सक्ता है कि एक ही वस्तु छोटे और बड़े होने का कारण कैसे हो सक्ती है। और फिर बड़ा एक सिर से बड़ा है, जो कि छोटी चीज़ है और यह सच मुच बड़े आश्चर्य की बात है कि छोटी वस्तु आदमी को बड़ा बना दे। क्या तुम इस बात का भय न करोगे ?

सीबिस ने हँसते हुए कहा—अवश्य ही यह डरने की बात है।

साक्रटीज़—और तुम यह कहते हिचकोगे कि दस आठ

से दो द्वारा अधिक है और दो अधिकाई का कारण है। क्या तुम यह कहोगे कि आठ से दस संख्या के द्वारा अधिक है और संख्या अधिकाई का कारण है ? और ठीक इसी तरह से तुम यह कहने के वजाय कि वस्तु आकार द्वारा बड़ी है यह कहते क्या न हिचकोगे कि दो हाथ बड़ी वस्तु एक हाथ बड़ी वस्तु से अपनी बड़ाई के आधे से बड़ी है ?

सीबिस—अवश्य।

साक्रटीज़—फिर तुम सावधान रहोगे कि कहीं इस बात को न मानलो कि यदि एक में एक जोड़ा जाय तो यह जोड़ दो होने का कारण है। अथवा यदि एक विभक्त किया जाय तो भाग दो होने का कारण है। तुम इस बात का तीव्रता के साथ प्रतिवाद करोगे और कहोगे कि तुम किसी वस्तु के उत्पन्न होने का इसके सिवाय और कोई कारण नही जानते कि वह वस्तु अपने सार तत्त्व (Essence) से बँट जाय और यह कि तुम इस बँटवारे के सिवाय जिससे दो उत्पन्न होते हैं और कोई कारण उत्पन्न होने का नहीं जानते। तथा जो वस्तु दो हो जाती है उसे द्वित्व से बँटवारा करना होगा और जो एक हो जाती है उसे एकत्व से। तुम इन विभागों और जोड़ों की व्याख्या करने का भार अपने से अधिक बुद्धिमानों के ऊपर छोड़ दो। जैसी कि कहावत है, तुम स्वयं अपनी छाया और अज्ञानता से डर जाओगे, इस कारण तुमको अपने सिद्धान्त की शरण लेनी पड़ेगी और तब कही तुम उत्तर दे सकोगे। किन्तु यदि कोई तुम्हारे सिद्धान्त ही पर आक्रमण करे तो तुम उसे तब तक उत्तर न दोगे

जब तक कि तुम उसके परिणामों की विरुद्धता या अवि-रुद्धता पर विचार न कर लो। इसी तरह यदि तुमसे स्वयं सिद्धान्त का वर्णन करने को कहा जाय तो तुम पहिले एक उच्च (सर्व-सम्मत) सिद्धान्त मान कर इसी तरह कहते चलो जब तक कि तुम सन्तोपदायक विश्राम योग्य स्थान पर न पहुँच जाओ। यदि तुम स्थिति के विषय में सचमुच कोई बात ढूँढ़ निकालना चाहते हो, तो तुम अपने पहिले सिद्धान्त और उसके परिणामों को तर्क करते समय विवादी की तरह मत गड़बड़ा देना। ऐसे(विवादी) व्यक्ति बहुत करके इस बात पर एक शब्द भी कहना या तनिक सा भी विचार करना व्यर्थ समझेंगे, क्योंकि वे लोग अपने आपको प्रसन्न करने में, उस समय भी बड़े चतुर होते हैं, जब कि उनका तर्क बिल्कुल अव्यवस्थित रहता है। यदि तुम सच्चे तत्त्वविचारक हो, तो मेरे आदे-शानुसार ही कार्य करोगे।

सीबिस और सिमिअस दोनो ने कहा बहुत अच्छा। ऐकीक्रीटिस ने फ़ीडो से कहा वे बिल्कुल ठीक थे। मेरी समझ में वज्रमूर्ख भी उनका तर्क साफ़ तौर से समझ सक्ता है।

फ़ीडो ने उत्तर मे कहा सभी व्यक्तियों ने जो वहाँ उप-स्थित थे यही कहा।

एकीक्रीटिस बोला—वही हम लोग भी कहते है जो वहाँ नहीं थे, किन्तु जो तुम्हारी कथा को सुन रहे हैं। किन्तु फिर यह तर्क किस प्रकार आगे चला ?

फ़ीडो ने उत्तर दिया कि उन लोगों ने यह स्वीकार कर लिया था कि प्रत्येक आकार विद्यमान रहता है, और

प्रत्येक विकृति उस आकार का नाम पाती है, जिस आकार का (गुण) वह ग्रहण करती है। तब फिर साक्रटीज़ ने यों कहना आरम्भ किया।

साक्रटीज़—अच्छा जब तुम यह कहते हो कि सिमिअस साक्रटीज़ से तो बड़ा और फ़ीडो से छोटा है, तब क्या तुम्हारे कथन से यह ध्वनि नहीं निकलती कि सिमिअस में लम्बाई और छोटाई दोनों गुण वर्तमान हैं?

सीबिस—अवश्य ही यह तात्पर्य निकलता है।

साक्रटीज़—किन्तु तुम इस वाक्य को मान चुके हो कि यह कथन कि सिमिअस साक्रटीज़ से लम्बा है, जिस ढंग से कहा गया है वह ढंग बिलकुल ठीक नहीं है। सिमिअस इस लिये लम्बा नहीं है कि वह सिमिअस है, किन्तु अपनी ऊँचाई के कारण लम्बा है। फिर वह साक्रटीज़ से इस लिये लम्बा नहीं है कि साक्रटीज़ साक्रटीज़ है, किन्तु अपनी अपेक्षाकृत लम्बाई और साक्रटीज़ की छोटाई के कारण वह लम्बा है।

सीबिस—सच है।

साक्रटीज़—फिर सिमिअस फ़ीडो से इस लिये छोटा नहीं है कि फ़ीडो, फ़ीडो है, किन्तु फ़ीडो की अपेक्षाकृत लम्बाई के कारण, तथा सिमिअस में छोटाई होने से सिमिअस छोटा है।

सीबिस—बेशक यह बिलकुल ठीक है।

साक्रटीज़—तब चूँकि सिमिअस दोनों के बीच में है इस लिये उसे छोटा भी कहते हैं और बड़ा भी। वह अपनी लम्बाई के कारण एक की छोटाई से बढ़ जाता है और दूसरे को अपनी छोटाई से बढ़ जाने के कारण

लम्बाई देता है। फिर साक्रटीज़ ने मुस्कुराते हुए कहा—मेरी भाषा क़ानूनी दस्तावेज़ की तरह ठीक और नियमानुसार है। किन्तु मैं समझता हूँ कि इसे ऐसा ही होना चाहिये।

सीबिस ने इस बात को मान लिया।

साक्रटीज़—मैं यह इस लिये कहता हूँ कि जिससे तुम भी उसी तरह सोचो जिस तरह मैं सोचता हूँ। मेरा केवल यही विश्वास नहीं है कि बड़प्पन एक ही काल में छोटा और बड़ा दोनों नहीं हो सक्ता, किन्तु मेरा यह विश्वास भी है कि हममें जो बड़प्पन है वह कभी छोटापन नहीं हो सक्ता और कभी बढ़ाया नहीं जा सक्ता। दो में से एक बात होगी। या तो बड़प्पन अपने विपरीत अर्थात् छुटपन के आने पर पलायन कर जाय या नष्ट हो जाय। वह अपने स्थान पर रह कर कभी छुटपन को स्वीकार नही कर सक्ता, और स्वीकार करके भी वह जो (बड़प्पन लिये) था, वह नहीं रह सक्ता, जिस प्रकार मैं जो इस समय हूँ, वह छोटाई पाने के बाद नही रह सक्ता। किन्तु बड़ाई बड़े होने के कारण छोटे को सहन नहीं कर सक्ती। उसी तरह हमारी छोटाई भी कदापि बड़ी हो नही सक्ती, और न और ही कोई वस्तु, जिस अवस्था में वह पहिले थी, अपने विपरीत के होने पर उसी अवस्था में रह सक्ती है। या तो वह चली जाती है और या वह इस परिवर्त्तन में नष्ट हो जाती है।

सीबिस ने कहा—यही मेरी भी धारणा है।

फीडो ने ऐकीक्रीटिस से कहा कि इस समय किसी व्यक्ति ने—मुझे उसके नाम का ध्यान नही पड़ता, यह कहाः—

किन्तु क्या यह परिणाम हमारे पहिले परिणाम के

सर्वथा विपरीत नहीं है जिसे हमने पहिले स्वीकार कर लिया है अर्थात् बड़े से छोटा और छोटे से बड़ा उत्पन्न होता है। अर्थात् विपरीत से विपरीत की उत्पत्ति है। किन्तु अब यह परिणाम असम्भव मालूम पड़ता है।

साक्रटीज़ ने वक्ता की ओर सिर झुका कर बड़े ध्यान पूर्वक इस कथन को सुना। और फिर वे बोलेः—

साक्रटीज—तुमने बहुत ही ठीक और साहसपूर्वक यह कहा है, किन्तु तुमने इन दो प्रतिज्ञाओं के भेद पर ध्यान नहीं दिया। तब हमने यह कहा था कि मूर्त्ति (पराक्) वस्तु अपने विपरीत से उत्पन्न होती है, किन्तु इस समय हम यह कह रहे हैं कि सम्बन्धातीत विपरीत स्वयं अपने आपसे कदापि विपरीत नहीं हो सक्ता, चाहे वह हममे हो या प्रकृति में हो। उस समय हम वस्तुओ के बारे में बातचीत कर रहे थे जिनमें विपरीतता है और हमने उनका नाम उनकी विपरीतता के अनुसार रखा था, किन्तु अब हम स्वयं विपरीतता के बारे में बातचीत कर रहे हैं जिनके समवाय (Inherence) वस्तुओं को उनके नाम देते हैं। हमारा कथन यह है कि ये कभी अपने विपरीत से उत्पन्न नहीं होंगे। इतना कहकें वे सीबिस की ओर मुड़ कर बोले-क्या इस आपत्ति ने तुम्हें कुछ भी चिन्तित कर दिया था ?

सीबिस ने कहा कि नहीं इसने तो मुझे तनिक भी चिन्तित नहीं किया, किन्तु मैं इसे अस्वीकार नहीं कर सक्ता कि और कितनी ही बातें मुझे चिन्तित कर रही हैं ?

साक्रटीज—तो हम इस बात पर तो सहमत हैं कि एक विपरीत वस्तु क़दापि स्वयं अपने विपरीत नहीं हो सक्ती ?

सीबिस—हाँ, बिल्कुल सहमत हैं।

साक्रटीज—अच्छा तो मुझे फिर बतलाओ कि तुम मुझ से सहमत हो अथवा नहीं? क्या कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे तुम गर्मी या सर्दी कहते हो?

सीबिस—हाँ है।

साक्रटीज—क्या सर्दी और वर्फ अथवा गर्मी और अग्नि एक ही वस्तु है?

सीबिस—नहीं, कदापि नहीं।

साक्रटीज—गर्मी अग्नि से भिन्न है और सर्दी वर्फ से।

सीबिस—हाँ।

साक्रटीज—किन्तु मेरी यह धारणा है कि तुम इसे नहीं मानते कि बर्फ गर्म हो सक्ती है या गर्मी पा कर वह वर्फ रह सके यानी जो कुछ वह पहिले थी वही वह गर्मी पाने के बाद भी रहे। या तो वह वहाँ से (गर्मी के पास से) हटा ली जाय अन्यथा वह उसके पास रहने के कारण नष्ट हो जायगी।

सीबिस—अवश्य।

साक्रटीज—और आग ठंड के आते ही या तो वहाँ से हटा ली जाय, नहीं तो वह भी नष्ट हो जायगी। वह वहाँ रह कर ठंड को कभी वर्दाश्त नहीं कर सक्ती और न अपनी असली स्थिति मे ठंड के साथ, यानी आग और ठंडी वस्तु, रह सक्ती है।

सीबिस—ठीक है।

साक्रटीज—तो कुछ वस्तुओं के सम्बन्ध में यह ठीक है केवल आकार ही को उस वस्तु को सदा के लिये नाम देने का अधिकार नहीं है, किन्तु वह कुछ वस्तु भी नाम

पाने का अधिकार रखती है, जो आकार नहीं है, किन्तु वह चाहे जहाँ रहे उसमें आकार की आकृति है। कदाचित् एक उदाहरण दे देने से मेरा अभिप्राय साफ़ हो जायगा। विषम को सदा विषम ही का नाम मिलना चाहिये।

सीबिस—अवश्य।

साक्रटीज—अच्छा, मेरा प्रश्न यह है। क्या विषम वस्तु ही इस नाम की वस्तु है जो विषम के समान नहीं है किन्तु जिसे अपने नाम के साथ ही साथ यह भी ('विषम') जोड़ना पड़ता है क्योंकि उसका स्वभाव ऐसा है कि वह कभी विषम से अलग नहीं हो सकी अथवा और भी कोई वस्तु है? इस बात के कि जिसे मैं कह रहा हूँ अनेक उदाहरण हैं। अच्छा हम संख्या 'तीन' ही को लेलें और उस पर विचार करें। क्या हमें इसे विषम न कहना चाहिये और इसका नाम भी साथ ही साथ न लेना चाहिये, यद्यपि विषम और संख्या तीन एक ही बात नहीं है? तौ भी संख्या तीन, पाँच आदि आधी संख्याओं का यही स्वभाव है कि इनमें से प्रत्येक विषम है तथापि इनमें से कोई भी ऐसी नहीं है जो कि विषम के समान ही हो। इसी प्रकार संख्या दो, चार आदि आधी संख्याओं में से प्रत्येक सम (जुज़) है, यद्यपि वह और सम एक ही समान नहीं है। तुम इससे सहमत हो या नही?

सीबिस—हाँ अवश्य ही सहमत हूँ।

साक्रटीज—तो अब उसे देखो जो मैं तुम्हें बतलाना चाहता हूँ। केवल विपरीत आकार ही अपना विपरीतत्व स्वीकार नहीं करते, किन्तु वे वस्तुएँ भी, जो वास्तव में

विपरीत नहीं है, किन्तु जिनमे विपरीत (गुण) हैं, अपने (गुण) के विपरीत (गुण) स्वीकार नहीं करतीं, वे या तो उसके आते ही हट जाती हैं या नष्ट हो जाती हैं। क्या संख्या तीन सम होतेही नष्ट न हो जायगी ?

सीबिस—हाँ अवश्य हो जायगी।

साक्रटीज—किन्तु तो भी संख्या दो (या चार), संख्या तीन के विपरीत नहीं है।

सीबिस – नहीं कदापि नहीं।

साक्रटीज—तो केवल आकार ही ऐसे (वस्तु) नहीं है जो अपने विपरीत को स्वीकार कर सके, किन्तु इनके सिवाय और भी कुछ चीज़ें हैं जो उन्हें बर्दाश्त नहीं कर सकीं।

सीबिस—यह बिल्कुल ठीक है।

साक्रटीज—यदि हो सके, तो क्या, हम उनके स्वभाव की जाँच भी करें ?

सीबिस—अवश्य ?

साक्रटीज—तो सीबिस क्या वे वस्तुएँ ऐसी नहीं हैं जो केवल अपना ही आकार (जिसमें वे हैं) नहीं रखतीं, किन्तु जिनमें अपने से विपरीत का भी कुछ आकार रहता है ?

सीबिस—आपके कथन का क्या तात्पर्य है ?

साक्रटीज—वही जो अभी हम कह आये हैं। तुम जानते हो कि तीन का कुछ भी आकार हो, किन्तु वह तीन होने के सिवाय विषम भी है।

सीबिस—अवश्य।

साक्रटीज—अच्छा, तो हम यह कहते हैं कि आकृति का विपरीत वह आकार जो यह परिणाम निकालता है, कभी भी उस वस्तु के निकट न आवेगा।

सीबिस—कदापि नहीं आवेगा।

साक्रटीज—किन्तु विषम का आकार उसे उत्पन्न करता है।

सीबिस—हाँ।

साक्रटीज—और विषम का आकार सम के आकार से विपरीत है।

सीबिस—हाँ।

साक्रटीज—तो तीन में सम का आकार कभी भी न आवेगा।

सीबिस—कदापि नहीं।

साक्रटीज—इस लिये सम में तीन का कुछ हिस्सा नहीं है।

सीबिस—हाँ, कुछ नहीं है।

साक्रटीज—तो संख्या तीन असम है?

सीबिस—हाँ।

साक्रटीज—इतना मैंने उन वस्तुओं की परिभाषा देने के लिये कहा है जो विपरीत नहीं है, और विपरीत को स्वीकार नहीं कर सकी। इस कारण हमने यह देखा कि संख्या तीन, सम को स्वीकार नहीं कर सकी, यद्यपि वह स्वयं सम के विपरीत नहीं है। क्योंकि वह सम के विपरीत को धारण करती है। और संख्या दो विषम को, आग सर्दी को स्वीकार नहीं करती। क्या तुम इसे मानते हो कि केवल विपरीत ही विपरीत को अस्वीकार नहीं करती किन्तु वह वस्तु भी अपने गुण के विपरीत गुण को स्वीकार नहीं करसकी? मुझे तुम्हें इसकी फिर से याद दिला लेने दो, क्योंकि दुहराने में कुछ हानि नहीं है। संख्या पाँच सम का आकार स्वीकार न करेगी और न उसकी दुगनी संख्या दस विषम का। वह स्वयं विपरीत

नहीं है किन्तु तौभी वह विषम का आकार स्वीकार नहीं कर सकी। इसी तरह से डेढ़, आधा, आदि संख्याएँ पूर्णाङ्क होने का आकार स्वीकार नहीं कर सकीं। क्या तुम इसे समझते और मानते जाते हो।

सीबिस—हाँ, मैं बिल्कुल सहमत हूँ।

साक्रटीज़—अब फिर से आरम्भ करो, और मुझे उत्तर दो तथा मेरी नक़ल करो। मुझे मेरे प्रश्न के ही वाक्यों में उत्तर मत दो। मेरा मतलब यह है कि मुझे पुराने उत्तर मत दो किन्तु मैंने जो एक दूसरी रक्षित राह ढूँढ़ निकाली है उस पर चलो: और जिसे मैं तुमसे अभी कह आया हूँ। यदि तुम मुझसे पूछो कि किसी वस्तु में किस चीज़ के होने से वह गर्म हो जाती है तो मैं तुम्हें अपना पुराना उत्तर न दूँगा कि वह गर्मी है। किन्तु मैं अधिक सुधरा उत्तर दूँगा, जो मैं अभी तक कहता आया हूँ, और कहूँगा कि वह चीज़ अग्नि है। यदि तुम मुझसे पूछो कि शरीर में क्या है जिससे वह रोगी है तो मैं यह न कहूँगा कि रोग है किन्तु यह कहूँगा कि ज्वर है। फिर यदि तुम मुझसे पूछो कि अमुक संख्या में वह कौन वस्तु है जो उसे विषम बनाती है तो मैं विषमता न कहूँगा किन्तु कहूँगा कि वह एकाई है। अब तुम मेरा मतलब साफ साफ समझ गये?

सीबिस—हाँ, खूब अच्छी तरह से।

साक्रटीज़—तो मुझे, बतलाओ कौन वस्तु शरीर को जीवित रखती है।

सीबिस—आत्मा।

साक्रटीज़—क्या सदा ऐसा ही होता है?

सीबिस—अवश्य।

साक्रटीज़—तो जिसमें आत्मा रहे वही जीवित रहता है।

सीबिस—निःसन्देह।

साक्रटीज़—और क्या जीवन का विपरीत भी कुछ है?

सीबिस—हाँ।

साक्रटीज़—वह क्या है?

सीबिस—मृत्यु।

साक्रटीज़—और हम यह स्वीकार कर चुके हैं कि आत्मा जिस वस्तु के साथ आता है, उसके विपरीत को वह कभी स्वीकार नहीं कर सक्ता।

सीबिस—हाँ, अवश्य ही हम इसे मान चुके हैं।

साक्रटीज़—उसका हमने क्या नाम रक्खा है जो सम का आकार स्वीकार नहीं कर सक्ता?

सीबिस—असम।

साक्रटीज़—और उसे हम क्या कहते हैं जो संगीत या न्याय को स्वीकार नहीं कर सक्ता?

सीबिस—अन्यायी और संगीतहीन।

साक्रटीज—बहुत ठीक। और हम उसे क्या कहते हैं जो मृत्यु को स्वीकार नहीं करता?

सीबिस—अमर।

साक्रटीज—और क्या आत्मा मृत्यु को स्वीकार करता है?

सीबिस—नहीं।

साक्रटीज़—तो आत्मा अमर है।

सीबिस—हाँ, अवश्य है।

साक्रटीज—अच्छा, तो क्या यह प्रमाणित हो गया? तुम क्या समझते हो?

सीबिस—हाँ, साक्रटीज़ यह बहुत अच्छी तरह प्रमाणित हो गया।

साक्रटीज—अच्छा सीबिस, यदि विषम विनाशी (नष्ट होने योग्य) होता तो क्या तीन भी विनाशी न होता?

सीबिस—अवश्य होता।

साक्रटीज—और यदि सर्दी विनाशी होती तो बर्फ़ गर्म किये जाने पर नष्ट न होती और बिना पिघले ही रह जाती। वह न तो नष्ट हो जाती और न गर्मी को स्वीकार ही करती।

सीबिस—सच है।

साक्रटीज—इसी तरह, यदि गर्मी विनाशी होती तो जब कभी अग्नि पर ठंड पड़ती तो वह कभी न बुझती और न नष्ट होती और वह कदापि ठंड को स्वीकार न करती।

सीबिस—निःसन्देह, ऐसा ही होता।

साक्रटीज—क्या अमर को भी हम यही न कहेंगे? यदि अमर अविनाशी है तो आत्मा (जिसे हम अमर साबित कर चुके हैं) कभी मृत्यु से नष्ट नहीं हो सक्ता, जो कुछ हमने कहा है उससे तो यही तात्पर्य निकलता है कि जिस प्रकार तीन या विषम, सम नहीं हो सक्ता, या जिस प्रकार आग ठंटी नहीं हो सक्ती, उसी प्रकार आत्मा कभी मृत्यु को स्वीकार नहीं कर सक्ता। किन्तु यह कहा जा सक्ता है कि मान भी लिया जाय कि विषम सम के पास आने पर सम नहीं हो सक्ता किन्तु विषम के नष्ट होने पर उसके स्थान पर सम क्यों न आ जाय? उत्तर में हम यह नहीं कह सक्के कि वह नष्ट नहीं हो सक्ता क्योंकि असम

(विषम) अविनाशी नहीं है, यदि हमने यह मान लिया होता कि असम अविनाशी है तो कदाचित् हम सरलता से विरोध करते हुए यह कह देते कि सम के आते ही विषम और तीन हट जाते हैं। और यही दलील हम अग्नि और गर्मी आदि के विषय में भी पेश करते। क्या हम यह नहीं कर सक्ते थे?

सीबिस—हाँ, कर सक्ते थे।

साक्रटीज़—यदि हम यह मान चुके हैं कि आत्मा अमर है तो वह केवल अमर ही नहीं रहेगा किन्तु अविनाशी भी होगा। नहीं तो हमें दूसरा तर्क काम में लाना पड़ेगा।

सीबिस—नहीं, इस विषय में अब दूसरे तर्क की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि यदि अमर ही, जो अनन्त है, नष्ट हो सक्ता है, तो कौन चीज़ अविनाशी रहेगी?

साक्रटीज़—और सभी लोग इस बात को मान लेंगे कि ईश्वर, जीवन का आवश्यक आकार और वह सभी जो अमर है, कभी भी नष्ट नहीं होता।

सीबिस—आदमियों की तो बात क्या सब देवता तक इस बात को मान लेंगे।

साक्रटीज़—तो यदि अमर अविनाशी है तो क्या आत्मा जो अमर है अविनाशी होगा?

सीबिस—अवश्य ही उसे होना चाहिये।

साक्रटीज़—तो जब मृत्यु मनुष्य पर आक्रमण करती है तब मनुष्य का नाशवान् भाग मर जाता है, किन्तु उसका अमर भाग मृत्यु के आगे से भाग जाता है तथा सही सलामत बच रहता है।

सीबिस—मालूम तो यही पड़ता है।

साक्रटीज—तो सीबिस, आत्मा अमर और अविनाशी है। और अवश्य ही हमारे आत्मा परलोक में विद्यमान रहेंगे।

सीबिस—साक्रटीज़, मुझे अब कुछ कहना नहीं है-आपकी गवेषणा ने मुझे पूर्णरूप से संतुष्ट कर दिया है। हाँ, यदि सिमिअस को या और किसी को कोई आपत्ति हो तो उसे उचित है कि वह इसी समय कह दें, क्योंकि मेरी समझ में इस समय के सिवाय और कोई समय उसे इस विषय पर वार्त्तालाप करने का न मिलेगा।

सिमिअस ने कहा—नहीं, सीबिस, जो कुछ तुमने कहा है, उसके सिवाय मुझे और कोई बात कहनी नहीं थी। तौ भी मेरे मन में कुछ न कुछ संदेह रह ही गये हैं, क्योंकि हमारी बातचीत का विषय बड़ा गम्भीर है, और मैं मनुष्य की दुर्बलता पर विश्वास नहीं करता।

साक्रटीज ने कहा—सिमिअस, तुम ठीक कहते हो। यही नहीं किन्तु तुम्हें स्वयं मूल वाक्यों को, वे चाहे जितने ठीक क्यों न मालूम पड़ते हों, फिर से जाँच कर लेनी चाहिये और जब तुम उसका यथेष्ट पृथक्करण कर लोगे तब तुम तर्क को पूरी तरह से, जितना मनुष्य की शक्ति में है-समझ सकोगे, और जहाँ एक बार तुम्हारे ध्यान में यह बात चढ़ गयी तहाँ फिर तुम्हें किसी की आवश्यकता न पड़ेगी।

सिमिअस—आप ठीक कहते हैं।

साक्रटीज—तब, मेरे मित्र, हमे यह बात सोचनी चाहिये। यदि यह सत्य हो कि आत्मा अमर है, तो हमें केवल इसी

जीवन के लिये नहीं किन्तु सदा के लिये उसकी खबरदारी करनी चाहिये। अब हम देखते हैं असावधानी करने से कितने भय की सम्भावना है। क्योंकि यदि मृत्यु का अर्थ सभी बातों से छुटकारा होता तो वह बुरे मनुष्यों के लिये तो नियामत ही होती, क्योंकि मरने पर वे आत्मा के साथ शरीर से छुटकारा पा जाते और साथ ही साथ अपनी बुराई से भी। किन्तु अब हम इस बात को जान चुके हैं कि आत्मा अमर है। इस लिये उसको पाप से बचने के लिये केवल एक उपाय शेष है, और वह उपाय यह है कि वह अपने को भरसक बुद्धिमान् और परिपूर्ण बनावे। क्योंकि आत्मा परलोक में सिवाय अपनी शिक्षा और कृति बुद्धिता के और कुछ साथ नहीं ले जाता। ऐसा कहा जाता है कि परलोकयात्रा के आरम्भ ही में ये वस्तुएँ मृत मनुष्य के उपयोग या दुरुपयोग में आती हैं, क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि वह आत्मा (व्यक्ति) जो मृत मनुष्य के आत्मा को सँभालता है, पहिले उसे स्थान विशेष पर ले जाता है, जहाँ मृतक इकट्ठे होते हैं और वहाँ उन्हे (अपने कर्मों के अनुसार) स्थान पर जाने की आज्ञा सुनाई जाती है। और वहाँ से वे पथप्रदर्शक के साथ हो लेते हैं, जो इन्हें पाताल मे ले जाते हैं। जब वे वहाँ (अपने कर्मों के) फल भोग चुकते हैं, और वहाँ निर्दिष्ट समय तक रह चुकते हैं, तब उन्हें दूसरा पथप्रदर्शक युगों के बाद वापस लाता है। सो यह यात्रा ऐस्किलस के कथन के अर्थात् जैसा कि उसने टेलिफ़स में कहा है कि "हेडिस को सरल राह ले जाती है" विपरीत है। किन्तु मैं समझता हूँ कि वह राह न तो सरल है और न अकेली है। यदि ऐसा होता तो पथ-

प्रदर्शकों की कोई आवश्यकता न होती, क्योंकि यदि एक ही राह होती तो कोई भी रास्ता न भूलता। किन्तु इस राह की बहुत सी शाखें और घुमावदार गली होंगी। क्योंकि मरने के बाद जो शरीर दफ़न करते समय क्रियाएँ होती है, उनसे मैंने यही तात्पर्य निकाला है, बुद्धिमान् और शिक्षित आत्मा अपने प्रदर्शक के पीछे पीछे चुपचाप चला जाता है और उस लोक की वस्तुओं से वह अपरिचित नही होता, किन्तु वह आत्मा, जो शरीर के लिये इच्छुक है, शरीर के आस पास और दृष्ट संसार मे फड़फड़ाता रहता है तथा (वहाँ रहने के लिये) कष्ट के साथ अमित उद्योग करता है। अन्त में वह व्यक्ति (आत्मा) जो उसका रखवाला होता है, उसे ज़बर्दस्ती वहाँ से घसीट ले जाता है, और जब वह उस स्थान पर आता है जहाँ और आत्मा इकट्ठे हैं, तब यदि वह पापी होता है, या ख़ून करने से सम्बन्ध रखे हुए रहता है, या वह ऐसे ही और किसी पाप का भागी होता है, तो और आत्माएँ उससे घृणा करते हैं और उसे अपने पास तक नहीं फटकने देते। वह अकेला ही और बड़े कष्ट के साथ इधर उधर भटकता रहता है तथा अन्त मे ज़बर्दस्ती वह अपने कर्मों के अनुरूप स्थान पर भेज दिया जाता है, किन्तु वह आत्मा, जिसने अपना जीवन संयम और शुद्धता के साथ व्यतीत किया है, देवताओं का साथ करता है और अपने अनुरूप स्थान में रहता है। इस पृथ्वी पर बहुत से अद्भुत स्थान हैं, और जैसा कि एक मित्र ने मुझे विश्वास दिला दिया है, उस स्थान की प्रकृति और आकार वैसे नही हैं जैसे कि लोग कहा करते हैं।

सिमिअस ने कहा—साक्रटीज़, आपका तात्पर्य क्या है। मैंने स्वयं पृथ्वी के वारे में वहुत कुछ सुन रखा है। किन्तु मैंने वह कभी नहीं सुना जिसका आपको विश्वास है। मुझे उसका वर्णन सुनने की बड़ी लालसा है।

साक्रटीज—अच्छा तो सिमिअस, मैं यह समझता हूँ कि उसका वर्णन करने के लिये ग्लाकस की ऐसी योग्यता दर्कार नहीं है किन्तु मुझे विश्वास है कि उसको सत्य साबित करने के लिये ग्लाकस की योग्यता भी यथेष्ट नही है। मुझे विश्वास है कि मैं यह नहीं कर सक्ता। इसके अलावा यदि मुझमे उसे साबित करने की योग्यता होती भी, तो भी मुझे अपना तर्क पूरा किये ही विना मरना पड़ता, किन्तु पृथ्वी के आकार आदि का वर्णन करने मे, जिसके सत्य होने का मुझे भरोसा है, मैं कुछ भी आपत्ति नहीं देखता।

सिमिअस—खैर, वही सही।

साक्रटीज—अच्छा तो पहिले मेरा यह विश्वास है कि पृथ्वी गोल वस्तु है और विश्व के वीच मे रखी हुई है, और इस कारण से उसका (बोझ) संभालने के लिये वायु या किसी और शक्ति की आवश्यकता नहीं है। आकाश का सम आकार (Equiform) और स्वयं पृथ्वी का समतुलत्व (Equipoise) उसको सँभालने के लिये यथेष्ट है। समतुल वस्तु सम आकार के वीच में रहने पर कभी इधर उधर नहीं झुक सक्ती। वह अटल और निश्चल तथा साम्यावस्था में रहेगी। यह पहिली वात है जिस पर मैं विश्वास करता हूँ।

सिमिअस—यह ठीक है।

साक्रटीज—मेरा यह भी विश्वास है कि पृथ्वी बहुत बड़ी है और हम लोग जो 'फासिस' और हरक्यूलीज़ के खम्भों के बीच में रहते हैं, केवल एक छोटे हिस्से को बसाये हुए हैं, और समुद्र के एक किनारे इस प्रकार रहते हैं जिस प्रकार मेंढ़क या चींटी किसी दलदल के किनारे रहती हैं। मेरा यह भी विश्वास है कि पृथ्वी के और भागों में, ऐसी ही जगहों में और लोग भी बसे हुए हैं, क्योंकि पृथ्वी पर हर एक जगह प्रत्येक आकार के ऐसे गड्ढे हैं जिनमें जल और हवा जमा होती है। किन्तु पृथ्वी स्वयं आकाश की उस पवित्रता में विशुद्धरूप से स्थित है, जहाँ दूसरे नक्षत्र हैं और जिसे लोग साधारण रीति से 'ईथर' (आकाश तत्त्व) कहते हैं। जल, वायु, ओस आदि वस्तुएँ जो इन गड्ढों में जमा हो जाती हैं, उसकी (आकाश तत्त्व) की तरछट है। यद्यपि हम लोग यही समझते हैं कि हम पृथ्वी के तल पर रहते हैं, तथापि वास्तव में हम लोग इन्हीं गड्ढों में बसे हुए हैं। हम उस व्यक्ति के समान हैं जो समुद्र में रहता था तथा जो यह समझता था कि मैं समुद्र के तल पर रहता हूँ और जो यह समझता था कि समुद्र ही आकाश है क्योंकि वह समुद्र (के जल) होकर ही सूर्य चन्द्रादि नक्षत्रों को देखा करता था, किन्तु जो कभी समुद्र के तल पर नहीं आ सका, और न समुद्र के बाहर सिर निकाल सका और न यह देख सका कि हमारा संसार उसके निवास स्थान से कितना शुद्ध है। हम ठीक उसी दशा में हैं। हम रहते तो पृथ्वी के एक गड्ढे में हैं और समझते यह हैं कि हम उसके तल पर रहते हैं, तथा वायु को आकाश बतलाते हैं और यह समझते हैं कि

उसीमें नक्षत्र घूमा करते हैं। किन्तु यथार्थ में हम वायु के तल पर पहुँचने के लिये असमर्थ हैं। क्योंकि यदि किसी व्यक्ति के पर लगे होते और यदि वह उड़ सक्ता तो वह ऊपर से अवश्य ही उसी तरह और भी संसार को देखता जिस प्रकार मछलियाँ ऊपर आकर हमारे संसार को देखती हैं। यदि उसकी दृष्टि उस दृश्य को बर्दाश्त कर सक्ती तो अवश्य ही वह देखता कि वहाँ ही असली आकाश है तथा वही सच्ची पृथ्वी और सच्ची ज्योति है। क्योंकि यह पृथ्वी, उसके पत्थर तथा उसके अन्य भाग उसी तरह बिगड़ गये हैं जिस तरह समुद्र की चीज़ें उसके निमकीन जल से बिगड़ जाती हैं। समुद्र मे किसी काम की कोई वस्तु उत्पन्न नहीं होती या जो वस्तु होती भी है वह निर्दोष नहीं होती, किन्तु जहाँ कहीं ज़मीन है भी वहाँ केवल गुफा, रेत कीचड़ के मैदान तथा ऐसी ही निरर्थक वस्तु हैं, जो हमारी पृथ्वी की सुन्दर वस्तुओं की तुलना नहीं कर सक्तीं। किन्तु तुम सोच सक्ते हो कि उस दूसरे संसार की वस्तुएँ हमारे संसार की वस्तुओं से कितनी सुन्दर होवेंगी। सिमिअस, मैं तुम्हें इस बात पर एक कथा सुना सक्ता हूँ कि आकाश के नीचे कौन वस्तु है। वह तुम्हारे सुनने योग्य है।

सिमिअस—अवश्य ही साक्रटीज़ हम लोग आपकी कहानी बड़े चाव से सुनेंगे।

साक्रटीज—अच्छा मेरे मित्र, मेरी कहानी यह है। पहिले तो यह पृथ्वी-यदि ऊपर से इसे कोई देख सके-तो उन बारह गेंदों में से एक गेंद की तरह है जो चमड़े के बारह टुकड़ों से ढकी रहती है, और जो नाना प्रकार के रंगों से

रंजित रहती है, मानो हमारी पृथ्वी के रंग के, वे रंगीन नमूने हैं। किन्तु सारी पृथ्वी उन रंगों से ढँकी है, उसमें केवल ये ही रंग नहीं हैं किन्तु और भी रंग हैं जो इन रंगों से कहीं अधिक शुद्ध और सुन्दर हैं। क्योंकि उसका कुछ हिस्सा तो अत्यन्त कमनीय बैंजनी रंग का है, कुछ हिस्सा सुनहले रंग का है—और उसका श्वेत रंग तो खड़ी या बर्फ से भी अधिक श्वेत है। इसी तरह से उस में और भी रंग हैं, तथा कुछ रंग तो उसमें इतने सुन्दर हैं जितने सुन्दर हमने कभी नहीं देखे। स्वयं उसके गढ़े, जिनमें जल, वायु आदि भरे हैं, एक अनोखे रंग के हैं, और दूसरों की विभिन्नता से वे अजीब तरह से चमकते हैं जिससे उसका स्वरूप शृङ्खलाबद्ध तथा अनेक प्रकार के सत हों ऐसा मालूम पड़ता है। और जो कुछ—वृक्ष, फूल, फल आदि—उस पृथ्वी पर उगता है, वह इस पृथ्वी पर उगने वालों से कहीं अधिक अच्छा होता है। उसी तरह (उस लोक की) पहाड़ियाँ और पत्थर, (इस लोक की) पहाड़ियों और पत्थरों से चिकनाहट, स्वच्छता और रंग में कहीं अच्छे होते हैं। वे रत्न, जैसे लाल, सूर्यकान्त, पन्ना आदि—जिन्हें हम इस लोक में बड़ा मूल्यवान् समझते हैं, उस लोक के रत्नों की चूर और टुकड़े भर हैं। वहाँ के सभी पत्थर हमारे रत्नों के समान, बल्कि उनसे भी अधिक सुन्दर होते हैं। इसका कारण यह है कि वे पवित्र होते हैं, तलछट द्वारा लाये हुए सड़ाव और निमकीन जल द्वारा, जो गढ़ों में इकट्ठे हो जाते हैं, हमारे रत्न खराब हो जाते हैं, और इसी से हमारे पत्थर, पृथ्वी, पेड़ और प्राणी रोग से पीड़ित और कुरूप हो जाते हैं। ये

सब वस्तुएँ तथा सोना और चाँदी तथा ऐसी ही चीज़ें असली पृथ्वी की शोभा बढ़ाती है। वे वहाँ, अपने आकार, बहुतायत और नाना स्थानों मे पाये जाने के कारण उजागर हैं। सो जो मनुष्य उनको देखता है-वह सचमुच बड़ा सुखी होता है। वहाँ बहुत से जीव रहते है, वहाँ मनुष्य भी हैं, कुछ भीतर पृथ्वी पर रहते हैं, जिस तरह हम समुद्र के किनारे रहते हैं कुछ उसी तरह हवा के किनारे रहते हैं, कुछ हवा से घिरे हुए द्वीपों में और कुछ महाद्वीपों में रहते हैं। सारांश यह कि वे वायु का उपयोग उसी तरह करते है, जिस तरह हम पानी का करते हैं, और जिस तरह हम वायु का उपयोग करते हैं उसी तरह वे ईथर (आकाश तत्त्व) का उपयोग करते हैं। वहाँ का ताप-परिमाण (Temperature) ऐसा है कि वे लोग रोगों से मुक्त रहते है तथा हम लोगों की अपेक्षा अधिक दिन जीते है। तथा दृष्टि, श्रवण, घ्राण एवम् अन्यान्य चेतन शक्तियों में वे हमसे ठीक उसी तरह बढ़ कर हैं जिस प्रकार वायु जल से, और ईथर वायु से शुद्ध है। इसके सिवाय वहाँ देवालय एवम् मन्दिर है जिनमे देवता लोग सशरीर वास करते है। वहाँ के लोग देवताओं के वचन और देववाणी (ऑरेकल) को सुनते है, उनको स्वप्न मे देखते है, और उनसे सम्मुख सम्भाषण करते है। वे सूर्य, चन्द्रमा तथा नक्षत्रादि को उनके असली स्वरूप मे देखते है तथा दूसरे विषयों में भी उनका सुख इन्हीं बातों के समान है।

पृथ्वी का और जो कुछ उसके ऊपर है, उसका भी यही स्वभाव है। इस भूमण्डल की खोहो मे बहुत स्थान है,

उनमें से कुछ तो हमारे गड्ढे से भी गहरे और अधिक चौड़े मुँह के हैं, और कुछ गहरे तो हैं पर इतने चौड़े नहीं हैं, तथा कुछ हमारे गड्ढे से चौड़े और छिछले हैं। ये सब गड्ढे पृथ्वी के नीचे बनी हुई सुरंगों द्वारा एक दूसरे से मिले हुए हैं। कुछ सुरंगें तो चौड़ी और कुछ सकरी हैं। ये सब रास्ते हैं जिनमें हो कर जल एक गड्ढे से दूसरे गड्ढे में बहता है। इनमें हो कर, पृथ्वी के नीचे नीचे अमोघ ठंडे या गरम जल की नदियाँ बहा करती हैं, तथा बहुत सी नदियाँ जिनमे आग बहा करती है, तरल कीचड़ से भरी रहतीं, जिनमे कुछ तो साफ होती हैं और कुछ मटीले रंग की होती हैं। ये नदियाँ उसी तरह की होती हैं, जिस तरह की नदियाँ सिसली द्वीप में लावा की नदी के पहिले निकलती हैं और कुछ नदियाँ तो स्वयं 'लावा' की नदी के समान ही होती हैं। ये सब एक एक कर के प्रत्येक गढ़े को भर देती हैं। ये सब उसमें एक प्राकृतिक झुलाव के द्वारा ऊपर नीचे होती रहती हैं। यह झुलाव पृथ्वी से उत्पन्न होता है। इसका कारण यह है: एक गढ़ा और सब गढ़ों से बड़ा है और वह पृथ्वी के एक सिरे से दूसरे सिरे तक आर पार चला गया है। होमर उसका वर्णन इन शब्दों में करता है :—

'दूर, जहाँ अति गहन गढ़ा पृथ्वी के नीचे,'—उसने तथा अन्य कवियों ने इसका नाम टारटरस बतलाया है। सब नदियाँ इसमे जा गिरती हैं और इसमें से निकल कर फिर बहने लगती हैं। प्रत्येक उस स्थान के अनुकूल हो जाती हैं जहाँ हो कर वह रहती है। सब नदियाँ इस गढ़े में और इसके बाहर इस कारण बहती हैं कि तरल पदार्थ

को ठहरने के लिये कोई चीज़ नही मिलती। वह ऊपर नीचे झूमती है और लहर मारती है, तथा हवा भी उसके चारों ओर यही करती है। क्योंकि वह नदी के साथ ही भीतर जाती और बाहर आती है। जिस प्रकार साँस लेने में हवा बाहर और भीतर खींची जाती है उसी प्रकार हवा भी पानी के साथ लहराने और झूमने के कारण जिस समय वह बाहर आती या भीतर जाती है अकथनीय और घोर गर्जन करने लगती है। जब जल वेग के साथ पाताल में जाता है, उस समय वह उन नदियों की सुरंगों को भर देता है, मानो वह उस में ठूँस दिया गया हो। और फिर जब वह वहाँ से इधर निकलता है तब इधर की नदियों को भर देता है, और तब वे (झरने) पृथ्वी की खाड़ियों में होकर बहते हैं और वहाँ से बह कर समुद्र, झील, नदी, स्रोत आदि बनाते हैं तब वे फिर एक बार पृथ्वी में धँस जाती है, और कोई लम्बी यात्रा के बाद और कोई छोटी ही यात्रा के बाद फिर से टारटरस में जा गिरती हैं। कुछ तो उस तल से बहुत नीचे गिरती हैं जिस तल से वे निकली थीं और कुछ उस तल से थोड़े ही नीचे। किन्तु वे सभी अपने उद्गम से नीचे ही गिरती हैं। और कुछ तो उसी तरफ़ से निकल पड़ती हैं, जिधर से वे गयीं थीं और कुछ दूसरी ओर से, तथा कुछ ऐसी भी हैं जो सर्प की गिडरी की तरह एक या कई बार पृथ्वी का लपेटा लगाने के बाद, जितना नीचे सम्भव होता है, टारटरस में जा गिरती हैं। वे दोनों ओर से पृथ्वी के केन्द्र तक उतर जाती हैं किन्तु आगे नहीं जातीं। इस स्थान के आगे उन्हें उतरना नहीं किन्तु चढ़ना पड़ता है।

झरने कितने ही बड़े और भाँति भाँति के है। किन्तु इन सब में चार बहुत बड़े हैं, और इनमें सब से बड़े और सब से बाहरी का नाम ओशेनस है, जो पृथ्वी के चारों ओर बहता है। ओशेनस के आमने सामने और उससे उलटी ओर बहने वाला एकरन है जो मरुस्थानों में हो कर बहता है और फिर पृथ्वी के नीचे बहता हुआ 'एकरूसियन' झील मे जा गिरता है जहाँ मृत्यु के पश्चात् मरों के आत्मा निर्दिष्ट काल तक निवास करते हैं–उनमें कुछ तो वहाँ थोड़े ही दिन और कुछ वहाँ बहुत दिनों रहते हैं। इसके बाद वे पशुओं का शरीर धारण करने के लिये भेज दिये जाते हैं। तीसरी नदी इन दोनों के बीच में निकलती है और अपने उद्गम के पास ही एक बड़े और अग्निमय स्थान में गिरती है, जहाँ वह हमारे समुद्र से भी बड़ी एक झील बनाती है जिसमें जल और कीचड़ खौलते रहते हैं, वहाँ से उसका मटीला और कीचड़ मिला जल पृथ्वी की परिक्रमा करके एकरूसियन झील के अन्तिम भाग में गिरता है। किन्तु दोनो का जल मिलता नहीं है और फिर इस नदी का जल पृथ्वी के नीचे कई बार चक्कर काट कर टारटरस के निचले हिस्से में गिरता है। इस नदी को लोग 'पाइरीफ्लेजेथन' कहते हैं। इसके कुछ भाग पृथ्वी की उन नदियो मे वह आते हैं जिनमें लावा बहा करता है। चौथी नदी दूसरी तरफ है। यह कहा जाता है कि यह भयङ्कर और जंगली प्रदेश में हो कर बहती है। इसका रंग निलाई लिये हुए घोर कृष्णवर्ण का है। इसे स्टीजियन नदी कहते हैं और इसकी बनाई झील का नाम स्टिक्स है। झील में

गिरने के बाद और अपने जल में अद्भुत शक्ति पाने के बाद वह पृथ्वी मे धँस जाती है। वहाँ वह पाइरीफ्लेजेथन नदी के उलटी ओर चक्कर काट कर एकरूसियन झील में दूसरी ओर से आकर उससे मिलती है। इसका जल भी दूसरी नदियो के जल से नहीं मिलता। वह घेरे के स्वरूप मे बहकर पाइरीफ्लेजेथन के मुहाने के सम्मुख ही टार-टरस में गिरती है। कवि लोग इसका नाम कासिटस बतलाते हैं।

इन प्रदेशो की ऐसी प्रकृति है, और जब मृतकों के आत्मा उस स्थान पर जाते हैं जहाँ उनकी रखवाली करने वाला दूत उन्हें ले आता है, तब प्रत्येक को पहिले उसके कर्मानुसार दण्डाज्ञा सुनायी जाती है। उन लोगो के आत्मा जिनका जीवन न तो बहुत अच्छा और न बहुत ख़राब ही होता है एकरन नदी को जाता है और वहाँ से नावों पर सवार हो कर झील की ओर रवाना होता है। वहाँ वे रहते हैं और उन्हें उनके पापों का दण्ड दिया जाता है और वे पवित्र तथा पापमुक्त किये जाते हैं, वहीं वे अपने पुण्य के अनुकूल पुरस्कार पाते हैं। किन्तु वे सब जिनके पाप अपार हैं, अर्थात् जिन्होंने देववस्तु का अपहरण किया है, या अधम या अन्याय से हत्या की है या ऐसे ही अधम पातक किये हैं, टारटरस में ज़ोर के साथ फेंक दिये जाते हैं, जहाँ से वे कभी नही निकलते। वे लोग, जिन्होंने पातक तो किये हैं, किन्तु वे ऐसे नहीं हैं जिनका प्रायश्चित्त न किया जा सके, उदाहरण के लिये जैसे वे लोग जो क्रोध में माता पिता पर आक्रमण कर बैठे हैं, किन्तु जो शेष जीवनभर अपने कर्म के लिये पछताते रहे हैं,

था वे जिन्होंने ऐसे ही किसी समय में नरहत्या कर डाली है, टारटरस में भेज दिये जाते है, किन्तु जब वे वहाँ एक साल तक रह चुकते है तब नरहत्यारे को कासिटस और मातृघातक या पितृघातक को पाइरीफ्लेजेथन की लहरे एकरूसियन झील तक ले आती है वहाँ वे उन लोगों से क्षमा प्रार्थना करते हैं जिनको उन्होंने सताया या मार डाला था, और उनसे यह प्रार्थना करते है कि वे उनको निकाल लें और अपना साथी बनाले। यदि उनकी प्रार्थना स्वीकार हो गयी तब तो वे निकल आते हैं और उनकी यंत्रणा बन्द हो जाती है, किन्तु यदि उनकी प्रार्थना अस्वीकार हुई तो वे फिर टारटरस में भेज दिये जाते है और वहाँ से फिर वे नदियों मे जाते है। जब तक वे क्षमा नही पा जाते तब तक वे इसी तरह चक्कर लगाया करते हैं। उनको यही दण्ड दिया जाता है। किन्तु वे, जिनका जीवन अत्यन्त पवित्र था, संसार से इस तरह छुटकारा पा जाते हैं, जिस तरह क़ैदख़ाने से छुटकारा मिल जाता है। वे पवित्र प्रदेशों मे चढ़ जाते है और पृथ्वी के तल पर रहते हैं। और वे जिन्होंने ज्ञान से अपने को परिमार्जित कर लिया है, तब से (भौतिक) शरीर छोड़ देते है और इनसे भी सुन्दर स्थानों में रहने के लिये आगे बढ़ते हैं। इन स्थानों का वर्णन करना सहल नहीं है। किन्तु सिमिअस इन्हीं कारणों से हमको ऐसी कोई भी बात बिना की न छोड़नी चाहिये जिससे हम ज्ञान और पुण्य उपार्जन कर सके हो। (इसका) पुरस्कार दिव्य है और आशा महती है।

कोई भी व्यक्ति इस बात की ज़िद न करेगा कि ये चीजें ठीक ऐसी ही है जैसी कि मैंने कही हैं। किन्तु

मैं समझता हूँ कि वह इस बात पर अवश्य विश्वास करेगा कि आत्मा के, तथा उसके निवासस्थान के बारे में जो कुछ कहा गया है यदि बिल्कुल वही नहीं तो उससे मिलती जुलती कोई बात सत्य है, क्योंकि यह साबित कर दिया गया है कि आत्मा अमर है और यह कि इस बात पर किसी भी वस्तु की बाज़ी लगाना समय का दुरुपयोग न होगा। यह साहस उचित है और उसको अपने सन्देहो को इस प्रकार के मंत्रों से वश में कर ले। कि इसी कारण मैं इस कथा को अब तक बढ़ाता आया हूँ। इन कारणों से यदि मनुष्य ने शारीरिक सुख और सजावट की पर्वाह नही की, क्योंकि वह समझता था कि वे उसके लिये कुछ भी न थे और क्योंकि उसने सोचा था कि इनके कारण उसको केवल दुःख के सिवाय सुख न होगा तो उसे अपनी आत्मा के बारे में निश्चिन्त रहना चाहिये और यदि उसने विद्या के आनन्द के उपभोग का उद्योग किया है, तथा जिसने अपने आत्मा को उसके प्रकृत गुणों–संयम, न्याय, साहस, स्वतन्त्रता, सत्य आदि से विभूषित किया है वह इस परलोकयात्रा के लिये सदैव तैयार है, उसे भाग्य चाहे जब वहाँ जाने की आज्ञा दे देवे। सीबिस, सिमिअस तथा अन्य लोग इस यात्रा पर अपने अपने समय पर अग्रसर होगे। किन्तु जिस प्रकार वियोगान्त नाटककार कहते है–मुझे आज ही भाग्य बुला रहा है और अब मुझे स्नान करने के लिये जाना चाहिये। मैं समझता हूँ कि विष पीने से पहिले मुझे स्नान कर लेना चाहिये जिससे स्त्रियों को मेरे मृत शरीर को धोने की तकलीफ़ न करनी पड़े।

जब साक्रटीज़ ने अपना कथन समाप्त कर दिया तब क्रीटो कहने लगा—

क्रीटो—अच्छा साक्रटीज़, ऐसा ही करो। किन्तु क्या तुम अपने मित्रों को या मुझको अपने बालबच्चों या और किसी के बारे मे कुछ आज्ञा देना चाहते हो? हम तुम्हारी सेवा क्यों कर भली प्रकार कर सके हैं?

साक्रटीज़—क्रीटो, जो मै तुमसे सदा कहा करता हूँ, उसीके करने से तुम मेरी सेवा भली प्रकार करोगे। अपने आत्मा की ख़बर्दारी रखो, यद्यपि तुम अभी मुझसे कोई वादा नहीं करते, किन्तु इतना करने ही से तुम मेरी, मेरो की और अपनी सेवा कर सकोगे। किन्तु यदि तुम स्वयं अपने आत्मा की ओर से असावधान हो, और यदि तुम उस पथ पर नही चलते जो आज तथा अन्य दिनों के वादानुवाद से निश्चित किया गया है, तो तुम्हारे आज के वादे, वे चाहे जितने उत्साह और हृदय से क्यों न किये गये हों, बिल्कुल ही व्यर्थ होंगे।

क्रीटो—हम उस पथ को अनुसरण करने का भरसक उद्योग करेंगे, किन्तु हमें यह बतलाओ कि हम तुम्हें किस तरह गाड़ें?

साक्रटीज़—चाहे जिस तरह गाड़ना, केवल मुझे पहिले पकड़ रखो और ऐसा करो कि मैं तुमसे भागने न पाऊँ

तदनन्तर वे हम लोगों की तरफ देख कर मुसकुराए और कहने लगे—

साक्रटीज़—मेरे मित्रो, मैं क्रीटो को इस बात का विश्वास नहीं दिला सका कि मैं वही साक्रटीज़ हूँ जो उसके

साथ बातचीत करता रहा हूँ और जो उसके तर्कों को नियमबद्ध करता आया हूँ। वह समझता है कि मैं शरीर हूँ जिसे वह अभी हाल ही मृत देखेगा और वह पूछता है कि वह मुझे किस प्रकार गाड़े। मेरे सब तर्क, जिनमें मैंने यह साबित किया है कि विष पीने के बाद, मैं तुम्हारे पास न रहूँगा किन्तु आनन्दमय जीवों के सुखी स्थान को चला जाऊँगा, तथा जिनसे मैंने स्वयं अपने को और तुम लोगों को सन्तोष दिलाने का उद्योग किया, उस पर व्यर्थ हो गये। इस कारण जिस तरह वह अभियोग के समय मेरा ज़ामिन हुआ था उसी प्रकार—किन्तु भिन्न रीति से—तुम उसके निकट मेरे ज़ामिन रहो, उस समय वह इस लिये ज़ामिन हुआ था कि मैं उपस्थित रहूँगा, किन्तु तुम इस बात की ज़मानत दो, कि मैं यहाँ न रहूँगा किन्तु चला जाऊँगा। तब उसे मेरी मृत्यु का शोक अधिक न होगा। और जब वह मेरे मृत शरीर को जलते या गड़ते देखेगा तब वह (तुम्हारे ज़ामिन होने से) यह न सोचेगा कि मैं भयङ्कर दुःख सह रहा हूँ। और मेरे शवदाह के समय वह यह न कहे कि वह साक्रटीज़ को जला या गाड़ रहा है। प्यारे क्रीटो, शब्दों का दुरुपयोग करना केवल एक दोष ही नहीं है किन्तु इससे आत्मा में भी बुराई पहुँच जाती है। तुमको प्रसन्न रहना चाहिये, और यह कहना चाहिये कि तुम मेरा शरीर गाड़ रहे हो, और उसे तुम जैसे चाहो और जैसे उचित समझो गाड़ो।

इन शब्दों के कहने के साथ ही वे स्नान करने के लिये एक दूसरे कमरे में गये। क्रीटो भी उनके साथ गया और हमसे थोड़ी देर इन्तज़ार करने को कह गया। इस लिये

हम बैठे बैठे उनके तर्क पर वादविवाद करने लगे और फिर इस विपत्ति की भयङ्करता पर विचार करने लगे। ऐसा मालूम पड़ता था कि हमारे पिता की मृत्यु हो रही है और हम जन्म भर के लिये अनाथ हुए जाते हैं। जब वे नहा चुके तब उनके लड़के (उनका एक लड़का उस समय कोई सोलह वर्ष का था और दो बिल्कुल बच्चे थे) और परिवार की स्त्रियां उनके सामने लायी गयीं, वे उनसे क्रीटो की उपस्थिति में मिले और वहीं उन्होंने उनको अन्तिम आज्ञा दी। तब लड़को और औरतों को भेज कर वे हमारे पास लौट आये। उस समय सूर्य डूबने का समय पास ही था क्योंकि वे भीतर बहुत देर तक रहे। जब वे स्नान कर के लौटे तब बैठ गये, किन्तु इसके बाद बहुत बातचीत नहीं हुई। थोड़ी ही देर मे वहाँ पर (एथेंस के) ग्यारह (मजिस्ट्रेटों) का नौकर आया और उनसे बोला—

नौकर—साक्रटीज़, मैं जानता हूँ कि मैं आपको और लोगों की भाँति अविचारी न पाऊँगा। जब मैं अधिकारियों की आज्ञानुसार और लोगों से विष पीने को कहता हूँ तब वे मुझसे नाराज़ हो जाते हैं और मुझे कोसने लगते हैं। किन्तु जितने लोग आज तक यहाँ आये हैं उन सब में मैंने आपको सब से अधिक योग्य दयालु और उत्तम पाया है। अब मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप मुझसे नाराज़ न हो कर उनसे नाराज़ होंगे जो दोषी हैं। इस लिये अब मैं आपको अन्तिम प्रणाम करता हूँ, तथा आशा करता हूँ कि जो कुछ अवश्यम्भावी है उसे आप भरसक शान्तिपूर्वक सहन करने का उद्योग

करेंगे। आप जानते हैं मैं किस लिये आया हूँ।

इतना कह कर वह रोता हुआ वहाँ से चला गया। साक्रटीज़ ने उसकी तरफ देख कर कहा ' नमस्कार, मैं तुम्हारी अनुमति के अनुसार कार्य करूँगा। ' फिर वे हमारी ओर फिर कर हमसे कहने लगे—

साक्रटीज़—यह व्यक्ति कितना शिष्ट है। जब से मैं यहाँ आया हूँ तब से यह बराबर मुझे देखने आता रहा है, और कभी कभी मुझसे बातचीत भी किया करता था और अब देखो यह मेरे लिये कितनी उदारता से रो रहा है! आओ, क्रीटो, उसकी आज्ञा का पालन करें। यदि विष तैयार हो तो मँगाओ और यदि न तैयार हो तो उसे तैयार करने को कहो।

क्रीटो ने उत्तर दिया।

क्रीटो—नहीं, साक्रटीज, मैं समझता हूँ कि पहाड़ी पर अब भी सूर्य (की किरणें) हैं, और अभी सूर्यास्त नहीं हुआ है। इसके अलावा मैं जानता हूँ कि और लोग बहुत देर में विष लेते हैं, और जी भरकर खाते पीते हैं और बाज़ बाज़ तो (विष देने की) आज्ञा के बाद भी चुने हुए मित्रों की संगति में रहते हैं। इस कारण जल्दबाज़ी मत करो, अभी समय है।

साक्रटीज़—क्रीटो, जिनका हाल तुम कहते हो वे स्वभावतः ऐसा करते हैं क्योंकि वे समझते हैं कि ऐसा करने से उनको लाभ होगा। किन्तु मैं ऐसा न करूँगा क्योंकि मैं जानता हूँ कि थोड़ी देर बाद विष पीने से मुझे कोई लाभ न होगा उलटे मुझे इस बात का मन ही मन पश्चात्ताप होगा कि मैं अपने उस जीवन का लोभ कर रहा हूँ

जा समाप्त हो चुका है। इस कारण मेरे कहने के अनुसार काम करने से इन्कार मत करो।

तब क्रीटो ने अपने दास को इशारा किया जो पास ही खड़ा था। दास बाहर गया और थोड़ी देर बाद उस व्यक्ति को साथ ले कर भीतर आया जो विष देने के लिये नियुक्त था; वह एक प्याले मे तैयार किया हुआ विष लिये था। जब साक्रटीज़ ने उसे देखा तब उन्होंने कहा—महाशय, आप यह सब समझते हैं, बतलाइये मुझे क्या करना है?

उसने उत्तर दिया,—'आपको केवल इसे पीना भर होगा। फिर जब तक आपके पैरों में भारीपन न मालूम हो आप इधर उधर टहलते रहें और फिर आप लेट रहें।' इतना कह कर उसने साक्रटीज़ के हाथ में प्याला दे दिया, जिसे उन्होंने बिल्कुल प्रसन्नतापूर्वक ले लिया। ऐकीक्रीटिस, उस प्याले को हाथ में लेते समय न तो वे कँपे और न उनके चेहरे का रंग ही बदला। उन्होंने सदा की भाँति अपनी उसी स्थिर दृष्टि से देख कर कहा,—'यदि मैं चाहूँ तो क्या मैं इस घूँट से देवता को कुछ अर्घ्य दे सक्ता हूँ?' उसने उत्तर दिया कि 'हम लोग केवल उतना ही विष तैयार करते हैं जितना कि आवश्यक समझते हैं।' साक्रटीज़ ने कहा 'मैं तुम्हारा मतलब समझ गया। किन्तु मै समझता हूँ कि मुझे इस बात की देवताओं से प्रार्थना करनी चाहिये कि मेरी यात्रा निष्कण्टक हो। यही मेरी प्रार्थना है। ईश्वर ऐसा ही करे।' इतना कह कर उन्होंने प्याला मुँह से लगा लिया और बड़ी प्रसन्नता और शान्ति के साथ उन्होंने उसे पी लिया। तब तक हममें से बहुत से व्यक्ति अपना

शोक रोके हुए थे। किन्तु जब हमने उनको विष पीते और प्याले को ख़ाली होते देखा तब तो हमसे अपने को और अधिक नहीं रोका गया। रोकते रोकते मेरी आँखों से अपने आप ही आँसू बड़े वेग से निकलने लगे और मैं अपने आपको भूल कर अपना मुँह ढाँक कर रोने लगा, मैं उनके लिये नही रोता था किन्तु उन ऐसे मित्र के वियोग होने से अपनी ही हानि समझ कर रोता था। इसके पहिले ही क्रीटो आँसुओं को रोक नही सके और बाहर चले गये थे। अपालो डोरस, जिसका रोना एक बार भी बन्द नही हुआ था, ज़ोर से चिल्ला उठा, और उसके रोने फफकने से स्वयं साक्रटीज़ को छोड़ कर और सब बेबस हो गये। साक्रटीज़ ने चिल्ला कर कहा–'मेरे मित्रो, यह तुम क्या कर रहे हो? मैंने स्त्रियों को विशेष कर इसी लिये हटा दिया था कि वे इस प्रकार मुझे तंग न कर सकें, क्योंकि मैंने यह सुन रखा है कि मनुष्य को शान्ति-पूर्वक मरना चाहिये। इस कारण अपने को शान्त करो और चुप हो जाओ।' जब हमने यह सुना तो हम बड़े लज्जित हुए और चुप हो गये। किन्तु वे तब तक इधर उधर टहलते रहे जब तक कि उन्होने यह नहीं कहा कि उनके पैरों में भारीपन मालूम पड़ता है। तब वे, जैसा कि उनसे कहा गया था, पीठ के बल लेट गये। तब वह व्यक्ति, जिसने विष दिया था, उनके पाँव और टाँग जाँचने लगा। उसने अपने हाथ से उनका पैर ज़ोर से दबाया और पूछा कि उसमें कुछ चेतनता मालूम पड़ती है या नहीं। साक्रटीज़ ने कहा कुछ नहीं मालूम पड़ती। तब उसने उनकी टाँगें और क्रम से ऊपर का भाग जाँचना

आरम्भ किया और हमको यह दिखलाया कि वे भाग बिल्कुल ठंडे और कड़े हो गये थे। साक्रटीज़ भी इसे मालूम करने लगे और बोले कि जब यह दशा हृदय तक पहुँच जायगी तब उनकी परलोकयात्रा हो जायगी। जब उनकी कमर ठंडी पड़ती जाती थी तब उन्होंने अपना मुँह खोला, जो ढँका था, और वे अन्तिम बार बोले। उन्होंने कहा-'क्रीटो, मैंने एस्क्लिपियस को एक मुर्गा चढ़ाने का प्रण किया है, उसे चढ़ाना भूल मत जाना।' क्रीटो ने कहा-'यह हो जायगा। क्या तुम्हारी कोई और भी इच्छा है?' उन्होंने इस प्रश्न का कुछ उत्तर नहीं दिया। किन्तु थोड़ी देर बाद कुछ हिलना सा मालूम पड़ा, और उस मनुष्य ने उनका मुँह खोल दिया, उनकी आँखें स्थिर थीं। क्रीटो ने उनके मुँह और उनकी आँखों को कपड़े से ढक दिया।

ऐकीक्रीटिस! हमारे मित्र का इस प्रकार अन्त हुआ। मैं समझता हूँ कि मैंने जितने मनुष्य देखे हैं वे उन सब से बढ़कर बुद्धिमान्, न्यायवान् और उत्तम थे।

इति॥